



विक्रम संवत् 2082 • अगहन (मार्गशीर्ष)/पौष मास (10) • 01 दिसम्बर 2025 • मूल्य : 23 रु.

चरैवेति



सम्पूर्ण भारत,

सम्पूर्ण विश्व रामायण है



अनुक्रमणिका

» संपादकीय • संजय गोविन्द खोचे	04
■ सर्वत्र राम ही राम	
» कवर स्टोरी • ध्वजा रोहण	05
■ सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व राममय है	

05



20



• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. मोक्षदा एकादशी व्रत, मौन ग्यारस 2. प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी 3. पिशाचमोचनी यात्रा 4. स्नानदान व्रत, दत्त पूर्णिमा 5. रोहिणी व्रत 6. कुमुद्वर्ता प्रारम्भ 8. गणेश चतुर्थी व्रत 12. रूक्मिणी अष्टमी 14. भ. पाशर्वनाथ जन्म कल्या. 15. सफला एकादशी व्रत 16. सुरूप द्वादशी 17. प्रदोष व्रत 18. शिव चतुर्दशी व्रत 19. स्नानदान श्राद्ध पोषी अमावस 21. चन्द्रदर्शन 23. अं. विनायकी चतुर्थी व्रत 30. पुत्रदा एकादशी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

1. एड्स जागरूकता दिवस 3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, भोपाल गैस त्रासदी, विश्व दिव्यांग दिवस 4. स्वामी ब्रह्मानंद लोधी जयंती, टंट्या भील बलिदान दिवस 7. म. छत्रसाल परमधाम वास दिवस, सशस्त्र सेना झंडा दिवस 10. श. वीर नारायण सिंह ब. दि. 22. श्रीनिवास रामानुज जयंती 25. पं. मदनमोहन मालवीय जयंती, पं. अटल बिहारी वाजपेई जयंती

■ नक्सल मुक्त भारत	08
» सुरक्षा, विचारधारा का प्रमुख अंग - अमित शाह	
■ एनडीए की शानदार जीत	12
» बिहार ने सच का साथ दिया - पीएम मोदी	
■ एनडीए की प्रचंड जीत	15
» बिहार प्रचंड विजय सुशासन की मिसाल - डॉ. मोहन यादव	
■ संविधान दिवस	16
» 26 नवंबर हर भारतीय के लिए बहुत गौरवशाली दिन	
■ एक राष्ट्र - एक चुनाव	17
» भारत 2030 में तीसरे नंबर की ताकत होगा - हेमंत खण्डेलवाल	
■ आलेख: अमित शाह	18
» “वंदे मातरम्” - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा	
■ इन्वेस्टमेंट ऑपॉर्चुनिटीज इन मध्यप्रदेश	19
» सभी निवेशकों का स्वागत है मध्यप्रदेश में - मुख्यमंत्री डॉ. यादव	
■ जनजातीय गौरव दिवस	20
» आदिवासी कल्याण भाजपा की सर्वोच्च प्राथमिकता	
■ एसआईआर	22
» एसआईआर को दें सर्वोच्च प्राथमिकता - हेमंत खण्डेलवाल	
■ जनजातीय गौरव दिवस	23
» मोदी जी के नेतृत्व में जनजातीय गौरव की पुर्नस्थापना - डॉ. यादव	
■ वंदे मातरम्	24
» “वंदे मातरम्” का सार भारत और माँ भारती की भावना...	
■ वंदे मातरम् @ 150 अभियान	27
» राष्ट्रप्रेम का प्रतीक है वंदे मातरम् - डॉ. मोहन यादव	
■ युनिटी मार्च	29
» भारत जिस मजबूती के साथ खड़ा है, उसमें सबसे बड़ी...	
■ मन की बात	30
» “मन की बात” सामूहिक प्रयासों को सामने लाने का बेहतरीन मंच है	
■ कविता : अटल बिहारी वाजपेयी	35
» परिचय	
■ पुण्यतिथि	36
» प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर	
■ जयंती	37
» धर्मो रक्षति रक्षित: पं. मदन मोहन मालवीय	
» सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक...	
» ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है : लालकृष्ण आडवाणी	
■ विचार प्रवाह	41
» भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था	



वर्ष-57, अंक : 10, भोपाल, दिसम्बर 2025



हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमें सही व्यक्ति को वोट देना चाहिए न की उसके बटुए को, पार्टी को वोट दे किसी व्यक्ति को भी नहीं, किसी पार्टी को वोट न दे बल्कि उसके सिद्धांतों को वोट देना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक

योगेन्द्रनाथ बरतरिया

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा
पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर,
नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.वी.एक्ट के तहत जिक्रेन्द्रा



सर्वत्र राम ही राम

25 नवंबर 2025 को राम मंदिर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा ध्वजारोहण के साथ ही राम मंदिर निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण हो गई।

25 नवंबर 2025 को राम मंदिर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा ध्वजारोहण के साथ ही राम मंदिर निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण हो गई। राम मंदिर का महत्व भारत की संस्कृति, भारत के इतिहास और समस्त भारतीयों सहित संपूर्ण विश्व के राम भक्तों के लिए उतना ही है - जितना महाराज दशरथ के लिए राम का था, माता कौशल्या के लिए राम का था, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न के लिए राम का था, महर्षि वशिष्ठ जी, महर्षि विश्वामित्र जी, महर्षि वाल्मीकि जी, संत तुलसीदास जी, निषाद राज जी, माता सीता, गोधराज जटायु, पवनपुत्र हनुमान जी, वानरराज सुग्रीव जी, बाली पुत्र अंगद जी, दशानन भ्राता विभीषण के लिए राम का था। कांग्रेस समेत संपूर्ण विपक्ष की भयानक ऐतिहासिक गलती थी, कि वह इस मर्म को समझ नहीं पाया, और वोट बैंक की खातिर राम के विरोध के साथ-साथ राम को काल्पनिक बताने तक की ऐतिहासिक गलती कर बैठा। रामभक्तों पर गोली चलवाने में भी कोई विचार नहीं किया, निर्ममता से गोली चलाने का आदेश दे डाला। फिर भी कांग्रेस समेत संपूर्ण विपक्ष के पास अवसर आया था और अवसर सदैव उपलब्ध भी है, कि वह प्रभु श्री राम से, जनमानस से, रामभक्तों से अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांग कर राम मंदिर में सहयोग कर, राम के दिखाए मार्ग का अनुसरण कर, अपने पापों से मुक्ति पा सकते हैं, क्योंकि शरण में आए हुए को राम जी प्राणों की भांति प्यार करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में स्वयं कहा है -

सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा।

बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा॥

जासु नाम त्रय ताप नसावन।

सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन॥॥

चुनाव आयोग का मतदाता शुद्धिकरण का कार्य पूर्ण जिम्मेदारी के साथ चल रहा है। भारत लोकतंत्र की जननी है, मतदाता ही भारत का भविष्य निर्धारित करता है, भारत के संविधान में हर भारतीय नागरिक को मतदान का अधिकार स्पष्ट है, पर मतदान का अधिकार संविधान निर्माताओं ने केवल भारतीयों के लिए सुरक्षित रखा है। निश्चित रूप से घुसपैठियों को मतदान प्रक्रिया से बाहर करना संविधान की भावना के अनुरूप है। और मतदाता शुद्धिकरण का कार्य चुनाव आयोग कोई पहली बार नहीं कर रहा है। आजादी के बाद

से अभी तक सन् 1951 से 2004 तक आठ बार मतदाता शुद्धिकरण का कार्य किया जा चुका है। 2025 में प्रथम चरण में बिहार में मतदाता सूची शुद्धिकरण का कार्य सुचारू, विश्वसनीय और जिम्मेदारी पूर्ण तरीके से संपन्न किया जा चुका है। द्वितीय चरण में 12 राज्यों में एसआईआर का कार्य किया जा रहा है। मतदाता ही भारत का भाग्य निर्माता है, इसलिए सभी राजनीतिक दलों को बिना किसी विवाद के एसआईआर प्रक्रिया को सफल बनाने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। ध्यान रहे एसआईआर का विरोध लोकतंत्र को भारी नुकसान पहुंचा सकता है।

मोदी जी के राज में नक्सलवाद अंतिम पड़ाव पर आ चुका है। रेड कॉरिडोर जैसे शब्द अब अस्तित्वहीन हो चुके हैं। मोदी सरकार ने वर्षों से चले आ रहे मिथक को भी तोड़ दिया है कि “विकास नहीं होने के कारण नक्सलवाद पनपता था” बल्कि वास्तविकता थी “विकास नक्सलवाद के कारण रुका हुआ था।” आज मोदी सरकार ने संवाद, सुरक्षा व समन्वय पर काम करके दिशा ही बदल दी है। और आज नाम मात्र को नक्सल प्रभावित क्षेत्र बचे हैं। निश्चित ही 31 मार्च 2026 को हथियारबंद नक्सलवाद इतिहास के पन्नों तक सीमित होकर रह जावेगा।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025- अपने आप में अनूठा था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में लड़े गये विधानसभा चुनाव में जनता का खुला समर्थन, प्रचंड विजय का कारण बना। इस परिणाम के पीछे संदेश भी साफ है- जनता ने विकास, सुशासन समेत लोकतंत्र की मजबूती को वोट दिया है। मतदान का प्रतिशत दर्शाता है कि मतदाता देश के भविष्य के प्रति सतर्क है। पुनर्मतदान जैसी घटनाओं का लुप्त होना सुशासन का प्रतीक है। जीत का अंतर सिद्ध करता है जंगल राज की वापसी संभव ही नहीं है। जातिवाद से मतदाता उबर चुका है। माता-बहनों का मतदान में बड़ा प्रतिशत सिद्ध करता है की माता-बहनों को अपने बच्चों का भविष्य के लिए चिंता है, वह सुशासन से अपने बच्चों के भविष्य सुनिश्चित करना चाहती हैं। विकास की दौड़ में शामिल होना उनकी एकमात्र प्राथमिकता है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में एन डी ए ही एकमात्र विकल्प है।

केंद्र में मोदी सरकार बनने के बाद 2015 में सरकार ने 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इस वर्ष भारतीय संविधान के 75 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इस पवित्र दस्तावेज की ही शक्ति है, जिसके कारण मतदाताओं के पास देश का भविष्य चुनने की शक्ति है। और सत्ता का केंद्र सरकार नहीं- भारतीय मतदाता है। संविधान निर्माताओं की भावनाओं के अनुरूप उनके सपनों को साकार करने के लिए निष्ठा, समर्पण और जिम्मेदारी के साथ काम करने से विकसित भारत@2047 को सिद्ध करने में कोई कठिनाई नहीं आवेगी।

राष्ट्रीय गीत “वंदे मातरम्” के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सरकार ने साल भर कार्यक्रमों का आयोजन करने का निर्णय लिया है इन कार्यक्रमों के द्वारा युवा पीढ़ी जो भविष्य के भाग्य निर्माता हैं, उनको सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति विचार आत्मसात करने में मदद मिलेगी।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री डॉ. मोहन यादव जी ने हैदराबाद में निवेशक सम्मेलन के माध्यम से मध्य प्रदेश में निवेशकों को आमंत्रित कर 36,600 करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त कर 27,800 रोजगार सृजन करने में भारी सफलता पाई है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयास निश्चित रूप से विकसित भारत@2047 में मध्य प्रदेश की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे और मध्य प्रदेश दुनिया के नक्शे पर व्यापार व्यवसाय का केंद्र बनेगा।

“जनजातीय गौरव दिवस” मोदी सरकार का जनजातीय समाज के शूरवीर देशभक्तों के प्रति श्रद्धा का भाव दिखता है। साथ ही साथ वंचितों को वरीयता की प्राथमिकता का भी प्रदर्शन करता है। जनजातीय समाज की देशभक्ति को स्मरण कर सम्मान प्रकट करना, उनके समर्पण के प्रति अगाध श्रद्धा है। जनजातीय समाज के विकास के हर पहलू पर कार्य कर मोदी सरकार विकसित भारत@ 2047 में जनजातीय समाज की भूमिका सुनिश्चित कर रही है। ■



(संजय गोविन्द खोचे)

सम्पादक



सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व राममय है

- धर्म ध्वजा केवल एक ध्वज नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है।
- अयोध्या वह भूमि है जहां आदर्श आचरण में बदलते हैं।
- राम मंदिर का दिव्य प्रांगण भारत के सामूहिक सामर्थ्य की भी चेतना स्थली बन रहा है।
- हमारे राम भेद से नहीं, बल्कि भाव से जुड़ते हैं।
- हम एक जीवंत समाज हैं, हमें दूरदृष्टि के साथ काम करना होगा, हमें आने वाले दशकों, आने वाली सदियों को ध्यान में रखना ही होगा।

विकसित भारत की यात्रा को गति देने के लिए हमें ऐसा रथ चाहिए, जिसके पहिये शौर्य और धैर्य हों, जिसकी ध्वजा सत्य और सर्वोत्तम आचरण हो, जिसके घोड़े बल, विवेक, संयम और परोपकार हों तथा जिसकी लगाम क्षमा, करुणा और समभाव हो।

अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बन रही है। सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व, राममय है। हर रामभक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष है, असीम कृतज्ञता है, अपार अलौकिक आनंद है। सदियों के घाव भर रहे हैं, सदियों की वेदना विराम पा रही है, सदियों का संकल्प सिद्धि को प्राप्त हो रहा है। उस यज्ञ की पूर्णाहुति है, जिसकी अग्नि 500 वर्ष तक प्रज्वलित रही। जो यज्ञ एक पल भी आस्था से डिगा नहीं, एक पल भी विश्वास से टूटा नहीं। भगवान श्री राम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा, श्री राम परिवार का दिव्य प्रताप, इस धर्म ध्वजा के रूप में, इस दिव्यतम, भव्यतम मंदिर में प्रतिष्ठापित हुआ है।

धर्म ध्वजा केवल एक ध्वजा नहीं, ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका भागवा रंग, इस पर रचित सूर्यवंश की ख्याति, वर्णित ओम् शब्द और अंकित कोविदार वृक्ष रामराज्य की कीर्ति को प्रतिरूपित करता है। ये ध्वज संकल्प है, ये ध्वज सफलता है। ये ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, ये ध्वज सदियों से चले आ रहे स्वप्नों का साकार स्वरूप है। ये ध्वज



अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बन रही है। सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व, राममय है। हर रामभक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष है, असीम कृतज्ञता है, अपार अलौकिक आनंद है।

संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणीति है।

आने वाली सदियों और सहस्र-शताब्दियों तक, ये धर्मध्वज प्रभु राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करेगा। ये धर्मध्वज आव्हान करेगा- सत्यमेव जयते नानृतं! यानी, जीत सत्य की ही होती है, असत्य की नहीं। ये धर्मध्वज उद्घोष करेगा- सत्यम्-एकपदं ब्रह्म सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः।

अर्थात्, सत्य ही ब्रह्म का स्वरूप है, सत्य में ही धर्म स्थापित है। ये धर्मध्वज प्रेरणा बनेगा- प्राण जाए पर वचन न जाहीं। अर्थात्, जो कहा जाए, वही किया जाए। ये धर्मध्वज संदेश देगा- कर्म प्रधान विश्व रचि राखा! अर्थात्, विश्व में कर्म और कर्तव्य की प्रधानता हो। ये धर्मध्वज कामना करेगा- बैर न बिग्रह आस न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा॥ यानी, भेदभाव, पीड़ा-पेशानी से मुक्ति, समाज में शांति और सुख हो। ये धर्मध्वज हमें संकल्पित

करेगा- नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। यानी, हम ऐसा समाज बनाएं, जहां गरीबी न हो, कोई दुखी या लाचार न हो।

हमारे ग्रन्थों में कहा गया है- आरोपितं ध्वजं दृष्ट्वा, ये अभिनन्दन्ति धार्मिकाः। ते अपि सर्वे प्रमुच्यन्ते, महा पातक कोटिभिः॥ यानी, जो लोग किसी कारण मंदिर नहीं आ पाते, और दूर से मंदिर के ध्वज को प्रणाम कर लेते हैं, उन्हें भी उतना ही पुण्य मिल जाता है।

ये धर्मध्वज भी इस मंदिर के ध्येय का प्रतीक है। ये ध्वज दूर से ही रामलला की जन्मभूमि के दर्शन कराएगा। और, युगों-युगों तक प्रभु श्रीराम के आदेशों और प्रेरणाओं को मानव मात्र तक पहुंचाएगा।

सम्पूर्ण विश्व के करोड़ों रामभक्तों को इस अविस्मरणीय क्षण की, इस अद्वितीय अवसर की हार्दिक शुभकामनाएँ। सभी भक्तों को प्रणाम, हर उस दानवीर का आभार, जिसने राम मंदिर निर्माण के लिए अपना सहयोग दिया। राम मंदिर के निर्माण



से जुड़े हर श्रमवीर, हर कारीगर, हर योजनाकार, हर वास्तुकार, सभी का अभिनंदन।

अयोध्या वह भूमि है, जहां आदर्श, आचरण में बदलते हैं। यही वह नगरी है, जहाँ से श्रीराम ने अपना जीवन-पथ शुरू किया था। इसी अयोध्या ने संसार को बताया कि एक व्यक्ति कैसे समाज की शक्ति से, उसके संस्कारों से, पुरुषोत्तम बनता है। जब श्रीराम अयोध्या से वनवास को गए, तो वे युवराज राम थे, लेकिन जब लौटे, तो मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर के आए। और उनके मर्यादा पुरुषोत्तम बनने में महर्षि वशिष्ठ का ज्ञान, महर्षि विश्वामित्र की दीक्षा, महर्षि अगस्त्य का मार्गदर्शन, निषादराज की मित्रता, मां शबरी की ममता, भक्त हनुमान का समर्पण, इन सबकी, अनगिनत ऐसे लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

विकसित भारत बनाने के लिए भी समाज की इसी सामूहिक शक्ति की आवश्यकता है। राम मंदिर का ये दिव्य प्रांगण, भारत के सामूहिक सामर्थ्य की भी चेतना स्थली बन रहा है। यहां सप्तमंदिर बने हैं। यहां माता शबरी का मंदिर बना है, जो जनजातीय समाज के प्रेमभाव और आतिथ्य परंपरा की प्रतिमूर्ति हैं। यहां निषादराज का मंदिर बना है, ये उस मित्रता का साक्षी है, जो साधन नहीं, साध्य को, उसकी भावना को पूजती है। यहां एक ही स्थान पर माता अहिल्या हैं, महर्षि वाल्मीकी हैं, महर्षि वशिष्ठ हैं, महर्षि विश्वामित्र हैं, महर्षि अगस्त्य हैं, और संत तुलसीदास हैं। रामलला के साथ-साथ इन सभी ऋषियों के दर्शन भी यहीं पर होते हैं। यहां जटायु जी और गिलहरी की मूर्तियां भी हैं, जो बड़े संकल्पों की सिद्धि के लिए हर छोटे से छोटे प्रयास के महत्व को दिखाती हैं। हर देशवासी से कहूंगा कि वो जब भी राम मंदिर आएँ, तो सप्तमंदिर के दर्शन भी अवश्य करें। ये मंदिर हमारी आस्था के साथ-साथ, मित्रता, कर्तव्य और सामाजिक सद्भाव के मूल्यों को भी शक्ति देते हैं।

राम भेद से नहीं, भाव से जुड़ते हैं। उनके

लिए व्यक्ति का कुल नहीं, उसकी भक्ति महत्वपूर्ण है। उन्हें वंश नहीं, मूल्य प्रिय हैं। उन्हें शक्ति नहीं, सहयोग महान लगता है। आज हम भी उसी भावना से आगे बढ़ रहे हैं। पिछले 11 वर्षों में, महिला, दलित, पिछड़े, अति-पिछड़े, आदिवासी, वंचित, किसान, श्रमिक, युवा, हर वर्ग को विकास के केंद्र में रखा गया है। जब देश का हर व्यक्ति, हर वर्ग, हर क्षेत्र सशक्त होगा, तब संकल्प की सिद्धि में सबका प्रयास लगेगा। और सबके प्रयास से ही 2047, जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, हमें 2047 तक विकसित भारत का निर्माण करना ही होगा।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अवसर पर, मैंने राम से राष्ट्र के संकल्प की चर्चा की थी। मैंने कहा था कि हमें आने वाले एक हजार वर्षों के लिए भारत की नींव मजबूत करनी है। हमें याद रखना है, जो सिर्फ वर्तमान का सोचते हैं, वो आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय करते हैं। हमें वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ियों के बारे में भी सोचना है। क्योंकि, हम जब नहीं थे, ये देश तब भी था, जब हम नहीं रहेंगे, ये देश तब भी रहेगा। हम एक जीवंत समाज हैं, हमें दूरदृष्टि के साथ ही काम करना होगा। हमें आने वाले दशकों, आने वाली सदियों को ध्यान में रखना ही होगा।

इसके लिए भी हमें प्रभु राम से सीखना होगा। हमें उनके व्यक्तित्व को समझना होगा, हमें उनके व्यवहार को आत्मसात करना होगा, हमें याद रखना होगा,
राम यानी- आदर्श,
राम यानी- मर्यादा,
राम यानी- जीवन का सर्वोच्च चरित्र।
राम यानी- सत्य और पराक्रम का संगम,
“दिव्यगुणैः शक्र समो रामः सत्यपराक्रमः”।
राम यानी- धर्मपथ पर चलने वाला व्यक्तित्व,
“रामः सत्पुरुषो लोके सत्यः सत्यपरायणः।
राम यानी- जनता के सुख को सर्वोपरि रखना,
प्रजा सुखत्वे चंद्रस्य”।

राम यानी- धैर्य और क्षमा का दरिया
“वसुधायाः क्षमागुणैः”।

राम यानी- ज्ञान और विवेक की पराकाष्ठा,
बुद्ध्या बृहस्पतेः तुल्यः।

राम यानी- कोमलता में दृढ़ता, “मृदुपूर्वं च भाषते”।

राम यानी- कृतज्ञता का सर्वोच्च उदाहरण,
“कदाचन नोपकारेण, कृतिनैकेन तुष्यति”।

राम यानी- श्रेष्ठ संगति का चयन, शील वृद्धैः ज्ञान वृद्धैः वयो वृद्धैः च सज्जनैः।

राम यानी- विनम्रता में महाबल, वीर्यवान् च वीर्येण, महता स्वेन विस्मितः।

राम यानी- सत्य का अडिग संकल्प, “न च अनृत कथो विद्वान्”।

राम यानी- जागरूक, अनुशासित और निष्कपट मन, “निस्तन्द्रिः अग्रमत्तः च, स्व दोष पर दोष वित्”।

राम सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, राम एक मूल्य हैं, एक मर्यादा हैं, एक दिशा हैं। अगर भारत को साल 2047 तक विकसित बनाना है, अगर समाज को सामर्थ्यवान बनाना है, तो हमें अपने भीतर “राम” को जगाना होगा। हमें अपने भीतर के राम की प्राण प्रतिष्ठा करनी होगी।

25 नवंबर का ऐतिहासिक दिन अपनी विरासत पर गर्व का एक और अद्भुत क्षण लेकर आया है। इसकी वजह है, धर्मध्वजा पर अंकित- कोविदार वृक्ष। ये कोविदार वृक्ष इस बात का उदाहरण है कि जब हम अपनी जड़ों से कट जाते हैं, तो हमारा वैभव इतिहास के पन्नों में दब जाता है।

जब भरत अपनी सेना के साथ चित्रकूट पहुंचे, तो लक्ष्मण ने दूर से ही अयोध्या की सेना को पहचान लिया। ये कैसे हुआ, इसका वर्णन वाल्मीकि जी ने किया है, और वाल्मीकि जी ने क्या वर्णन किया है, उन्होंने कहा है -

विराजति उद्गत स्कन्धम्, कोविदार ध्वजः रथे॥

लक्ष्मण कहते हैं— “हे राम, सामने जो तेजस्वी प्रकाश में विशाल वृक्ष जैसा ध्वज दिखाई दे रहा है, वही अयोध्या की सेना का ध्वज है, उस पर कोविदार का शुभ चिन्ह अंकित है।”

आज जब राम मंदिर के प्रांगण में कोविदार फिर से प्रतिष्ठित हो रहा है, यह केवल एक वृक्ष की वापसी नहीं है, यह हमारी स्मृति की वापसी है, हमारी अस्मिता का पुनर्जागरण है, हमारी स्वाभिमानी सभ्यता का पुनः उद्घोष है। कोविदार वृक्ष हमें याद दिलाता है कि जब हम अपनी पहचान भूलते हैं, तो हम स्वयं को खो देते हैं। और जब पहचान लौटती है, तो राष्ट्र का आत्मविश्वास भी लौट आता है। और इसलिए मैं कहता हूँ, देश को आगे बढ़ना है, तो अपनी विरासत पर गर्व करना होगा।

अपनी विरासत पर गर्व के साथ-साथ, एक और बात भी महत्वपूर्ण है, और वो है- गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्ति। आज से 190 साल पहले, साल 1835 में मैकाले नाम के एक अंग्रेज ने भारत को अपनी जड़ों से उखाड़ने के बीज बोए थे। मैकाले ने भारत में मानसिक गुलामी की नींव रखी थी। दस साल बाद, यानि 2035 में उस अपवित्र घटना को 200 वर्ष पूरे हो रहे हैं। हमें आने वाले दस वर्षों तक, उस दस वर्षों का लक्ष्य लेकर चलना है कि भारत को गुलामी की मानसिकता से मुक्त करके रहेंगे।

सबसे बड़ा दुर्भाग्य ये है कि मैकाले ने जो कुछ सोचा था, उसका प्रभाव कहीं व्यापक हुआ। हमें आजादी मिली, लेकिन हीन भावना से मुक्ति नहीं मिली। हमारे यहां एक विकार आ गया कि विदेश की हर चीज, हर व्यवस्था अच्छी है, और जो हमारी अपनी चीजें हैं, उनमें खोट ही खोट है।

गुलामी की यही मानसिकता है, जिसने लगातार ये स्थापित किया, हमने विदेशों से लोकतंत्र लिया, कहा गया कि हमारा संविधान भी विदेश से प्रेरित है, जबकि सच ये है कि भारत लोकतंत्र की जननी है, Mother of Democracy है, लोकतंत्र हमारे DNA में है।

अगर आप तमिलनाडु जाएंगे, तो तमिलनाडु के उत्तरी हिस्से में उत्तिरमेरूर गांव है। वहां हजारों वर्ष पहले का एक शिलालेख है। उसमें बताया गया है कि उस कालखंड में भी कैसे लोकतांत्रिक तरीके से शासन व्यवस्था चलती थी, लोग कैसे सरकार चुनते थे। लेकिन हमारे यहां तो मैग्ना कार्टा की प्रशंसा का ही चलन रहा। हमारे यहां भगवान बसवन्ना, उनके अनुभव मंटपा की जानकारी भी सीमित रखी गई। अनुभव मंटपा यानि, जहां सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विषयों पर सार्वजनिक बहस होती थी। जहां सामूहिक सहमति से निर्णय लिए जाते थे। लेकिन गुलामी की मानसिकता के कारण, इस भारत की कितनी ही पीढ़ियों को इस जानकारी से भी वंचित रखा गया।

हमारी व्यवस्था के हर कोने में गुलामी की इस मानसिकता ने डेरा डाला हुआ था। आप याद करिए, भारतीय नौसेना का ध्वज, सदियों तक उस ध्वज पर ऐसे प्रतीक बने रहे, जिनका हमारी सभ्यता, हमारी शक्ति, हमारी विरासत से कोई संबंध नहीं था। अब हमने नौसेना के ध्वज से गुलामी के हर प्रतीक को हटाया है। हमने छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत को स्थापित किया है। और ये सिर्फ एक डिजाइन में बदलाव नहीं हुआ, ये मानसिकता बदलने का क्षण था। ये वो घोषणा थी कि भारत अब अपनी शक्ति, अपने प्रतीकों से परिभाषित करेगा, न कि किसी और की विरासत से।

यही परिवर्तन आज अयोध्या में भी दिख रहा

है। ये गुलामी की मानसिकता ही है, जिसने इतने वर्षों तक रामत्व को नकारा है। भगवान राम, अपने आप में एक वैल्यू सिस्टम हैं। ओरछा के राजा राम से लेकर, रामेश्वरम के भक्त राम तक, और शबरी के प्रभु राम से लेकर, मिथिला के पाहुन राम जी तक, भारत के हर घर में, हर भारतीय के मन में, और भारतवर्ष के हर कण-कण में राम हैं। लेकिन गुलामी की मानसिकता इतनी हावी हो गई कि प्रभु राम को भी काल्पनिक घोषित किया जाने लगा।

अगर हम ठान लें, अगले दस साल में मानसिक गुलामी से पूरी तरह मुक्ति पा लेंगे, और तब जाकर के, तब जाकर के ऐसी ज्वाला प्रज्वलित होगी, ऐसा आत्मविश्वास बढ़ेगा कि 2047 तक विकसित भारत का सपना पूरा होने से भारत को कोई रोक नहीं पाएगा। आने वाले एक हजार वर्ष के लिए भारत की नींव तभी सशक्त होगी, जब मैकाले की गुलामी के प्रोजेक्ट को हम अगले 10 साल में पूरी तरह ध्वस्त करके दिखा देंगे।

अयोध्या धाम में रामलला का मंदिर परिसर भव्य से भव्यतम हो रहा है, और साथ ही अयोध्या को संवारने का काम लगातार जारी है। आज अयोध्या फिर से वह नगरी बन रही है, जो दुनिया के लिए उदाहरण बनेगी। त्रेता युग की अयोध्या ने मानवता को नीति दी, 21वीं सदी की अयोध्या मानवता को विकास का नया मॉडल दे रही है। तब अयोध्या मर्यादा का केंद्र थी, अब अयोध्या विकसित भारत का मेरुदंड बनकर उभर रही है।

भविष्य की अयोध्या में पौराणिकता और नूतनता का संगम होगा। सरयू जी की अमृत धारा और विकास की धारा, एक साथ बहेंगी। यहां आध्यात्म और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, दोनों का तालमेल दिखेगा। राम पथ, भक्ति पथ और जन्मभूमि पथ से नई अयोध्या के दर्शन होते हैं। अयोध्या में भव्य एयरपोर्ट है, अयोध्या में आज शानदार रेलवे स्टेशन है। वंदे भारत और अमृत भारत एक्सप्रेस जैसी ट्रेनें अयोध्या को बाकी देश से जोड़ रही हैं। अयोध्या वासियों को सुविधाएं मिलें, उनके जीवन में समृद्धि आए, इसके लिए निरंतर काम चल रहा है।

जब से प्राण प्रतिष्ठा हुई है, तब से लेकर आज तक करीब-करीब पैतालीस करोड़ श्रद्धालु, यहां दर्शन के लिए आ चुके हैं। ये वो पवित्र भूमि है, जहां पैतालीस करोड़ लोगों के चरण रज पड़े हैं। और इससे अयोध्या और आसपास के लोगों की आय में आर्थिक परिवर्तन आया है, वृद्धि हुई है। कभी अयोध्या विकास के पैमानों में बहुत पीछे थी, आज अयोध्या नगरी यूपी के अग्रणी शहरों में से एक बन रही है।

21वीं सदी का आने वाला समय बहुत महत्वपूर्ण है। आजादी के बाद के 70 साल में



भारत, विश्व की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना। लेकिन पिछले 11 साल में ही भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। और वो दिन दूर नहीं, जब भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन जाएगा। आने वाला समय नए अवसरों का है, नई संभावनाओं का है। और इस अहम कालखंड में भी भगवान राम के विचार ही हमारी प्रेरणा बनेंगे। जब श्रीराम के सामने रावण विजय जैसा विशाल लक्ष्य था, तब उन्होंने कहा था-

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दूढ़ ध्वजा पताका।। बल बिबेक दम परहित घोर। छमा कृपा समता रजु जोरे।।

यानि, रावण पर विजय पाने के लिए जो रथ चाहिए, शौर्य और धैर्य उसके पहिए हैं। उसकी ध्वजा सत्य और अच्छे आचरण की है। बल, विवेक, संयम और परोपकार इस रथ के घोड़े हैं। लगाम के रूप में क्षमा, दया और समता हैं, जो रथ को सही दिशा में रखते हैं।

विकसित भारत की यात्रा को गति देने के लिए ऐसा ही रथ चाहिए, ऐसा रथ जिसके पहिए शौर्य और धैर्य हों। यानि चुनौतियों से टकराने का साहस भी हो, और परिणाम आने तक दृढ़ता से डटे रहने का धैर्य भी हो। ऐसा रथ, जिसकी ध्वजा सत्य और सर्वोच्च आचरण हो, यानि नीति, नीयत और नैतिकता से समझौता कभी न हो। ऐसा रथ, जिसके घोड़े बल, विवेक, संयम और परोपकार हों, यानि शक्ति भी हो, बुद्धि भी हो, अनुशासन भी हो और दूसरों के हित का भाव भी हो। ऐसा रथ, जिसकी लगाम क्षमा, करुणा और समभाव हो, यानि जहां सफलता का अहंकार नहीं, और असफलता में भी दूसरों के प्रति सम्मान बना रहे। और इसलिए ये पल कंधे से कंधा मिलाने का है, ये पल गति बढ़ाने का है। हमें वो भारत बनाना है, जो रामराज्य से प्रेरित हो। और ये तभी संभव है, जब स्वयंसेवक से पहले, देशहित होगा। जब राष्ट्रहित सर्वोपरि रहेगा। ■



सुरक्षा, विचारधारा का प्रमुख अंग - अमित शाह

31 मार्च 2026 तक देश नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा। बहुत सारे लोग ऐसा मानते हैं कि नक्सलवाद की हत्यारी गतिविधियां समाप्त होने के साथ ही नक्सलवाद की समस्या समाप्त हो जाएगी। मगर ऐसा है नहीं।

देश में नक्सलवादी समस्या क्यों पनपी? क्यों बढ़ी? क्यों विकसित हुई? इसका वैचारिक पोषण किन लोगों ने किया और जब तक भारत का समाज इस थ्योरी अर्थात् नक्सलवाद के विचार का वैचारिक पोषण, लीगल समर्थन और वित्तीय पोषण करने वाले समाज में बैठे हुए लोगों को समझ नहीं लेता है और ऐसे लोगों को समाज के सामने बेनकाब करने तक नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई समाप्त नहीं होगी। हम हत्यारे नक्सलियों को सरेंडर करने के लिए बाध्य करके या हमारे जवान उनसे मुकाबला करके, उनको अरेस्ट करके, अथवा आमने-सामने के संघर्ष में न्यूट्रलाइज करके समाप्त कर सकते हैं। मगर इस विचार के संबंध में हमें आगे बहुत कुछ करने की जरूरत पड़ेगी।

भारतीय जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी बनने तक आंतरिक सुरक्षा, देश की सुरक्षा तथा सीमाओं की सुरक्षा, हमारी विचारधारा का एक प्रमुख अंग रहा है। एक प्रकार से भारतीय जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी की यात्रा जो हमने तय की, उसके मूल उद्देश्यों में 3 ही चीज बहुत प्रमुख थी -

- 1 देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा, दूसरा
- 2 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और
- 3 भारतीय संस्कृति के सभी अंगों का पुनरुत्थान करना।

इन तीन चीजों को लेकर हमने हमारी राजनीतिक यात्रा शुरू की थी। उसमें से एक बहुत महत्वपूर्ण विषय देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा है।

2014 में पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की NDA की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। आज लगातार तीसरी बार मोदी जी के ही नेतृत्व में NDA की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। अगर किसी भी समस्या पर पार्टियों के परफॉर्मैंस, सरकारों के परफॉर्मैंस, पार्टी की नीतियों के परफॉर्मैंस को स्टडी करना



है तो तुलनात्मक अभ्यास के अलावे हमारे पास और कोई ऑप्शन नहीं है। परंतु जब मोदी जी ने इस देश के प्रधानमंत्री का पद संभाला तब इस देश की आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से 3 महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट थे-

एक- जम्मू कश्मीर का क्षेत्र,

दूसरा- नॉर्थ ईस्ट और

तीसरा- वामपंथी कॉरिडोर।

ये तीनों महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट ने देश की आंतरिक सुरक्षा को छिन्न-भिन्न अवस्था में कर दिया था और करीब-करीब 4-5 दशक में हजारों लोगों को इन तीनों जगह पर पनपी, फैली अशांति के कारण अपनी जान गवानी पड़ी। संपत्ति का बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ था। देश के बजट का एक बहुत बड़ा हिस्सा गरीबों के विकास के लिए जाने के लिए खर्च करने की जगह इन हॉटस्पॉट को संभालने में जाता था और सुरक्षा बलों की भी अपार जान हानि हुई थी। मोदी जी के प्रधानमंत्री बनते ही, इन तीनों हॉटस्पॉट पर ध्यान केंद्रित किया गया और लंबे समय की स्पष्ट रणनीति के आधार पर काम हुआ। मैं उसका परिणाम बताना चाहता हूँ।

- उत्तर पूर्व में सुरक्षा कर्मियों की मृत्यु में 2004-2014 की तुलना में 2014-2024 में 70 प्रतिशत की कमी आई है।
- 2004-2014 की तुलना में 2014-2024 में नागरिकों की मृत्यु में 85 प्रतिशत की कमी आई।

- 12 महत्वपूर्ण शांति समझौते हुए।

- हाथ में देश के दुश्मनों से प्राप्त ऑटोमेटिक वेपन लेकर घूमने वाले 10,500 युवाओं को सरेंडर कराकर मेन स्ट्रीम में लाने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया।

एक प्रकार से पूरा उत्तर पूर्व जो अपने आप को कटा हुआ महसूस करता था, उत्तर पूर्व में जाने पर तो ये उस वक्त पूछते थे कि भारत से कब आए हैं?

आज उत्तर पूर्व ट्रेन से जुड़ा, रेलवे से जुड़ा, वाटरवेज से जुड़ा, तो भौतिक दूरी तो कम हुई ही है। किन्तु आज दिल्ली और नॉर्थ ईस्ट के बीच में दिलों की दूरी भी दूर करने का काम इस सरकार ने किया और एक प्रकार से बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता के नाते बहुत युवा अवस्था में सीटी (काउंटर टेररिज्म) की टीम का जब हम आवभगत करते थे तो उत्तर पूर्व की स्थिति मालूम पड़ती थी। मगर आज उत्तर पूर्व विद्रोहियों के सरेंडर के बाद शांति के मार्ग पर आगे बढ़ा है, विकास के मार्ग पर आगे बढ़ा। उसी तरह से

- जम्मू कश्मीर 2019 में मोदी जी के नेतृत्व में धारा 370 को समाप्त कर दिया गया और उसके बाद सुनियोजित तरीके से विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन पर ध्यान दिया गया। इन सारी चीजों का जनता का विश्वास अर्जित करने में सरकार ने बहुत सावधानी के साथ उपयोग किया और वहां

के आतंकवाद एवं पाक स्पॉसर्ड टेररिज्म का सामना एक सुनियोजित नीति के तहत किया गया। परिणाम आपको बताना चाहता हूँ-

- 2004-2014 में जो 7 हजार 300 हिंसाएँ होती थी जो अब घटकर 1 हजार 800 हिंसक घटनाएँ ही रह गई हैं।
- सुरक्षा कर्मियों की मृत्यु में 65 प्रतिशत की और नागरिकों की मृत्यु में 77 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई।
- देश का कानून, हर कानून, वहाँ आज अमल में है।
- जम्मू कश्मीर के अंदर आजादी के बाद पहली बार पंचायत के चुनाव हुए। पंच, सरपंच, तहसील पंचायत, जिला पंचायत और एक जमाने में 10 हजार वोट से MP चुनकर आ जाते थे क्योंकि चुनाव का बहिष्कार होता था। वहाँ जिला पंचायत, तालुका पंचायत के अध्यक्ष के चुनाव में 98.3 प्रतिशत मतदान हुआ।
- आजादी के पश्चात 90 के दशक में कश्मीर समस्या के पैदा होने के बाद जम्मू कश्मीर में वर्ष 2024 के चुनाव में सबसे ज्यादा मतदान हुआ। इसका मतलब है कि इस समस्या को हम धीरे-धीरे सुलझाने के रास्ते पर बहुत स्थिर गति के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

पशुपति से तिरुपति तक का काल्पनिक रेड कॉरिडोर। पशुपति से तिरुपति का नारा जब वह लगाते थे तब चिंता की लहर दौड़ जाती थी। यदि इतना बड़ा भूभाग हथियारबंद नक्सलियों के कब्जे में रहता है तो देश का क्या होगा? मगर आज कोई पशुपति से तिरुपति का नारा लगाता है तो लोग हंसे हैं कि भाई बचे ही कहाँ हो!

ये बहुत बड़ा परिवर्तन 10 साल में आया है।

करीब-करीब 70 के दशक की शुरुआत में नक्सल विचार धारा की शुरुआत हुई थी। सन् 71 में स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे ज्यादा 3620 घटनाएँ हुईं। 80 के दशक में पीपल्स वॉर ग्रुप ने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आंध्र, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, यूपी, एमपी, झारखंड, बिहार और केरल तक इसका विस्तार किया। 80 के दशक के बाद वामपंथी गुटों ने एक दूसरे में विलय की शुरुआत की और 2004 में प्रमुख CPI माओवादी गुट का गठन हुआ और नक्सली हिंसा ने बहुत गंभीर स्वरूप ले लिया। यह पशुपति से तिरुपति का कॉरिडोर “रेड कॉरिडोर” के नाम से जाना जाता था। सरकारी रिकॉर्ड में भी उसको रेड कॉरिडोर के रूप में जाना गया है।

झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, महाराष्ट्र, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और केरल - इन सभी जगहों पर फैला हुआ था। देश के भूभाग का 17 प्रतिशत हिस्सा ये रेड कॉरिडोर में

समाहित होता था। लगभग 12 करोड़ की आबादी नक्सलवाद की हिंसा की परछाई में अपना जीवन जी रही थी। एक प्रकार से उस वक्त की आबादी का 10 प्रतिशत हिस्सा नक्सलवाद के दंश झेलकर अपना जीवन बिता रहा था। उसकी कंपैरिजन में 2 जो और हॉटस्पॉट थे - कश्मीर का 1 प्रतिशत भूभाग आतंकवाद की चपेट में था और उत्तर पूर्व में देश का 3.3 प्रतिशत भूभाग अशांति से ग्रस्त था। 1 प्रतिशत, 3.3 प्रतिशत और 17 प्रतिशत एक कितना विराट, कितनी बड़ी समस्या जम्मू कश्मीर और उत्तर पूर्व के कंपैरिजन में थी।

जब तक वामपंथी दल बंगाल में सत्ता में नहीं आए तब तक नक्सलवाद वहाँ पनपता रहा। जैसे ही उनको सत्ता में आने की सुगबुगाहट हुई। नक्सलवाद वहाँ समाप्त हो गया। यह बहुत सूचक संयोग है जो हमें नक्सलवाद का कारण बताता है।

जब 2014 में मोदी जी प्रधानमंत्री बने, भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। मोदी सरकार ने संवाद, सुरक्षा और समन्वय तीनों पहलु पर काम करने की शुरुआत की। आज नतीजा यह है कि 31 मार्च 2026 को इस देश में से हथियारी नक्सलवाद समाप्त हो जाएगा। जहाँ पहले स्क्रैटर्ड एप्रोच से काम होता था, कभी बातचीत करते थे, कभी विकास पर थ्रस्ट दिया जाता था, कभी सुरक्षा अभियानों में तेजी आ जाती थी। घटना आधारित रिस्पांस होता था, एक कोई स्थायी नीति नहीं थी। एक प्रकार से कहूँ तो सरकार के रिस्पांस का स्टीयरिंग नक्सलवादियों के हाथ में था। 2014 के बाद सरकार के अभियानों का, सरकार के कार्यक्रमों का, सरकार के आयोजन का स्टीयरिंग भारत सरकार के गृह मंत्रालय के पास आया। यह बहुत बड़ा नीतिगत परिवर्तन हुआ, उस परिवर्तन के कारण ही यह परिणाम मिला। स्क्रैटर्ड एप्रोच की जगह यूनिफाइड और रूथलेस स्ट्रेटजी को अपनाने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया। हमारी सरकार की नीति है जो हथियार छोड़कर सरेंडर होकर आना चाहते हैं उनके लिए रेड कार्पेट है। आइए, भाई आपका स्वागत है, आप मार्ग भूले हुए हमारे ही लोग हो। सबसे अच्छा ल्यूकरेटिव सरेंडर पॉलिसी, सबका स्वागत है, हथियार छोड़ दीजिए। हम किसी को मारना नहीं चाहते। मगर आप हथियार लेकर निर्दोष आदिवासियों को मारना चाहते हैं तो सरकार का धर्म है इनको बचाना और आपका सामना करना। बिना किसी कंप्यूजन के भारत सरकार ने पहली बार एक नीति बनायी है। राज्य पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बलों को हमने खुली छूट दी। इंटेलिजेंस, इंफॉर्मेशन शेयरिंग और ऑपरेशन में कोऑर्डिनेशन के लिए भारत सरकार और राज्यों के बीच में एक व्यवहारू सेतु बनाया गया। विभिन्न राज्यों के बीच में, पड़ोसी राज्यों के बीच में भी व्यवहारिक सेतु

बनाया गया। आर्म्स और एमुनेशन के सप्लाय पर नकेल कसी गई। 2019 के बाद लगभग उनके आर्म्स एमुनेशन की सप्लाय में हमने 90 प्रतिशत से ज्यादा कटौती करने में सफलता ली। उनके वित्त पोषण करने वाले लोगों पर NIA और ED का उपयोग कर कर हमने नकेल कसी। उनका जो अर्बन नक्सल का सपोर्ट था, लीगल सहायता का सपोर्ट था और मीडिया नैरेटिव गढ़ने का जो वह काम करते थे, उस पर नकेल कसी गयी।

मारने वाले अपने आप को बिचारा कहते हैं। जो लोग मारते हैं, वह अपने आप को बिचारा कहते हैं और यहाँ पेपर और पेन लेकर बड़े-बड़े आर्टिकल लिखे जाते हैं। इस नैरेटिव के सामने हम लड़े हैं, अदालतों में भी लड़े हैं और मीडिया की लड़ाई भी लड़े हैं। हमने सेंट्रल कमेटी के जो मेंबर्स थे उन पर लक्षित कर कार्यवाही की, तो 18 से ज्यादा सेंट्रल कमेटी के मेंबर अगस्त 2019 से लेकर आज तक न्यूट्रलाइज किए गए। सुरक्षा वैक्यूम को हमने भरने का काम किया क्योंकि वहाँ रोड-रास्ते, रस्ते नहीं थे और टारगेटेड ऑपरेशन, ‘ऑपरेशन ऑक्टोपस’, ‘डबल बुल’ इस प्रकार के ऑपरेशन किए गए और DRG, STF, CRPF और कोबरा चारों की संयुक्त ट्रेनिंग की भी हमने शुरुआत की और चारों दल साथ में मिलकर अभियान करते हैं और उसका चैन ऑफ कमांड भी अब स्पष्ट है। कहीं कोई कंप्यूजन नहीं है। स्टेट पुलिस और सेंट्रल पुलिस दोनों साथ में अभियान कर रहे हैं। एकीकृत प्रशिक्षण से हमारी सफलता में बहुत बड़ा अंतर आ गया। इसके साथ-साथ फॉरेंसिक इन्वेस्टिगेशन किए गए। लोकेशन ट्रैकिंग सिस्टम उपलब्ध कराया गया। मोबाइल फोन की गतिविधियों को भी राज्य पुलिस को उपलब्ध कराया गया। साइंटिफिक कॉल लॉग्स एनालिसिस के सॉफ्टवेयर बने और सोशल मीडिया एनालिसिस से भी उनके छुपे हुए सपोर्टर को ढूँढ़ने का काम दोनों जगह पर अर्थात् राज्यों और सेंटर में हुआ और इसके द्वारा अभियान में ना केवल तेजी आई, बल्कि सारे अभियान सफल हुए, और परिणाम सबके सामने है।

2019 के बाद हमने राज्यों के क्षमता निर्माण पर भी बहुत थ्रस्ट दिया।

SRE और SIS योजना के तहत लगभग 3331 करोड़ रुपया जारी किया गया जो लगभग 155 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है और उसके माध्यम से फॉर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बहुत बढ़ाए गए। लगभग लगभग 1741 करोड़ इसके पीछे खर्च हुआ और इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए खर्च हुआ। पिछले 6 साल में, सिर्फ 6 साल में 336 नए सेंट्रल पैरामिलिट्री फोर्सेस के कैप बनाकर सुरक्षा के वैक्यूम को भरने का काम कर दिया गया और ये सबसे बड़ी बात थी जिसके कारण



सफलता मिली, उनके गतिविधि के क्षेत्र में हर जगह आज भारत सरकार और राज्य सरकार की पुलिस कैप में बैठकर सुरक्षित हमारे नागरिकों का रक्षा की व्यवस्था कर रही है और बलों के अस्पतालों के लिए भी बहुत अधिक राशि व्यय की गई और इसका परिणाम क्या हुआ? 2004-2014 में आगे का तो आंकड़ा बहुत बड़ा-बड़ा है।

पार्टी की विचारधारा, पार्टियां और पार्टी की सरकारों का अभ्यास करना है परफॉर्मंस की तो तुलना हो ही सकती है तो 10 साल सरदार मनमोहन सिंह जी की सरकार के और 10 साल नरेंद्र मोदी जी की सरकार के। इसका एक तुलनात्मक अध्ययन रखना चाहता हूं। सुरक्षा बलों की मृत्यु 2004-2014 में इसमें 73 प्रतिशत की कमी आई है। नागरिकों की मृत्यु में 74 प्रतिशत की कमी आई है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है और कई बार कहते हैं कि इस प्रकार की लड़ाई में कौन सी पार्टी की सरकार है इसका कोई महत्व नहीं है। मगर मेरा अनुभव कुछ और कहता है। 2019 में गृहमंत्री बना। देश भर में मोदी जी के नेतृत्व में अभियान चल रहे थे। झारखंड में अच्छा चला, बिहार लगभग मुक्त, आंध्र प्रदेश- तेलंगाना मुक्त हो गया, महाराष्ट्र मुक्त होने की कगार पर है। मगर छत्तीसगढ़ में हमें सफलता नहीं मिलती थी। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी। ऊपरी तौर पर तो कॉ-ऑपरेशन मिलता था परंतु जो इनिशिएटिव संयुक्त अभियानों के लिए लेना चाहिए। वहां पैर कच्चे पड़ जाते थे।

परंतु 2024 में वहां पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। 2024 इतिहास के सबसे ज्यादा 270 नक्सली को न्यूट्रलाइज करने का काम 1 साल के अंदर किया गया। ये जो वामपंथी आपने नक्सली भाइयों के बचाव में खड़े होते हैं, कहते हैं “हमारे लोग हैं, क्यों मारना चाहिए?” हम नहीं मारना चाहते। 290 मारे गए क्योंकि उनके हाथ में हथियार थे। इसके साथ ही 1090 गिरफ्तार किए हैं। जहां गिरफ्तारी संभव थी वहां हमने गिरफ्तार भी किए हैं और वो आज कानून की कोर्ट में हैं। इसके अलावा 881 लोगों ने सरेंडर भी किया। इन आंकड़ों से पता चलता है कि सरकार का अप्रोच क्या है? सरकार का अप्रोच यह है कि हम पूरा प्रयास करते हैं नक्सली को अरेस्ट करने का, सरेंडर कराने का, मौका भी देते हैं। एक अच्छी सरेंडर पॉलिसी भी लेकर आए हैं। मगर जब आप हाथ में हथियार लेकर भारत के निर्दोष नागरिकों को मारने के लिए निकलते हो, तब सुरक्षा बलों के पास और कोई चारा नहीं होता, गोली का जवाब गोली से ही देना होता है। 2025 दूसरा वर्ष छत्तीसगढ़ की सरकार बनने का है, 2024 में पूरे वर्ष में 290 नक्सली न्यूट्रलाइज हुए थे। जबकि 2025 में आज की तिथि तक 270 नक्सलियों

को न्यूट्रलाइज करने का काम किया गया है। 680 गिरफ्तार किए गए हैं और आत्म समर्पण का आंकड़ा देखिए - 1225 लोगों ने आत्मसमर्पण किया है। तो दोनों वर्ष में जहां हमने अभियान तेज किया वहां आत्मसमर्पण और अरेस्ट की संख्या न्यूट्रलाइज से कई गुना ज्यादा है। यह आत्मसमर्पण जो ज्यादा बढ़ रहे हैं, वह ही बताता है कि नक्सलियों का समय अब कम बचा है। उन्होंने एक बहुत विकट पहाड़ी पर, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ की बॉर्डर पर अपना एक बहुत बड़ा कैप बनाया था। इनके पास सेना की बटालियन के बराबर हथियार थे, 2 साल का राशन था, हथियार बनाने की फैक्ट्रियां लगी थी, IED बनाने की फैक्ट्रियां थी। 5 दिन जवान चढ़कर जाएंगे, तब वहां पहुंच पाएंगे, इतना कठिन ठिकाना था। ढेर सारी नदियां, तालाब वहां थे और एक लगभग लगभग 50/50 किलोमीटर का लंबा बेस इन्होंने बनाया था। 23 मई 2025 को ब्लैक फॉरेस्ट ऑपरेशन के तहत उनके पूरे बेस को नष्ट कर दिया गया और 27 हार्डकोर नक्सली मारे गए। बीजापुर में 24 हार्डकोर नक्सली मारे गए हैं और इसके माध्यम से छत्तीसगढ़ में जो बचे-खुचे नक्सली थे, वहां पर एक प्रकार से इनकी रीढ़ की हड्डी तोड़ने का काम हुआ। जो नक्सली न्यूट्रलाइज किए गए उसमें जोनल कमेटी मेंबर 1, सब जोनल कमेटी मेंबर 5, स्टेट कमेटी मेंबर 2, डिवीजनल कमेटी मेंबर 31 और एरिया कमेटी के मेंबर 59 थे, ये 2024 के साल में न्यूट्रलाइज किए गए। अब सूची-वांटेड से ज्यादा, बचे हुए की कम हो गई है यह स्थिति आज हमारी आई है। 2014 में एक प्रकार से यह समस्या के सामने लड़ने के लिए फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बनाना पड़ता है। समस्या जब से शुरू हुई 1960-2014 तक कुल 66 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन थे जबकि नरेंद्र मोदी सरकार के 10 साल में, नए 576 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बनाने का काम हुआ। 2014 में 126 नक्सलाइट जिले थे और अब 124 में 18 नक्सलाइट जिले ही बचे हैं, यह बताता है कि कितना एरिया इनका सिकुड़ गया है। मोस्ट इफेक्टिव जिले की एक अलग कैटेगरी होती है। वो 36 थे, अब कम होकर 6 बचे हैं। पहले लगभग 330 पुलिस स्टेशन नक्सल प्रभावित थे अब वह 151 रहे हैं, परंतु 151 में से भी 41 नए बने पुलिस स्टेशन हैं। जो नए बनाए गए इसलिए नंबर ऑफ पुलिस स्टेशन बढ़ा है। वो 41 निकल जाए तो 330 में से 100 पुलिस स्टेशन बचे हैं। और पिछले 6 सालों में 336 सुरक्षा कैप बनाए गए और नाइट लैंडिंग के लिए 68 नाइट लैंडिंग हेलीपैड लगाए गए हैं। भारत सरकार के मंत्रियों के लिए भी, रात को कहीं नाइट लैंडिंग करना है तो हेलीकॉप्टर की सुविधा नहीं है। मगर हमारे

CRPF के जवान के लिए हमने 76 नाइट लैंडिंग हेलीकॉप्टर बनाए।

नक्सलियों की आय कम करने के लिए NIA, ED और राज्य सरकारों ने करोड़ों रुपयों की संपत्ति को जब्त किया है, खाते सीज किए हैं। राज्य सरकार के समन्वय के लिए भी लगातार 12 बैठकें हुई हैं, मुख्यंत्रियों के साथ, छत्तीसगढ़ अकेले राज्य में 8 बैठकें हुई हैं। यह बताता है कि किस प्रकार से हम आगे बढ़ रहे हैं। नक्सलियों के आत्मसमर्पण के लिए बहुत ल्युक्रेटिव पैकेज छत्तीसगढ़ सरकार लाई है। उच्च रैंक के कैडरों के लिए 5 लाख, मध्यम और निचली कैडरों के लिए 2.5 लाख और व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए 10 हजार हम उनको देते हैं।

वामपंथ प्रभावित उग्रवाद क्षेत्र में विकास के लिए भी ढेरों काम किए गए हैं क्योंकि एक दलील ऐसी थी कि वामपंथी उग्रवाद के जन्म का कारण विकास का असंतुलन था। शुरू में मैं भी यह वामपंथी मित्रों की दलील को आंशिक रूप से स्वीकार करता था। परंतु मैंने डिटेल्ड स्टडी की है। जब वामपंथी उग्रवाद शुरू हुआ, तब वामपंथी उग्रवाद क्षेत्र के बाहर मतलब पशुपति-दू-तिरुपति कॉरिडोर के बाहर 56 जिले ऐसे थे जो वामपंथी उग्रवादी क्षेत्र में विकास की दृष्टि से बहुत ज्यादा पिछड़े थे, वहां विकास क्यों नहीं हुआ, नक्सलवाद वहां क्यों खड़ा नहीं हुआ?

दुनिया भर में जहां वामपंथी विचारधारा पनपी, वामपंथी विचारधारा और हिंसा का चोली दामन का रिश्ता रहा है, यही जड़ है नक्सलवाद की। अगर किसी विचारधारा के अंदर हिंसा को व्यर्थ ही नहीं मानते हैं, हिंसा को बुरा नहीं मानते हैं तो किस प्रकार से देश चल सकता है।

जो लोग यह प्रचार कर रहे हैं वामपंथी उग्रवाद का मूल कारण विकास है, तो वो देश को गुमराह कर रहे हैं। हमारे संविधान में हर प्रकार की व्यवस्था है। ट्राइबल कल्याण के लिए विशेष प्रावधान हैं। इसकी जिम्मेदारी सीधे तौर पर सीधी राष्ट्रपति और राज्यपालों को दी गई है। इनके लिए बजटरी प्रोविजन का प्रावधान है। इनके विकास के लिए ढेर सारी योजनाएं हैं। हम सबको मालूम है कि लंबी गुलामी के बाद हम आजाद हुए थे। संसाधन की कमी थी। एक साथ पूरे देश का विकास नहीं हो सकता, कुछ हिस्से पिछड़ गए थे। मगर अब ये सवाल नहीं है। 60 करोड़ गरीबों के लिए नरेंद्र मोदी जी अनेक योजना लेकर आए हैं। घर दिया, शौचालय दिया, घर में बिजली दिया, शुद्ध पीने का पानी दिया, 5 किलो अनाज दिया, 5 लाख तक का इश्योरेंस दिया, घर में गैस दे दिया। नक्सलवादी क्षेत्रों में यह सारी सुविधाओं को कौन नहीं पहुंचाने देता? आज छत्तीसगढ़ के बीजापुर में, सुकमा में अगर स्कूल नहीं है, तो इसके लिए कौन दोषी है?

अटल जी के समय सर्व शिक्षा अभियान चला था। मोदी जी ने इसको पुखा किया। क्यों वहां स्कूल नहीं खुला? आप रोक कर बैठे थे। हथियार लेकर बैठ गए थे। देश भर में रोड का नेटवर्क बना। वामपंथी क्षेत्र में क्यों नहीं बना? क्योंकि आपने रोड के कॉन्ट्रैक्टरों की हत्या कर दी। देश भर में 5 किलो चावल मिलता है। वामपंथी क्षेत्र में वो चावल लोगों को क्यों नहीं मिला? उनका राशन कार्ड क्यों नहीं बना? क्योंकि आप रोक कर बैठे थे। आप आदिवासियों का विकास नहीं चाहते हो। आपके मन में इनकी चिंता नहीं है। आपके मन में चिंता है दुनिया भर में रिजेक्ट होती आपकी आईडियोलॉजी को वहां पर जिंदा रखने की चिंता है। इसलिए यह जो दुष्प्रचार हो रहा है इस दुष्प्रचार को हमें समझना होगा। किसी भी हथियारबंद मूवमेंट का समर्थन संविधान के फोर कॉर्नर में जीते सभ्य समाज के लिए कैसे कर सकते हैं? देश में आप वैक्यूम खड़ा करना चाहते हैं। स्टेट का वैक्यूम, गवर्नेंस का वैक्यूम, संविधान का वैक्यूम और सिक्वोरिटी का वैक्यूम। एक भ्रांति फैला रखी है कि हथियार हाथ में इसलिए हैं कि वहां विकास नहीं होता। मैं अब तो यह कहना चाहता हूं पहले भी कई सारे ऐसे क्षेत्र थे जहां विकास नहीं हुआ था। लोकतांत्रिक तरीके से, तहसील, पंचायत, जिला पंचायत, विधानसभा, संसद के माध्यम से विकास किया। मगर अब तो मैं कहना चाहता हूं क्योंकि वहां विकास नहीं पहुंचा है, इसका एकमात्र कारण यह वामपंथी विचारधारा है और कुछ नहीं। विश्व के भी कई उदाहरण हैं, कोलंबिया, पेरू, कंबोडिया जहां हिंसा के सहारे आईडियोलॉजी को फैलाया गया। भारत में ये अब संभव नहीं है, यहां पर नॉन-सेन्स वाली नरेंद्र मोदी सरकार है, ये हो नहीं सकती। इन्होंने इसके फैलाने के लिए एक स्टेटजी अपनाई। पहला निशाना उन्होंने संविधान और न्याय व्यवस्था को बनाया और संवैधानिक वैक्यूम खड़ा किया। दूसरा उन्होंने स्टेट की कल्पना को निशाना बनाया और स्टेट का वैक्यूम खड़ा किया। जो लोग इनके साथ जुड़े नहीं, उन ट्राइबल लोगों को स्टेट का इनफॉर्मर बनाकर "जनता की अदालत में फांसी की घोषणा कर दी जाती थी।"

भारत के संविधान के तहत इस आईडियोलॉजी के अनुयायियों की 'जनता सरकार' और 'जनता अदालत' इसको क्या आप स्वीकार करते हैं? शार्प क्वेश्चन का जवाब देना चाहिए जो इसका समर्थन करते हैं। क्या आपको भारत की अदालतों पर विश्वास नहीं है? चुनकर आई हुई सरकारों पर विश्वास नहीं है?

इन्होंने पैरलल गवर्नमेंट बनाई। इनका रक्षा मंत्री होता है, गृह मंत्री होता है, वित्त मंत्री होता है। किस प्रकार से इसका समर्थन किया जा सकता है? मैं

तो जो लोग लिखते हैं उनको भी कहना चाहता हूं, देश के कल्याण के लिए अपनी आईडियोलॉजी से थोड़ा ऊपर उठ जाओ और अब बस करो, बहुत हो गया। इस प्रकार से शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, बुनियादी सेवाएं, इनकी भूख, इसको आपने इन समस्याओं का समाधान होने नहीं दिया और ढेर सारे बड़े-बड़े कांड लगभग लगभग जहानाबाद में 1 हजार नक्सलियों ने 13 नवंबर 2006 को 7 घंटे जहानाबाद को अपने कब्जे में रखा था। कौन जस्टिफाई कर सकता है? किसके सामने लड़ रहे हो? देश स्वतंत्र हो चुका। 2006 में हमारी सरकार नहीं थी, मगर तब भी हम इसका खंडन करते थे क्योंकि सवाल यह राजनीतिक दलों का नहीं है, सरकारों का नहीं है, यह सवाल देश का है। यह जो गवर्नेंस का वैक्यूम बनाया इसके कारण ही वहां पर विकास नहीं पहुंचा है, साक्षरता नहीं पहुंची है। इनकी स्वास्थ्य की समस्याएं, इनके खिलाफ सरकार लड़ नहीं सकती है। इस सारी समस्याओं का निवारण तभी है जब सभी लोग हथियार डाल दें। अभी-अभी एक भ्रांति फैलाने के लिए पत्र लिख कर दिया गया कि अब तक जो हुआ वह गलती हो गई है, अब सीज फायर कर दिया जाए और हम सरेंडर करना चाहते हैं। कोई सीज फायर नहीं होगा! मेरे वाक्य को मैं एक्सटेंड करना चाहता हूं। सरेंडर करना है तो सीज फायर करने की जरूरत ही नहीं है, हथियार डाल दो, पुलिस एक भी गोली नहीं चलाएगी। आपको पुनर्वासित करेगी। जैसे ही पत्र आया सब लोग कूद पड़े। हमने ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट चलाया। ये सारी वामपंथी पार्टियां सार्वजनिक रूप से अब तक ये वामपंथी हिंसा से कन्नी काटती थी। मगर जैसे ही ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट हुआ उनकी सारी छद्म सिंपथी एक्सपोज हो गई। उन्होंने पत्र लिखा प्रेस नोट दिया कि ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट तुरंत बंद कर दिया जाए। वामपंथी राजनीतिक रजिस्टर्ड दलों ने प्रेस नोट दिया। CPI और CPIM ने दिया है। क्यों? क्यों बचाना है उनको? और कब तक गरीब लोगों पर जुल्म करते रहोगे? किसी बच्ची का पैर उड़ गया। किसी किसान का पैर उड़ गया। किसी के मां बाप दोनों मारे गए थे। कौन जिम्मेदार है इसके लिए? वह भी तो ट्राइबल है। उनके ह्यूमन राइट के लिए क्यों NGO आगे नहीं आते? यह आर्टिकल बड़े-बड़े लिखकर हमें एडवाइस देने वाले सारे लोग वो विक्टिम ट्राइबल के लिए कभी एक आर्टिकल लिखा है क्या?

क्या वो मानवीय नहीं है। क्या वो भारत का नागरिक नहीं है। क्या वो ट्राइबल नहीं है। इसकी चिंता क्यों नहीं होती है? आपकी सिंपथी और संवेदना इतनी सिलेक्टिव क्यों है? मैं पूछना चाहता हूं सारे लोगों को कि आपकी सिंपथी क्यों सिलेक्टिव है? ये विक्टिमों के प्रति क्यों नहीं है? लगभग

2014-2024 में ये जवाब है उन लोगों को, जो कह रहे हैं विकास के कारण वामपंथी उग्रवाद चालू हुआ था। वामपंथी उग्रवाद विकास के कारण चालू नहीं हुआ था। वामपंथी उग्रवाद के कारण विकास रुका था। अब 2014-2025 तक 12 हजार कि.मी. सड़कें वामपंथ प्रभावित उग्रवाद के क्षेत्र में हमने बनाने का काम किया। 12 हजार कि.मी.। 17 हजार 500 कि.मी. की सड़कों के लिए बजट की स्वीकृति की। 6 हजार 300 करोड़ से 5000 मोबाइल टावर लगाए गए। इनका अधिकार है या नहीं? दूरसंचार की क्रांति पर 5 हजार टावर लगाए हैं। इसके साथ-साथ 1007 बैंक की ब्रांचें खोली गई हैं। 937 ATM लगाए गए हैं। 37850 बैंकिंग कॉस्पोंडेंस बनाए गए हैं जो मोदी जी की योजनाओं का लाभ उन तक पहुंचाते हैं। 5899 डाकघर खोले गए हैं, 850 विद्यालय खोले गए हैं और 186 अच्छे स्वास्थ्य केंद्र खोले गए हैं। छत्तीसगढ़ सरकार 'नियद नेल्लानार' ये अभियान के तहत आयुष्मान भारत कार्ड बनाना, आधार कार्ड बनाना, वोटिंग कार्ड बनाना, स्कूल बनाना, राशन की दुकान स्वीकृत करना, आंगनबाड़ी स्वीकृत करना, उपस्वास्थ्य केंद्र बनाना, हार्ड मास्क लाइटें लगाना इत्यादि सब कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना पूरी फाइनल हो गई थी। फिर छत्तीसगढ़ में फाइनल अभियान चालू हुआ। ढेर सारे लोग सरेंडर हुए, नक्सलवाद से नए गांव मुक्त हो गए। वहां पर मैं विजित के लिए गया था, जाते-जाते मुझे एयरपोर्ट पर एक कागज दिया कि अगर 15 हजार प्रधानमंत्री आवास अप्रुव हो जाते हैं तो हम सारे नक्सल क्षेत्र में आदिवासियों को पक्का घर दे सकते हैं। मैं उनको तुरंत प्रॉमिस नहीं किया मुझे लगता था कि बजट हो गया, सब आवंटन हो गया, तो कैसे अतिरिक्त 15 हजार प्रधानमंत्री आवास मंजूर हो पाएगा किन्तु जैसे ही प्रधानमंत्री जी से इस विषय पर बात की, तो उन्होंने एक क्षण के अंदर 15 हजार आवास अप्रुव कर दिया, यह संवेदना होती है। आने वाले दिनों में हथियारबंद नक्सलवाद 31 मार्च 2026 को समाप्त हो जाएगा। विकास न होने की वजह से ही नक्सलवाद नहीं पनपा था। सिर्फ विकास से खत्म नहीं होगा। सभी को आइडेंटिफाई करके हमने एक्सपोज करना चाहिए। कुछ कठोर सवाल उनसे भी पूछे जाने चाहिए। लोकतंत्र में अभिव्यक्ति होनी ही चाहिए। इसकी आजादी भी होनी चाहिए। जरा सवाल पूछिए कि ये जो मारे गए, उन आदिवासियों के लिए आपके मन में किस तरह की भावनाएं हैं? इतना पूछते ही शायद उन लोगों की असलियत हमारे सामने आ जाएगी। विश्वास है कि यह लड़ाई हम जीतेंगे और देश का 12 प्रतिशत भूभाग और आज की आबादी के हिसाब से 17 करोड़ की आबादी ये वर्षों पुरानी समस्या से मुक्त होने जा रही है। ■



बिहार ने सच का साथ दिया - पीएम मोदी



प्रचंड जीत, अटूट विश्वास, बिहार के लोगों ने बिल्कुल गर्दा उड़ा दिया है। NDA के लोग, हम तो जनता-जनार्दन के सेवक हैं।

हम अपनी मेहनत से जनता का दिल खुश करते रहते हैं। और हम तो जनता-जनार्दन का दिल चुराकर बैठे हुए हैं। इसलिए पूरे बिहार ने बता दिया है, फिर एक बार एनडीए सरकार।

- बिहार ने कुछ दलों के पुराने 'M-Y' फॉर्मूले की जगह 'महिला और यूथ' के सकारात्मक और आकांक्षा पूर्ण फॉर्मूले को अपनाया है।
- यह शानदार जीत बिहार के नागरिकों के अटूट विश्वास को दर्शाती है, जिन्होंने अपने जनादेश से धूम मचा दी है।
- कांग्रेस आज मुस्लिम लीगी-माओवादी कांग्रेस (MMC) बन गई है।
- कांग्रेस अब एक बोझ बन गई है, एक राजनीतिक परजीवी, जो अपनी प्रासंगिकता वापस पाने के लिए अपने सहयोगियों के वोट बैंक का फायदा उठाती है।
- बिहार ने झूठ को हराया है और सच को बरकरार रखा है।

प्रचंड जीत, अटूट विश्वास, बिहार के लोगों ने बिल्कुल गर्दा उड़ा दिया है। NDA के लोग, हम तो जनता-जनार्दन के सेवक हैं। हम अपनी मेहनत से जनता का दिल खुश करते रहते हैं। और हम तो जनता-जनार्दन का दिल चुराकर बैठे हुए हैं। इसलिए पूरे बिहार ने बता दिया है, फिर एक बार एनडीए सरकार। और मैंने चुनाव में बार-बार कहा था और बिहार के

चुनाव में जब मैं जंगल राज की बात करता था, कट्टा सरकार की बात करता था तो आरजेडी के लोग कभी विरोध नहीं करते थे। लेकिन कांग्रेस वालों को बहुत चुभता था। और बहुत-बहुत मोदी क्या बोल रहे हैं? ऐसा क्या बोल रहे हैं? लेकिन मैं फिर कहना चाहता हूँ। मैं कहूँगा अब वापस नहीं आएगी कट्टा सरकार।

बिहार के लोगों ने विकसित बिहार के लिए मतदान किया है। बिहार के लोगों ने समृद्ध बिहार के लिए मतदान किया है। बिहार ने 2010 के बाद का सबसे बड़ा जनादेश NDA को दिया है। ये विजय हमें संकल्पित कर रही है कि बिहार के विकास को नई ऊँचाईयों पर ले जाएं।

एक पुरानी कहावत है। लोहा, लोहे को काटता है। बिहार में कुछ दलों ने तुष्टिकरण वाला M.Y. माय फार्मूला बनाया था। पर जीत ने एक नया सकारात्मक M.Y. माय फार्मूला दिया है। और ये है- महिला और यूथ। आज बिहार देश के उन राज्यों में है जहाँ सबसे ज्यादा युवाओं की संख्या है। और इसमें हर धर्म, हर जाति के युवा हैं। उनकी इच्छा, उनकी आकांक्षा और उनके सपनों ने जंगलराज वालों के पुराने सांप्रदायिक माय फार्मूले को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है।

सिर्फ , NDA की विजय ही नहीं हुई है। ये लोकतंत्र की भी विजय है। भारत के लोकतंत्र पर भरोसा करने वालों की विजय है। इस चुनाव ने भारत के चुनाव आयोग पर जनता के विश्वास को और मजबूत किया है। बीते कुछ सालों से लगातार भारी मतदान होना वंचितों, शोषितों द्वारा ज्यादा से ज्यादा मतदान करना, ये चुनाव आयोग की बहुत बड़ी सिद्धि है।

ये वही बिहार है जहाँ पहले माओवादी आतंक हावी था। जहाँ पर नक्सल प्रभावित इलाकों में 3 बजे तक वोटिंग खत्म हो जाती थी। ये बहुत कम लोगों को पता होगा। बाकी स्थान पर पूरा समय मतदान होता था। लेकिन उस क्षेत्र में 3 बजे के बाद मतदान कराना भी मुश्किल होता था। लेकिन इस बार के चुनाव में बिहार में बिना किसी डर के लोगों ने उत्साह और उमंग के साथ एक उत्सव की तरह वोट दिया है। बिहार में जब जंगल राज था तब क्या-क्या होता था यह भी आप जानते हैं। सरेआम मतदान केंद्रों पर हिंसा होती थी। मतपेटियाँ लूटी जाती थी। आज वही बिहार रिकॉर्ड मतदान कर रहा है। शांतिपूर्ण मतदान कर रहा है। हर किसी का मत दर्ज हुआ। हर किसी ने अपनी पसंद से मत दिया है।

री-पोलिंग के आंकड़े भी इस बदलाव की गवाही देते हैं। पहले बिहार में कोई चुनाव ऐसा नहीं रहता था, जहाँ री-पोल नहीं होता था। जैसे



2005 से पहले सैकड़ों जगह पर री-पोलिंग हुई थी। 1995 में डेढ़ हजार से ज्यादा पोलिंग बूथों पर री-पोलिंग हुई थी। साल 2000 के चुनाव में भी करीब डेढ़ हजार जगहों पर फिर से चुनाव कराना पड़ा था। लेकिन जैसे ही जंगलराज गया वैसे-वैसे स्थितियाँ ठीक होती गईं। और इस बार दो चरणों के इस चुनाव में कहीं पर भी री-पोल करने की नौबत नहीं आई। इस बार शांतिपूर्ण मतदान हुआ।

बिहार के चुनावों ने एक और बात सिद्ध की है। अब देश का मतदाता, खासतौर पर हमारा युवा मतदाता, मतदाता सूची के शुद्धिकरण को बहुत गंभीरता से ले रहा है। बिहार के युवा ने भी मतदाता सूची शुद्धिकरण को जबरदस्त तरीके से सपोर्ट किया है। लोकतंत्र की पवित्रता के लिए हर मतदाता की अहमियत होती है, उसका हक होता है। अब हर दल का यह दायित्व बनता है कि वे पोलिंग बूथ पर अपनी-अपनी पार्टियों को सक्रिय करें और मतदाता सूची शुद्धिकरण के काम में उत्साह के साथ जुड़े, शत-प्रतिशत योगदान दें ताकि बाकी जगहों पर भी मतदाता सूची का पूरी तरह शुद्धिकरण हो सके।

बिहार वो धरती है, जिसने भारत को लोकतंत्र की जननी होने का गौरव दिया। आज उसी धरती ने लोकतंत्र पर हमला करने वाली ताकतों को धूल चटाई है। बिहार ने फिर दिखाया है। झूठ हारता है, जनविश्वास जीतता है। बिहार ने डंके की चोट पर कह दिया है, जमानत पर चल रहे लोगों का जनता साथ नहीं देगी।

भारत अब सच्चे सामाजिक न्याय के लिए वोट कर रहा है, जहाँ हर परिवार को समानता, सम्मान और अवसर मिलते हैं। जहाँ अब तुष्टिकरण की कोई जगह नहीं, इसकी जगह संतुष्टिकरण ने ले ली है, संतुष्टिकरण का सबसे बड़ा मान है। भारत के लोग अब सिर्फ विकास चाहते हैं, तेज विकास चाहते हैं, विकसित भारत

बनाना चाहते हैं।

नई सरकार के साथ, एनडीए अब बिहार में 25 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा की तरफ आगे बढ़ रहा है। बिहार ने ये सुनिश्चित किया है, बिहार की महान भूमि पर फिर कभी जंगलराज की वापसी नहीं होने वाली है। आज की ये जीत बिहार की उन माताओं, बहनों और बेटियों की है, जिन्होंने सालों तक आरजेडी के शासन में जंगलराज का आतंक झेला है। ये जीत बिहार के उस नौजवान की है, जिसके भविष्य को कांग्रेस और लाल झंडे वालों के आतंक के कारण बर्बाद किया गया। आज वो रेड कॉरिडोर, आतंक के वो दिन इतिहास बन गए हैं। बिहार विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है और अब ये यात्रा रुकने वाली नहीं है।

परिणाम उन विकास विरोधियों को भी बिहार का जवाब है, जो कहते थे और बेशर्मी से कहते थे कि बिहार को एक्सप्रेसवे और हाइवे नहीं चाहिए, जो कहते थे कि बिहार को इंडस्ट्री नहीं चाहिए, जो कहते थे कि बिहार में ट्रेन, एयरपोर्ट की क्या जरूरत है? आज के ये परिणाम वंशवाद की राजनीति के खिलाफ विकासवाद की राजनीति को दिया जनादेश है।

भारत के विकास में, बिहार के लोगों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। लेकिन जिन लोगों ने दशकों तक, देश पर शासन किया, उन लोगों ने हमेशा बिहार की एक झूठी छवि बनाई। इन लोगों ने बिहार को बदनाम किया, इन लोगों ने ना बिहार के गौरवशाली अतीत का सम्मान किया, ना बिहार की परंपरा और संस्कृति का आदर किया, और ना यहां के लोगों की इज्जत की।

जो लोग छठ पूजा को ड्रामा कह सकते हैं, वो बिहार की परंपरा का कितना सम्मान करते होंगे? और इनकी हेकड़ी देखिए, छठी मैया से कांग्रेस-आरजेडी ने माफी नहीं मांगी है।



बिहार के लोग ये कभी नहीं भूलेंगे। बिहार की आन-बान-शान ये हमारी प्राथमिकता है। हमारी सरकार छठ को यूनेस्को की हेरिटेज लिस्ट में शामिल करने का प्रयास कर रही है। लक्ष्य ये है कि पूरा देश, पूरी दुनिया इसके महत्व से इस संस्कृति से जुड़ सके। इस बार छठ पूजा के दौरान रेलवे स्टेशनों पर छठी मैया के गीत गुंजे तो हर कोई इस पावन पर्व में सम्मिलित होता दिखा।

पिछले वर्ष, देश के लोगों ने लगातार तीसरी बार एनडीए को अपना जनादेश दिया था। 60 वर्षों बाद ऐसा अवसर आया, जब किसी को लगातार तीसरी बार सत्ता में आने का अवसर मिला। ये देश के विश्वास का, देशवासियों के आशीर्वाद का परिणाम था। और लोकसभा चुनाव के बाद, देश के कई राज्यों में भी हमें विधानसभा चुनावों में प्रचंड बहुमत के साथ जीत मिली। जिस हरियाणा की धरती ने जय जवान, जय किसान की भावना को आगे बढ़ाया उस हरियाणा ने हमें लगातार तीसरी बार सेवा का अवसर दिया। छत्रपति शिवाजी महाराज, बाबा साहब आंबेडकर और वीर सावरकर की पुण्यभूमि महाराष्ट्र में, हमें प्रचंड जीत मिली। लगातार तीसरी बार महाराष्ट्र ने हमें विजयी बनाया। हम 25 वर्षों के बाद, देश की राजधानी में बहुमत से जीते और आज बिहार में, जहां इतनी बड़ी जनसंख्या ग्रामीण हिस्सों में बसती है। हम वहां इतनी बड़ी संख्या में जीत कर आए हैं।

देश के हर हिस्से में, हर परंपरा में लोग एनडीए को, एक विश्वास और उम्मीद के साथ देख रहे हैं। देश के महानगरों से, देश के ग्रामीण इलाकों तक देश के फाइनैशियल सेंटर्स से टियर टू और टियर थ्री शहरों तक देश की नारीशक्ति से देश के फस्ट टाइम वोटर्स तक हर वर्ग, हर जाति, हर समुदाय, हर क्षेत्र ने एनडीए को

अपना विश्वास, अपना आशीर्वाद दिया है और लगातार अपना आशीर्वाद दे रहे हैं।

भाजपा की, NDA की सरकारों को 20-20 साल बाद भी अगर जनता फिर से चुन रही है तो ये देश में प्रो-पीपल, प्रो-गवर्नेंस, प्रो-डवलपमेंट राजनीति की स्थापना है। ये भारत की राजनीति का नया आधार है। और इसी प्रो-पीपल, प्रो-गवर्नेंस, प्रो-डवलपमेंट आधार पर चलते हुए हम बिहार को विकसित बनाएंगे, देश को विकसित बनाएंगे।

जिस पार्टी ने दशकों तक देश पर राज किया उस पर देश की जनता का विश्वास लगातार घट रहा है। कांग्रेस देश के अनेक राज्यों में सालों से सत्ता से बाहर है। बिहार में 35 साल, गुजरात में 30 साल, यूपी में भी करीब चार दशक और पश्चिम बंगाल में करीब पांच दशक से कांग्रेस की सरकार नहीं लौटी है।

पिछले तीन लोकसभा चुनावों में कांग्रेस तीन अंकों की संख्या तक नहीं पहुंच पाई है। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद, देश के 6 राज्यों में विधानसभा चुनाव हुए हैं और इनमें भी कांग्रेस 100 सीटों का आंकड़ा पार नहीं कर पाई है। सिर्फ एक चुनाव में हमारे जितने विधायक चुने गए हैं। कांग्रेस पिछले 6 चुनाव में उतने विधायक नहीं जीत पाई है।

कांग्रेस की राजनीति का आधार अब सिर्फ और सिर्फ नेगेटिव पॉलिटिक्स हो गया है। कभी चौकीदार चोर है का नारा, संसद का समय बर्बाद करना, हर इंस्टीट्यूशन को अटैक करना, कभी EVM पर सवाल, कभी चुनाव आयोग को गाली, कभी वोट चोरी का मनगढ़ंत झूठा आरोप, जाति और धर्म के आधार पर लोगों को बांटना, देश के बजाय, देश के दुश्मनों के एजेंडे को आगे लाना, कांग्रेस के पास देश के लिए कोई पॉजिटिव विजन नहीं है। सच्चाई ये है कि कांग्रेस मुस्लिम लीगी-माओवादी कांग्रेस यानि

MMC बन गई है। कांग्रेस का पूरा एजेंडा अब इसी पर चलता है। और इसलिए अब कांग्रेस के भीतर भी एक अलग धड़ा पैदा हो रहा है, जो इस नेगेटिव पॉलिटिक्स से असहज है। ये जो कांग्रेस के नामदार हैं, ये जिस रास्ते पर कांग्रेस को लेकर चल रहे हैं, इसके प्रति घोर निराशा, घोर नाराजगी अंदर ही अंदर पनप रही है। हो सकता है कि आगे कांग्रेस का एक और बड़ा विभाजन हो। और कांग्रेस के जो सहयोगी दल हैं वो भी समझने लगे हैं कि कांग्रेस अपनी नेगेटिव पॉलिटिक्स में सबको एक साथ डुबो रही है।

कांग्रेस एक liability है, कांग्रेस एक ऐसी परजीवी है जो अपने सहयोगियों के वोटबैंक को निगलकर अपनी वापसी करना चाहती है। इसलिए कांग्रेस से सावधान रहने की जरूरत उसके सहयोगियों को भी है। बिहार में आरजेडी को सांप सूंघा हुआ है। बहुत जल्द दोनों का झगड़ा अब खुलकर सामने आने वाला है।

ये विजय, एक नई यात्रा की शुरुआत है। बिहार ने जो भरोसा हम पर जताया है, उसने हमारे कंधों पर जिम्मेदारी और बढ़ा दी है। आने वाले पाँच साल, बिहार और तेज गति से आगे बढ़ेगा। बिहार में नए उद्योग लगेंगे। बिहार के नौजवानों को बिहार में ही रोजगार मिले, इसके लिए लगातार काम किया जाएगा। बिहार में निवेश आएगा, ये निवेश और ज्यादा नौकरियां लाएगा। बिहार में पर्यटन का विस्तार होगा। दुनिया को बिहार का नया सामर्थ्य दिखेगा। बिहार में हमारे तीर्थों का, आस्था के स्थानों का, हमारी ऐतिहासिक धरोहरों का कायाकल्प होगा। देश और दुनियाभर के निवेशकों से भी कहूंगा कि बिहार आपके स्वागत लिए तैयार है। मैं देश और दुनिया में बसी बिहार की संतानों से भी कहूंगा, ये बिहार में निवेश करने का सबसे उपयुक्त समय है। बिहार की एक-एक मां, एक-एक युवा, एक-एक किसान, एक-एक गरीब परिवार को कहना चाहता हूँ। आपका भरोसा, ये मेरा प्रण है। आपकी आशा, मेरा संकल्प है। नौजवान साथियों, आपकी आकांक्षा, ये मेरी प्रेरणा है। हम मिलकर एक ऐसा बिहार बनाएँगे, जो समृद्ध होगा, विकसित होगा। भाजपा की ताकत भाजपा का कार्यकर्ता है। जब भाजपा का कर्मठ कार्यकर्ता कुछ ठान लेता है तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रह जाता। भाजपा की हर सफलता का आधार उसका कार्यकर्ता ही है। इस विजय ने भाजपा कार्यकर्ताओं को केरला, तमिलनाडु, पुडुचेरी, असम और पश्चिम बंगाल में भी नई ऊर्जा से भर दिया है। गंगा जी बिहार से बहते हुए ही बंगाल तक पहुंचती हैं। बिहार ने बंगाल में भाजपा की विजय का रास्ता भी बना दिया है। ■

बिहार प्रचंड विजय सुशासन की मिसाल - डॉ. मोहन यादव

नेतृत्व की भूमिका पर विचार करे विपक्ष - हेमंत खण्डेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की विकास योजनाओं के कारण और मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में सुशासन, सामाजिक न्याय और गरीबों के उत्थान की जीत हुई है।

- बिहार की जनता के विश्वास और मोदी जी के करिश्माई नेतृत्व की हुई प्रचंड जीत।
- मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा और एनडीए के प्रति जनता का भरोसा लगातार मजबूत हुआ।
- बिहार में बहार है फिर एनडीए सरकार है।



- प्रधानमंत्री मोदी जी की विकासवादी नीतियों से बिहार में एनडीए को मिली ऐतिहासिक विजय।
- बिहार की जनता ने एनडीए को प्रचंड जीत दिलाकर परिवारवाद और भ्रष्टाचारियों को सिखाया सबक।
- कांग्रेस आरोपों की राजनीति छोड़ बिहार चुनाव में मिली असफलता पर आत्मचिंतन करे।
- पार्टी नेतृत्व के मार्गदर्शन, कार्यकर्ताओं की मेहनत से मिली जीत।

बिहार में मिली प्रचंड जीत ने एक बार फिर ये साबित कर दिया है कि देश का नेतृत्व और आम जन की चिंता अगर कोई कर सकती है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ही है। यह जीत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं श्री नीतीश कुमार की सरकारों की गरीब कल्याण की योजनाओं तथा सबको साथ लेकर चलने की नीतियों का प्रतिफल है। बिहार चुनाव में एनडीए ने भारी बहुमत के लिए मध्यप्रदेश के पार्टी कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों एवं प्रदेश की जनता की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद, जिनके नेतृत्व में भाजपा और एनडीए को ऐतिहासिक सफलता मिली है। साथ ही केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी, भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी को भी धन्यवाद, जिनके मार्गदर्शन में कार्यकर्ताओं ने अपने परिश्रम की पराकाष्ठा कर यह जीत हासिल की है। श्री नीतीश कुमार एवं बिहार की जनता को भी धन्यवाद जिन्होंने एक बार फिर श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व को आशीर्वाद दिया है। इस चुनाव में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सहित मध्यप्रदेश से भी बड़ी संख्या में पार्टी के वरिष्ठ नेता, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता बिहार चुनाव कार्य में जुटे हुए थे। इस जीत में उनके अथक परिश्रम का भी योगदान है, जिसके लिए उन्हें भी बधाई और धन्यवाद।

दो चरणों में शांतिपूर्ण तरीके से हुए चुनाव बिहार की जनता की जागरूकता और सुशासन की मिसाल हैं। न कहीं पुनर्मतदान की आवश्यकता पड़ी, न कहीं किसी प्रकार की हिंसा हुई। यह राज्य में स्थिरता और बेहतर प्रशासन का प्रमाण है। बिहार ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य रहा है। अशोक काल से लेकर आज तक इसकी विशेष पहचान रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की विकास योजनाओं के कारण और मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में सुशासन, सामाजिक न्याय और गरीबों के उत्थान की जीत हुई है। मोदी सरकार द्वारा लगभग 15 लाख करोड़ रुपये के निवेश से जुड़े कार्य, पूर्णिया सहित कई हवाई अड्डों का विकास, तथा मखाना उत्पादन को प्रोत्साहन देने जैसे कदमों ने बिहार के विकास को नई दिशा दी है। टीम वर्क और जनसेवा की प्रतिबद्धता के कारण एनडीए ने यह ऐतिहासिक जीत हासिल की है। यह विजय जनता के विश्वास, लोकतांत्रिक मूल्यों और विकास के प्रति उनकी आस्था की जीत है।

बिहार के चुनाव परिणामों ने पूरे एनडीए परिवार में नए उत्साह और ऊर्जा का संचार किया है। वर्ष 2014 से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश को विकास और सुशासन की नई दिशा मिली है, जिसका असर लगातार तीन लोकसभा चुनावों और कई राज्यों में मिली जीत के रूप में दिखाई दे रहा है। हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली के बाद अब बिहार के परिणाम भी यह स्पष्ट कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा और एनडीए के प्रति जनता का भरोसा लगातार मजबूत हुआ है। जनता विपक्षी दलों और कांग्रेस की अव्यवस्थाओं से निराश होकर विकास की राह पर एनडीए का साथ दे रही है। कांग्रेस ने चुनाव से पहले ही मैदान छोड़कर अपने सहयोगी राजद को नुकसान पहुँचाया। जनता का जनादेश सर्वोपरि है। एनडीए सरकार अब एक बार फिर बिहार में विकास की नई बहार लाने के लिए पूरी तरह तैयार है। ■

इन चुनाव परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए विपक्षी दलों और विशेषकर कांग्रेस पार्टी से आग्रह करता हूँ कि वे अपने नेतृत्व की भूमिका पर फिर से विचार करें। उन्हें उन नेताओं की भूमिका पर भी विचार करना चाहिए, जिनके नेतृत्व में देश और प्रदेश में एक के बाद एक लगातार हार मिल रही है। कांग्रेस पार्टी को यह देखना चाहिए वर्तमान नेतृत्व के चलते क्यों उन्हें बार-बार हार का सामना करना पड़ रहा है। कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी को बिहार की जनता ने पूरी तरह से नकार दिया है। कांग्रेस पार्टी को आरोपों की राजनीति छोड़कर आत्मचिंतन करना चाहिए कि आखिर जनता उनसे इतनी नाराज क्यों है? हमारे लोकतांत्रिक देश में प्रत्येक दल का नेतृत्व इस प्रकार का होना चाहिए, जो लोकतंत्र को मजबूत कर सके। राहुल गांधी संवैधानिक संस्थाओं पर मिथ्या आरोप लगाकर भारत की लोकतांत्रिक गरिमा को लगातार कमजोर करने का प्रयास करते रहे हैं। ■



26 नवंबर हर भारतीय के लिए बहुत गौरवशाली दिन

प्रिय देशवासियों,
नमस्ते!

26 नवंबर
हर
भारतीय के लिए
बहुत गौरवशाली
दिन है। इसी दिन
1949 में संविधान
सभा ने भारत
के संविधान को
अंगीकार किया था।
इसलिए एक दशक
पहले, साल 2015
में NDA सरकार
ने 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में
मनाने का निर्णय लिया था।



हमारा संविधान एक ऐसा पवित्र दस्तावेज है,
जो निरंतर देश के विकास का सच्चा मार्गदर्शक
बना हुआ है। ये भारत के संविधान की ही शक्ति है
जिसने मुझे जैसे गरीब परिवार से निकले साधारण
व्यक्ति को प्रधानमंत्री के पद पर पहुंचाया है।
संविधान की वजह से मुझे 24 वर्षों से निरंतर
सरकार के मुखिया के तौर पर काम करने का
अवसर मिला है। मुझे याद है, साल 2014 में
जब मैं पहली बार संसद भवन में प्रवेश कर रहा
था, तो सीढ़ियों पर सिर झुकाकर मैंने लोकतंत्र के
सबसे बड़े मंदिर को नमन किया। साल 2019 में
जब चुनाव परिणाम के बाद मैं संसद के सेंट्रल
हॉल में गया था, तो सहज ही मैंने संविधान को
सिर माथे लगा लिया था।

संविधान दिवस पर हम डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद
समेत उन सभी महान विभूतियों का स्मरण करते
हैं, जिन्होंने भारत के संविधान के निर्माण में
अपना अहम योगदान दिया है। डॉक्टर बाबासाहेब
अम्बेडकर की भूमिका को भी हम सभी याद
करते हैं, जिन्होंने असाधारण दूरदृष्टि के साथ इस
प्रक्रिया का निरंतर मार्गदर्शन किया। संविधान सभा
में कई प्रतिष्ठित महिला सदस्य भी थीं, जिन्होंने
अपने प्रखर विचारों और दृष्टिकोण से हमारे
संविधान को समृद्ध बनाया।

साल 2010 में जब संविधान के 60 वर्ष
हुए थे, तब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था। हमने
संविधान के प्रति कृतज्ञता और निष्ठा प्रकट करने
के लिए एक प्रयास किया। 2010 के उस साल में
गुजरात में 'संविधान गौरव यात्रा' निकाली गई थी।

इस पवित्र ग्रंथ की प्रतिकृति को एक हाथी के ऊपर
रखकर मैंने उस भव्य यात्रा की अगुवाई की थी।

संविधान के 75 वर्ष पूरे हुए, तो ये हमारी
सरकार के लिए ऐतिहासिक अवसर बनकर
आया। हमें देशभर में विशेष अभियान चलाने
का सौभाग्य मिला। संविधान के 75 वर्ष होने पर
हमारी सरकार ने संसद का विशेष सत्र आयोजित
किया और राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान भी
चलाया। ये अभियान जन-भागीदारी का बड़ा
उत्सव बन गया।

इस वर्ष का संविधान दिवस कई कारणों से
विशेष है:

यह वर्ष सरदार पटेल जी और भगवान बिरसा
मुंडा जी की 150 वीं जयंती का है। सरदार पटेल
जी के नेतृत्व और सूझबूझ ने देश का राजनीतिक
एकीकरण सुनिश्चित किया। ये सरदार पटेल जी
की ही प्रेरणा है जिसने हमारी सरकार को जम्मू-
कश्मीर में आर्टिकल 370 की दीवार गिराने के
लिए प्रेरित किया। आर्टिकल 370 हटने के बाद
वहां भारत का संविधान पूरी तरह लागू हो गया
है और लोगों को संविधान प्रदत्त सभी अधिकार
मिले हैं।

भगवान बिरसा मुंडा जी का जीवन आज भी
हमें जनजातीय समुदाय के लिए न्याय, गरिमा और
सशक्तिकरण सुनिश्चित करने की प्रेरणा देता है।
इस साल हम वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने
का उत्सव भी मना रहे हैं। वंदे मातरम् हर दौर
में प्रासंगिक रहा है। इसके शब्दों में हम भारतीयों
के सामूहिक संकल्प की गूंज निरंतर सुनाई देती
रही है। इस वर्ष हम श्री गुरु तेग बहादुर जी की
शहादत के 350 वें वर्ष को भी मना रहे हैं। उनका
जीवन और शहादत की गाथा आज भी हमें प्रेरित
करती है।

इन सभी का जीवन हमें उस कर्तव्य को
सर्वोपरि रखने की प्रेरणा देता है, जिसे हमारे
संविधान ने भी सबसे अहम बताया है। हमारे
संविधान का आर्टिकल 51 मौलिक कर्तव्यों को
समर्पित है। ये कर्तव्य हमें सामाजिक और आर्थिक
प्रगति प्राप्त करने का रास्ता दिखाते हैं। महात्मा
गांधी ने हमेशा नागरिकों के कर्तव्यों पर बल दिया
था। वे मानते थे कि जब हम ईमानदारी से कर्तव्यों
का निर्वहन करते हैं, तो हमें अधिकार भी स्वतः
मिल जाते हैं।

देखते ही देखते इस सदी के 25 वर्ष पूरे हो
चुके हैं। अब आने वाला समय हमारे लिए और

भी महत्वपूर्ण है। साल 2047 तक आजादी के
100 वर्ष हो जाएंगे। साल 2049 में संविधान
निर्माण के 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। हम आज जो
नीतियां बनाएंगे, जो निर्णय लेंगे, उसका प्रभाव
आने वाले वर्षों पर...आने वाली पीढ़ियों पर
पड़ेगा। हमारे सामने विकसित भारत का लक्ष्य
है इसलिए हमें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को
सर्वोपरि रखते हुए ही आगे बढ़ना है।

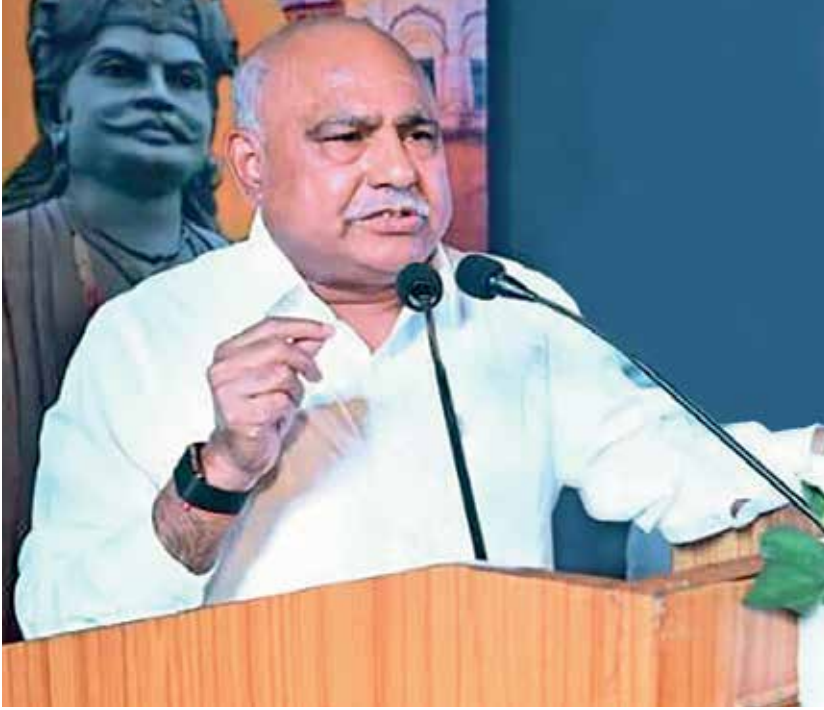
हमें राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति अपने कर्तव्यों
का निर्वाह करना होगा। देश ने हमें कितना कुछ
दिया है। इसके लिए हम सबके मन में कृतज्ञता
का भाव होना चाहिए। जब हम इस भावना से
जीवन जीते हैं, तो कर्तव्य अपने आप जीवन का
स्वभाव बन जाता है। अपना कर्तव्य पूरा करने के
लिए हमें अपने हर काम को पूरी क्षमता और पूरी
निष्ठा से करने का प्रयास करना होगा। हमारा हर
कार्य संविधान की शक्ति बढ़ाने वाला हो। हमारा
हर कार्य देशहित से जुड़े उद्देश्यों को पूरा करने
वाला हो। हमारे संविधान निर्माताओं ने जो सपने
देखे थे, उन्हें पूरा करने का दायित्व हम सबका
है। जब हम अपने काम को कर्तव्य की भावना के
साथ करेंगे तो देश की सामाजिक और आर्थिक
प्रगति कई गुना बढ़ जाएगी।

संविधान ने हमें मतदान का अधिकार दिया
है। एक नागरिक के तौर पर हमारा कर्तव्य है कि
मतदान का कोई अवसर छोड़े नहीं। हमें 26
नवंबर को स्कूलों में, कॉलेजों में उन युवाओं
के लिए विशेष सम्मान समारोह आयोजित करने
चाहिए, जो 18 वर्ष के हो रहे हैं। हमें उन्हें यह
महसूस कराना चाहिए कि वे अब केवल छात्र
या छात्रा नहीं, बल्कि नीति निर्माण की प्रक्रिया
के सक्रिय सहभागी हैं। स्कूलों में हर वर्ष 26
नवंबर को फर्स्ट-टाइम वोटर्स का सम्मान करने
की परंपरा विकसित होनी चाहिए। जब हम इस
तरह युवाओं में जिम्मेदारी और गर्व का भाव
जगाएंगे, तो वे जीवनभर लोकतंत्र के मूल्यों के
प्रति समर्पित रहेंगे। यही समर्पण एक सशक्त राष्ट्र
की नींव बनता है।

आइए, इस संविधान दिवस पर हम अपने
महान राष्ट्र के कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप
में अपने दायित्वों का पालन करने का संकल्प
दोहराएं। ऐसा करके ही हम विकसित और सशक्त
राष्ट्र के निर्माण में अपना अहम योगदान दे सकेंगे।

**आपका,
नरेन्द्र मोदी**

भारत 2030 में तीसरे नंबर की ताकत होगा- हेमंत खण्डेलवाल



हमारे देश का ज्यादातर समय सिर्फ चुनाव में बीतता है। केवल लोकसभा चुनाव में ही सरकार का करीब 60 हजार करोड़ रुपये खर्च होता है।

उम्मीदवारों और दलों का खर्च मिलाकर यह राशि 30 हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष तक पहुंच जाती है। यदि यह धन विकास, शिक्षा और रोजगार पर लगे तो भारत तेजी से आगे बढ़ेगा।

- 'वन नेशन वन इलेक्शन' आज की आवश्यकता, धन और समय बचेगा।
- दुनिया के कई देशों में एक राष्ट्र एक चुनाव की व्यवस्था है।
- युवाओं में एकता और उनके विचार का एक होना आने वाला कल सुरक्षित करेगा।
- भारत 2050 में दुनिया का नेतृत्व करेगा,

अमेरिका-चीन पीछे रहेंगे।

- भविष्य का नेतृत्व युवा करेंगे

2014 में भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था था, जो अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में चौथे स्थान पर पहुंच गया है। 2030 तक भारत, चीन और अमेरिका के बाद तीसरी सबसे बड़ी ताकत बनेगा और 2050 में दुनिया का नेतृत्व करेगा। युवा शक्ति देश का

भविष्य है। 20-25 साल बाद देश का नेतृत्व हम नहीं, आप करेंगे। इसलिए राष्ट्रहित में सोच बदलना और एकता में रहना जरूरी है।

हमारे देश का ज्यादातर समय सिर्फ चुनाव में बीतता है। केवल लोकसभा चुनाव में ही सरकार का करीब 60 हजार करोड़ रुपये खर्च होता है। उम्मीदवारों और दलों का खर्च मिलाकर यह राशि 30 हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष तक पहुंच जाती है। यदि यह धन विकास, शिक्षा और रोजगार पर लगे तो भारत तेजी से आगे बढ़ेगा।

युवाओं का ध्यान राष्ट्र के विषय पर रखना होगा अगर नहीं रखा गया तो हमारे देश की हालत ईरान, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसी हो जाएगी। आज के युवाओं को हर विषय पर सोचना पड़ेगा। युवा जब एक होंगे, उनके विचार एक होंगे तभी आने वाला समय सुरक्षित रख पायेंगे। हमारे विरोधी दल कहते हैं कि हम 'एक राष्ट्र एक चुनाव' इसलिए चाहते हैं कि लोकसभा में श्री नरेन्द्र मोदी जी की लगातार लहर रहती है। इसी कारण से विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जीत हो जाएगी और पूरे देश में उन्हीं का शासन हो जाएगा। हमारे देश का मतदाता बहुत जागरूक है। पंच, सरपंच, जनपद और जिला पंचायत में हमारे देश के जागरूक मतदाता देखकर अपने मतदान का उपयोग करते हैं। भारतीय मतदाता की बुद्धिमत्ता पर शक ना करें भारत के मतदाता जिसको जहां पहुंचाना चाहता है वहां पहुंचाकर रहता है।

आयुष्मान भारत योजना विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना है, जिसके तहत 80 प्रतिशत आबादी को 5 लाख रुपये तक का मुफ्त उपचार मिल रहा है।

जब इतनी बड़ी योजना 10 हजार करोड़ में संचालित हो सकती है, तो हमें समझना चाहिए कि चुनावों में धन की बर्बादी रोकना कितना आवश्यक है। हंगरी, जापान, स्पेन, पोलैंड, इंडोनेशिया, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, अल्बानिया और स्वीडन जैसे देशों में भी 'एक राष्ट्र- एक चुनाव' की व्यवस्था है।

युवा राष्ट्र हित में एकजुट होकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 'विकासित भारत@2047' के संकल्प को साकार करें।

“वंदे मातरम्” - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा



अमित शाह

हमारे देश के इतिहास में ऐसे कई अहम पड़ाव आए, जब गीतों, कलाओं ने अलग-अलग रूपों में लोकभावनाओं को सहेजकर आंदोलन को आकार देने में अहम भूमिका निभाई। चाहे छत्रपति शिवाजी महाराज जी की सेना के युद्धगीत हों, आजादी के आंदोलन में सेनानियों के गान या आपातकाल के विरुद्ध युवाओं के सामूहिक घोष, गीतों ने भारतीय समाज को स्वाभिमान की प्रेरणा भी दी और एकजुट भी बनाया।

ऐसे ही भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् का इतिहास किसी युद्धभूमि से नहीं, बल्कि एक विद्वान बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी के शांत लेकिन अडिग संकल्प से शुरू होता है। सन् 1875 में, जगद्धात्री पूजा (कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी) के दिन, उन्होंने उस स्तोत्र की रचना की जो भारत की स्वतंत्रता का शाश्वत गीत बन गया। इन पवित्र शब्दों को लिखते हुए, वे भारत की गहनतम सभ्यतागत जड़ों से प्रेरणा ले रहे थे। अथर्ववेद के उद्घोष “माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः” से लेकर देवी महात्म्य में विश्वमाता के आह्वान से प्रेरणा ले रहे थे।

बंकिम बाबू का यह मंत्र, प्रार्थना भी था और भविष्यवाणी भी। वन्दे मातरम् केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, सिर्फ स्वतंत्रता आन्दोलन का प्राण ही नहीं बल्कि यह बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जी द्वारा की गई ‘सांस्कृतिक राष्ट्रवाद’ की प्रथम उद्घोषणा है। इसने हमें याद दिलाया कि भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि एक भू-सांस्कृतिक राष्ट्र है - जिसकी एकता उसकी संस्कृति और सभ्यता से आती है। यह केवल भू-भाग नहीं है, बल्कि तीर्थ है, स्मृति, त्याग, शौर्य और मातृत्व से बंधी पवित्र भूमि है।

जैसा कि महर्षि अरविंद ने वर्णन किया, बंकिम आधुनिक भारत के एक ऋषि थे, जिन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से राष्ट्र

की आत्मा को पुनर्जीवित किया। उनका ‘आनंदमठ’ केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि गद्य में एक मंत्र था, जिसने एक ऐसे राष्ट्र को जागृत किया जो अपनी दिव्य शक्ति को भूल चुका था। अपने एक पत्र में, बंकिम बाबू ने लिखा: “मुझे कोई आपत्ति नहीं है यदि मेरे सभी कार्य गंगा में बहा दिए जाएँ। यह मंत्र (वंदे मातरम्) ही अनंत काल तक जीवित रहेगा। यह एक महान गान होगा और लोगों के हृदय को जीत लेगा।” ये शब्द भविष्य सूचक थे। औपनिवेशिक भारत के सबसे अंधकारमय काल में लिखा गया, वंदे मातरम् जागृति का प्रभात-गीत बन गया, एक ऐसा भजन जिसने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को सभ्यतागत गौरव के साथ जोड़ दिया। ऐसी पंक्तियाँ केवल वही व्यक्ति लिख सकता था जिसके रोम-रोम में राष्ट्र के प्रति भक्तिभाव कूट-कूट कर भरा हो।

1896 में, गुरुदेव रवींद्र नाथ ठाकुर जी ने वंदे मातरम् को धुन में पिरोया और कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में इसे गाया, जिससे इसे वाणी और अमरता प्राप्त हुई। यह गीत भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से आगे बढ़कर पूरे देश में गूंज उठा। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल अनुवाद किया, और पंजाब में क्रांतिकारियों ने इसे गाते हुए ब्रिटिश राज को खुली चुनौती दी।

1905 में, बंग-भंग आंदोलन के दौरान, बंगाल में विद्रोह भड़क उठा। अंग्रेजों ने वंदे मातरम् के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगा दिया था, फिर भी, बारीसाल में 14 अप्रैल, 1906 को, हजारों लोगों ने इस आदेश की अवहेलना की। जब पुलिस ने शांतिपूर्ण सभा पर लाठीचार्ज किया, तो पुरुष और महिलाएँ सड़कों पर वंदे मातरम् का नारा लगाते हुए लहलुहान हो गए।

वहीं से, वंदे मातरम् का मंत्र, गदर पार्टी के क्रांतिकारियों के साथ कैलिफोर्निया पहुँच गया, आजाद हिंद फौज में गूँजा, जब नेताजी के सैनिक सिंगापुर से मार्च कर रहे थे और 1946 के रॉयल इंडियन नेवी की क्रांति में भी गूँजा, जब भारतीय नाविकों ने ब्रिटिश युद्धपोतों पर तिरंगा फहराया। खुदीराम बोस से लेकर अशाफाकउल्ला खान तक, चंद्रशेखर आजाद से लेकर तिरुपुर कुमारन तक, नारा एक ही था।

यह अब सिर्फ एक गीत नहीं रहा, यह भारत की सामूहिक आत्मा की आवाज बन गया था। महात्मा गांधी ने स्वयं स्वीकार किया था, वंदे मातरम् में सबसे सुस्त रक्त को भी जगाने की जादुई शक्ति थी। इस मंत्र ने उदारवादियों और क्रांतिकारियों तथा विद्वानों और नाविकों तक को एकजुट किया। महर्षि अरविंद जी ने इसीलिए कहा था कि, यह भारत के पुनर्जन्म का मंत्र है।

26 अक्टूबर को ‘मन की बात’ कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वंदे मातरम् गीत के इस इतिहास की देशवासियों को फिर से याद दिलाई। राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर से भारत सरकार की ओर से अगले एक वर्ष तक अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन करने का निर्णय लिया है। इन आयोजनों के माध्यम से देश भर में वंदे मातरम् का पूर्ण गान होगा, जिससे देश की युवा पीढ़ी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार को आत्मसात कर पाए।

आज जब हम भारत पर्व मना रहे हैं और सरदार पटेल की जयंती पर उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण कर रहे हैं, तो यह भी याद करते हैं कि कैसे सरदार साहब ने एक भारत का निर्माण कर वंदे मातरम् की भावना को ही मूर्त रूप दिया था।

यह गीत केवल अतीत का स्मरण मात्र नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक आह्वान भी है। वंदे मातरम् आज भी विकसित भारत 2047 के हमारे संकल्प में प्रेरणा दे रहा है। यह भारत के सभ्यतागत आत्मविश्वास का प्रतीक है। अब, इस भावना को आत्मनिर्भर और श्रेष्ठ भारत में परिवर्तित करना हमारी जिम्मेदारी है।

वंदे मातरम् स्वतंत्रता का गीत है, अटूट संकल्प की भावना है, और भारत के जागरण का प्रथम मंत्र है। राष्ट्र की आत्मा से जन्मे शब्द कभी समाप्त नहीं होते- वे सदैव जीवित रहते हैं, पीढ़ियों तक गूंजते रहते हैं।

यह जयघोष युगों और पीढ़ियों में अनंतकाल तक प्रतिध्वनित होता रहेगा। समय आ गया है कि हम अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी मान्यताओं और अपनी परंपराओं को भारतीयता की दृष्टि से देखें।

वंदे मातरम्! ■



सभी निवेशकों का स्वागत है मध्यप्रदेश में-मुख्यमंत्री डॉ. यादव



मध्यप्रदेश में अनेक क्षेत्रों में निवेश की विद्यमान संभावनाओं को साकार करने के लिए सभी मिलकर कार्य करेंगे। मध्यप्रदेश की प्रोत्साहनकारी निवेश नीतियों से निरंतर निवेश आ रहा है। आज सभी के संयुक्त प्रयासों से अपने प्रदेश के साथ संपूर्ण देश की प्रगति का विचार रखते हुए क्रियान्वयन की राह पर आगे बढ़ना है। मध्यप्रदेश सरकार की 18 नवीन निवेश नीतियाँ निवेशकों को आकर्षित कर रही हैं। निवेशकों के लिये आवश्यक हुआ तो इन नीतियों की परिधि के बाहर जाकर भी उद्योगपतियों को हरसंभव सहयोग प्रदान किया जायेगा। मध्यप्रदेश सरकार पलक-पांवड़े बिछाकर सभी निवेशकों का स्वागत कर रही है। हैदराबाद में अनेक उद्योगपतियों ने मध्यप्रदेश में निवेश की इच्छा जताई है। इसमें 36 हजार 600 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए जिससे लगभग 27 हजार 800 रोजगार सृजित होने की संभावना है।

ऐसे इंटरैक्टिव सेशन मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास की बहुआयामी संभावनाओं को बताने और निवेश के लिए आमंत्रित करने का माध्यम बने हैं। यह क्रम चलता रहेगा।

मध्यप्रदेश देश का एक मात्र राज्य है, जहां हीरा निकलता है। तेलंगाना राज्य में मोती निकलते हैं। इस प्रकार से हमारी जोड़ी हीरा-मोती की तरह है। हैदराबाद के लोग मोती की पहचान कर लेते हैं, उनके लिए आदमी पहचानना तो बहुत आसान है। हैदराबाद एक ऐसा शहर है, जो भविष्य को भांप कर आगे बढ़ता है। इसका अर्थ यह है कि हैदराबाद आने वाले समय का

अनुमान लगाने में सक्षम है। यहां निवेशकों के साथ एक नई डोर जोड़ने के लिए आए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया में अपनी अलग पहचान बना चुका है। देश ने कई मिथकों को तोड़कर अंतरिक्ष सहित सभी क्षेत्रों में विकास की तेज गति हासिल की है। भारत अब रेल कोच भी निर्यात करने की स्थिति में है। मध्यप्रदेश में बीईएमएल को 18 हजार करोड़ लागत की रेल कोच निर्माण की यूनिट लगाने के लिए भूमि आवंटित की गई है। प्रदेश में डिफेंस टेक्नोलॉजी में बड़ा निवेश हो रहा है। राज्य में सभी क्षेत्रों के निवेशकों को आगे बढ़ने का अवसर दिया जा रहा है।

हाईड्रो पॉवर पंप स्टोरेज का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट नीमच में चंबल नदी पर बनाया जा रहा है, जिसका निर्माण आगामी 2 वर्ष में पूर्ण हो जाएगा। यह एक बड़ा प्रकल्प है। मध्यप्रदेश सरकार निवेशकों से किए हर संकल्प को पूरा कर रही है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में राज्यों के बीच साहचर्य की भावना विकसित हो रही है। मध्यप्रदेश नदियों का मायका है और हमारे पास पर्याप्त जल उपलब्ध है। मध्यप्रदेश सरकार ने राजस्थान के साथ चल रहे सालों पुराने जल विवाद को खत्म कर पार्वती-कालीसिंध-चंबल (पीकेसी) परियोजना को आगे बढ़ाया है। इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए केन्द्र सरकार 90 प्रतिशत राशि प्रदान कर रही है। आज का समय स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ने और प्रदेश को आगे बढ़ाने का है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में अब देश बदल रहा है। राज्य सरकार उद्योगपतियों और निवेशकों को मध्यप्रदेश में भी अपना कार्य शुरू करने का अवसर दे रही है। उद्योग-व्यापार बढ़ने से गरीबों और जरूरतमंदों को रोजगार मिलता है।

उद्योगपतियों से वन-टू-वन चर्चा के दौरान 10 कम्पनियों द्वारा 36 हजार 600 करोड़ के निवेश प्रस्ताव दिए गए। इससे लगभग 27 हजार 800 रोजगार सृजित होंगे। प्रमुख निवेश प्रस्ताव में एजीआई ग्रीनपैक कम्पनी द्वारा पैकेजिंग इंजीनियरिंग सेक्टर में 1500 करोड़ रुपये, एक्सिस एनर्जी वेंचर्स इंडिया कम्पनी द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा सेक्टर में 29 हजार 500 करोड़ रुपये, अनंत टेक्नालॉजीज कम्पनी द्वारा एयरो स्पेस सेक्टर में एक हजार करोड़, ऑटोमेटेस्की सॉल्यूशंस कम्पनी द्वारा आईटी सेक्टर में एक हजार करोड़, कोलाबेरी इंक कम्पनी द्वारा फार्मा एण्ड ट्रेडिंग सेक्टर में एक हजार करोड़ रुपये, डर्माक्योर फार्मास्यूटिकल्स कम्पनी द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा एवं आईटी सेक्टर में 150 करोड़ रुपये, विंडपोनिक्स इण्डिया कम्पनी द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा एवं कृषि सेक्टर में 280 करोड़ रुपये, विंटेज कॉफी एण्ड बेवरेजेस लिमिटेड कम्पनी द्वारा फूड प्रोसेसिंग सेक्टर में 1100 करोड़ रुपये, विश्वनाथ प्रोजेक्ट्स लिमिटेड कम्पनी द्वारा अधोसंरचना सेक्टर में 350 करोड़ रुपये और वुमेनोवा एग्रो फूड पार्क प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी द्वारा फूड प्रोसेसिंग सेक्टर में 720 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्ताव दिया गया।

ग्रीनको ने पिछले 10 वर्षों में मध्यप्रदेश में 12 हजार करोड़ रुपये से अधिक का निवेश से 3 हजार मेगावॉट क्षमता वाले नवीकरणीय ऊर्जा प्रोजेक्ट स्थापित किए हैं। आने वाले पाँच वर्षों में 25 हजार करोड़ रुपये के निवेश की योजना भी तैयार है, जो मध्यप्रदेश के प्रति उनके विश्वास को दर्शाता है। नीमच में 1,900 मेगावॉट का हाइड्रो स्टोरेज प्रोजेक्ट किसी भी अन्य देश में 8 से 10 वर्ष में पूरा होता, जबकि मध्यप्रदेश में यह 3 वर्षों से भी कम समय में पूरा हुआ है। पहला प्रोजेक्ट 4 से 5 वर्ष में पूरा हुआ था, लेकिन मौजूदा प्रोजेक्ट की तेज प्रगति यह साबित करती है कि नीति स्पष्टता, प्रशासनिक सहयोग और राज्य सरकार की प्रतिबद्धता ने विकास को अभूतपूर्व गति दी है। ■



आदिवासी कल्याण भाजपा की सर्वोच्च प्राथमिकता



जनजातीय गौरव हजारों वर्षों से हमारे भारत की चेतना का अभिन्न हिस्सा रहा है। जब-जब देश के सम्मान, स्वाभिमान और स्वराज की बात आई, तो हमारा आदिवासी समाज सबसे आगे खड़ा हुआ। हमारा स्वतन्त्रता संग्राम इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। आदिवासी समाज से निकले कितने ही नायक-नायिकाओं ने आजादी की मशाल को आगे बढ़ाया।

2021 में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को, जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। जनजातीय गौरव हजारों वर्षों से हमारे भारत की चेतना का अभिन्न हिस्सा रहा है। जब-जब देश के सम्मान, स्वाभिमान और स्वराज की बात आई, तो हमारा आदिवासी समाज सबसे आगे खड़ा हुआ। हमारा स्वतन्त्रता संग्राम इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। आदिवासी समाज से निकले कितने ही नायक-नायिकाओं ने आजादी की मशाल को आगे बढ़ाया। तिलका मांझी, रानी गाईदिनल्यू, सिधो-कान्हो, भैरव मुर्मू, बुद्धो भगत, जनजातीय समाज को प्रेरणा देने वाले अल्लूरी सीताराम राजू, इसी तरह, मध्यप्रदेश के तांत्या भील, छत्तीसगढ़ के वीर नारायण सिंह,

झारखंड के तेलंगा खड़िया, असम के रूपचंद कोंवर, और ओडिशा के लक्ष्मण नायक, ऐसे कितने ही वीरों ने आजादी के लिए अपार त्याग किया, संघर्ष किया, जीवन भर अंग्रेजों को चैन से बैठने नहीं दिया। आदिवासी समाज ने अनगिनत क्रांतियाँ कीं, आजादी के लिए अपना लहू बहाया।

गुजरात में भी जनजातीय समाज के ऐसे कितने ही शूरवीर देशभक्त हैं, गोविन्द गुरू, जिन्होंने भगत आंदोलन का नेतृत्व किया, राजा रूपसिंह नायक, जिन्होंने पंचमहाल में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी! मोतीलाल तेजावत, जिन्होंने एकी आंदोलन चलाया, और अगर आप पाल चितरिया जाएंगे तो सैकड़ों आदिवासियों की शहादत का वहां स्मारक है,

जलियाँवाला बाग जैसी वो घटना, साबरकांठा के पाल चितरिया में हुई थी। हमारी दशरीबेन चौधरी, जिन्होंने गांधीजी के सिद्धांतों को आदिवासी समाज तक पहुंचाया। स्वतन्त्रता संग्राम के ऐसे कितने ही अध्याय जनजातीय गौरव और आदिवासी शौर्य से रंगे हुये हैं।

स्वतन्त्रता आंदोलन में ट्राइबल समाज के योगदान को हम भुला नहीं सकते हैं, और आजादी के बाद ये काम होना चाहिए था, लेकिन कुछ ही परिवारों को आजादी का श्रेय देने के मोह में, लक्ष्यावादी आदिवासी भाई-बहनों की त्याग, तपस्या, बलिदान को नकार दिया गया, और इसलिए 2014 के पहले देश में कोई भगवान बिरसा मुंडा को याद करने वाला नहीं था, सिर्फ उनके अगल-बगल के गांव तक पूछा जाता था। हमने उस परिस्थिति को बदला क्यों, हमारी अगली पीढ़ी को भी पता होना चाहिए, कि आदिवासी भाई-बहनों ने हमें कितना बड़ा तोहफा दिया है, आजादी दिलवाई है। और इसी काम को जिंदा करने के लिए, आने वाली पीढ़ी को स्मरण रहे, इसलिए देश में कई ट्राइबल म्यूजियम्स बनाए जा रहे हैं।

श्री गोविंद गुरू, उनके नाम से एक चेयर जनजातीय भाषा संवर्धन केंद्र के रूप में उसकी स्थापना की गई है। यहां भील, गामित, वसावा, गरसिया, कोकणी, संथाल, राठवा, नायक, डबला, चौधरी, कोकना, कुंभी, वली, डोडिया, ऐसी सभी जनजातियों की, उनकी बोलियों पर अध्ययन होगा। उनसे जुड़ी कहानियों और गीतों को संरक्षित किया जाएगा। जनजातीय समाज के पास हजारों वर्षों के अनुभवों से सीखा हुआ ज्ञान का अपार भंडार है। उनकी जीवन-शैली में विज्ञान छिपा है, उनकी कहानियों में दर्शन है, उनकी भाषा में पर्यावरण की समझ है। श्री गोविंद गुरू चेयर इस समृद्ध परंपरा से नई पीढ़ी को जोड़ने का काम करेगी।

जनजातीय गौरव दिवस, हमें उस अन्याय को भी याद करने का अवसर देता है, जो हमारे करोड़ों आदिवासी भाई-बहनों के साथ किया गया। देश में 6 दशक तक राज करने वाली कांग्रेस ने आदिवासियों को उनके हाल पर छोड़ दिया था। आदिवासी इलाकों में कुपोषण की समस्या थी, स्वास्थ्य सुरक्षा की समस्या थी, शिक्षा का अभाव था, कनेक्टिविटी का तो



नामो-निशान नहीं था। ये अभाव ही एक प्रकार से आदिवासी क्षेत्रों की पहचान बन गई थी। और कांग्रेस सरकारें हाथ पर हाथ धरकर बैठी रहीं।

आदिवासी कल्याण भाजपा की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। हम हमेशा इस संकल्प को लेकर चले, कि हम आदिवासियों के साथ हो रहे अन्याय को समाप्त करेंगे, उन तक विकास का लाभ पहुंचाएंगे। देश आजाद तो 1947 में हो गया था। आदिवासी समाज तो भगवान राम के साथ भी जुड़ा हुआ है, इतना पुराना है। लेकिन छह-छह दशक तक राज करने वालों को पता ही नहीं था, कि इतने बड़े आदिवासी समाज के विकास के लिए कुछ करने की जरूरत है।

जब पहली बार अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बनें, भाजपा की सरकार बनी, तब देश में पहली बार जनजातीय समाज के लिए एक अलग मंत्रालय का गठन किया था, उसके पहले नहीं किया गया। लेकिन अटल जी की सरकार के बाद, दस साल जो कांग्रेस को फिर से काम करने का मौका मिला, तो उन्होंने इस मंत्रालय की उपेक्षा की, पूरी तरह भुला दिया गया। 2013 में कांग्रेस ने जनजातीय कल्याण के लिए कुछ हजार करोड़ रुपए की योजना बनाई, कुछ हजार करोड़ रुपये, एक जिले में एक हजार करोड़ रुपये से काम नहीं होता है। हमारी सरकार आने के बाद हमने बहुत बड़ी वृद्धि की, उसके हितों की चिंता की, हमने मंत्रालय के बजट को बढ़ाया। और, आज जनजातीय मंत्रालय का बजट अनेक गुणा बढ़ाकर के हमने आज जनजातीय क्षेत्रों के विकास का बीड़ा उठाया है। शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, कनेक्टिविटी हो, हर क्षेत्र में हम आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

आदिवासी बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए हम दिन रात काम कर रहे हैं। बीते 5-6 वर्षों में ही केंद्र सरकार ने, देश में एकलव्य मॉडल आदिवासी स्कूलों के लिए 18 हजार करोड़ से ज्यादा रुपए खर्च किए हैं। छात्राओं के लिए स्कूल में जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इसका नतीजा ये है, कि इन स्कूलों में एडमिशन लेने वाले ट्राइबल बच्चों की संख्या में 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

आदिवासी युवाओं को जब अवसर मिलते हैं, तो वो हर क्षेत्र में बुलंदी को छूने की ताकत रखते हैं। उनकी हिम्मत, उनकी मेहनत और उनकी काबिलियत, ये उन्हें परंपरा से मिले हुए, विरासत में मिले होते हैं। आज खेल जगत का उदाहरण सबके सामने है, दुनिया में तिरंगे की शान बढ़ाने में आदिवासी बेटे-बेटियों ने बहुत बड़ा योगदान दिया है! अभी तक हम सब मैरी कॉम, थोनाकल गोपी, दुतिचंद और बाईचुंग भूटिया जैसे खिलाड़ियों के नाम जानते थे। अब

हर बड़ी प्रतियोगिता में ट्राइबल इलाकों से ऐसे ही नए नए खिलाड़ी निकल रहे हैं। अभी भारत की क्रिकेट टीम ने वुमेन वर्ल्ड कप जीतकर इतिहास रचा है। उसमें भी हमारी एक जनजातीय समाज की बेटी ने अहम भूमिका निभाई है। हमारी सरकार आदिवासी इलाकों में, नई प्रतिभाओं को तलाशने और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए लगातार काम कर रही है। जनजातीय क्षेत्रों में स्पोर्ट्स फैसिलिटीज को भी बढ़ाया जा रहा है।

सरकार वंचित को वरीयता के विजन पर काम करती है। केंद्र सरकार की कई योजनाओं को, आदिवासी बहुल राज्यों और वंचित वर्गों के बीच जाकर ही लॉच करते हैं। 2018 में मुफ्त इलाज के लिए आयुष्मान भारत योजना लॉच हुई थी। ये योजना झारखंड के आदिवासी इलाके में रांची में जाकर के शुरू हुई थी। और, आज देश के करोड़ों आदिवासी भाई-बहनों को इसके तहत 5 लाख तक मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही है। सरकार ने आयुष्मान आरोग्य मंदिर की शुरुआत भी आदिवासी बहुल छत्तीसगढ़ से की थी। इसका भी बहुत बड़ा लाभ जनजातीय वर्ग को मिल रहा है।

आदिवासियों में भी जो सबसे पिछड़े आदिवासी हैं, हमारी सरकार उन्हें विशेष प्राथमिकता दे रही है। जिन क्षेत्रों में आजादी के इतने दशक बाद भी, जहां ना बिजली थी, ना पानी पहुंचाने की व्यवस्था थी, ना सड़क थी, ना अस्पताल की सुविधा थी, इन इलाकों के विकास का विशेष अभियान चलाने के लिए हमने झारखंड के खूंटी से पीएम जनमन योजना शुरू की थी। भगवान बिरसा मुंडा के गांव में गया था। उस मिट्टी को माथे पर चढ़ाकर के, मैंने आदिवासियों के कल्याण के संकल्प लेकर के निकला हुआ इंसान हूं। और देश का मैं पहला प्रधानमंत्री था, जो भगवान बिरसा मुंडा के घर गया था और आज भी भगवान बिरसा मुंडा के परिवारजनों के साथ मेरा उतना ही गहरा नाता रहा है। पीएम जनमन योजना पर 24 हजार करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान भी पिछड़े आदिवासी गांवों के विकास की नई गाथा लिख रहा है। देशभर में अब तक 60 हजार से अधिक गांव इस अभियान से जुड़ चुके हैं। इनमें से हजारों गांव ऐसे हैं, जहां पहली बार पीने का पानी पाइप लाइन से पहुंचा है। और सैकड़ों गांवों में टेली-मैडिसिन की सुविधा शुरू हुई है। इस अभियान के तहत ग्राम सभाओं को विकास की धुरी बनाया गया है। गांवों में स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, कृषि और आजीविका पर सामुदायिक योजनाएं तैयार हो रही हैं। ये अभियान दिखाता है कि अगर कुछ ठान लिया

जाए, तो हर असंभव लक्ष्य भी संभव बन जाता है।

सरकार आदिवासियों के जीवन से जुड़े हर पहलू को ध्यान में रखकर काम कर रही है। हमने वन-उपज की संख्या को 20 से बढ़ाकर करीब 100 किया है, वन उपज पर MSP बढ़ाई। हमारी सरकार मोटे अनाज, श्रीअन्न को खूब बढ़ावा दे रही है, जिसका फायदा आदिवासी क्षेत्रों में खेती करने वाले हमारे आदिवासी भाई-बहनों को मिल रहा है। इससे एक नई आर्थिक मजबूती मिली।

आदिवासी समुदायों में सिकिल सेल, ये बीमारी एक बहुत बड़ा खतरा रही है। इससे निपटने के लिए जनजातीय इलाकों में डिस्पेंसरी, मेडिकल सेंटर और हॉस्पिटल की संख्या बढ़ाई गई है। सिकिल सेल बीमारी से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चल रहा है। इसके तहत देश में 6 करोड़ आदिवासी भाई-बहनों की स्क्रीनिंग हो चुकी है।

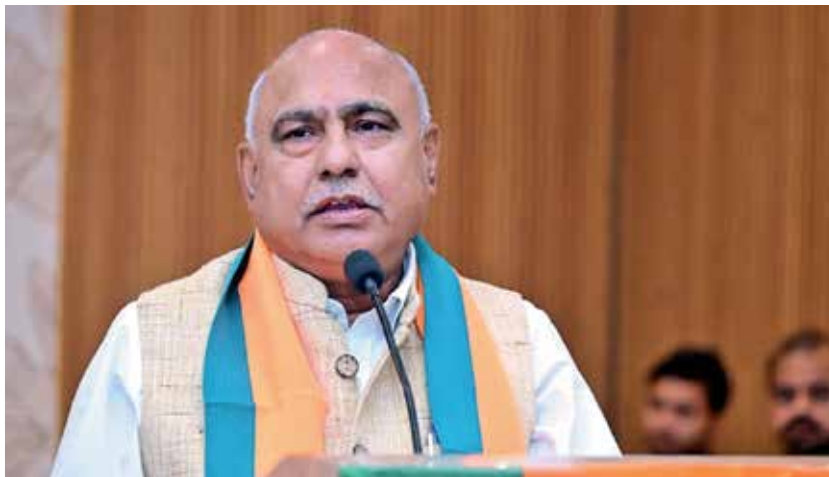
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत स्थानीय भाषा में पढ़ाई की सुविधा भी दी जा रही है। आदिवासी समाज के जो बच्चे केवल भाषा के कारण पिछड़ जाते थे, वो अब स्थानीय भाषा में पढ़ाई करके खुद भी आगे बढ़ रहे हैं, और देश की तरक्की में अपना ज्यादा से ज्यादा योगदान दे रहे हैं।

किसी भी समाज की प्रगति के लिए लोकतन्त्र में उसकी सही भागीदारी भी उतनी ही जरूरी होती है। इसीलिए, हमारा ध्येय है, जनजातीय समाज के हमारे भाई-बहनों को, देश के बड़े पदों पर भी पहुंचे, देश का नेतृत्व करें। आज देश की राष्ट्रपति एक आदिवासी महिला हैं। इसी तरह, बीजेपी ने, NDA ने हमेशा आदिवासी समाज के हमारे होनहार साथियों को शीर्ष पदों पर पहुंचाने का प्रयास किया है।

इन सभी नेताओं ने देश की जो सेवा की है, देश के विकास में जो योगदान दिया है, वो अतुलनीय है, अभूतपूर्व है।

आज देश के पास 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र की ताकत है। इसी मंत्र ने बीते वर्षों में करोड़ों लोगों का जीवन बदला है। इसी मंत्र ने देश की एकता को मजबूती दी है। और, इसी मंत्र ने दशकों से उपेक्षित जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोड़ा है, इतना ही नहीं संपूर्ण समाज का नेतृत्व हो रहा है। इसलिए, भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के पावन पर्व पर हमें 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र को मजबूत करने की शपथ लेनी है। ना विकास में कोई पीछे रहे, ना विकास में कोई पीछे छूटे। यही धरती आबा के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि है। हम सब एक साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे, और विकसित भारत के सपने को पूरा करेंगे। ■

एसआईआर को दें सर्वोच्च प्राथमिकता - हेमंत खण्डेलवाल



- संगठन की शक्ति और 2028 की जीत, दोनों का आधार है एसआईआर।
- मतदाता सूची की एक गलती बदल सकती है परिणाम।
- एसआईआर प्रक्रिया हमारे लिए भविष्य की चुनावी सफलता की कुंजी।
- हमें तत्परता, सक्रियता और समन्वय के साथ चुनाव आयोग का सहयोग करना है।

एसआईआर की प्रक्रिया देश के 12 राज्यों में शुरू कर दी गई है, जिनमें देश की आधी से अधिक आबादी रहती है। यह प्रक्रिया दो-तीन माह चलेगी। चुनाव आयोग की इस शुद्धिकरण प्रक्रिया में हमें पूर्ण सहयोग करना है, ताकि आगामी चुनाव प्रक्रिया पारदर्शिता और सुचारु रूप से संपन्न हो सके। इस अभियान का उद्देश्य मतदाता सूची को सुव्यवस्थित और त्रुटिरहित बनाना है, ताकि कोई भी योग्य नागरिक मतदान के अधिकार से वंचित न रहे। यह किसी के खिलाफ नहीं है। इसका उद्देश्य किसी वैध मतदाता को मताधिकार से वंचित करना नहीं, बल्कि मतदाता सूची को सही और निष्पक्ष बनाना है। मतदाता सूची में घुसपैठियों का नाम शामिल होना संविधान की भावना के विरुद्ध है। इस प्रक्रिया का मकसद ऐसे छद्म मतदाताओं की पहचान करना है, जिन्होंने अवैध तरीके से

मतदाता पहचान पत्र प्राप्त किए हैं या भारत में अवैध रूप से प्रवेश कर मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास किया है।

एसआईआर की इस प्रक्रिया को हमारा केंद्रीय नेतृत्व अत्यंत गंभीरता से ले रहा है और इसे लेकर अनेक बैठकें हो चुकी हैं। केंद्रीय नेतृत्व की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए सभी को मिलकर इस काम में जुटना होगा। मतदाता सूची में जिन लोगों के नाम नहीं हैं, वो हमें जुड़वाना है। एसआईआर भविष्य में होने वाले चुनावों और पूरी राजनीति को प्रभावित करने वाला विषय है, इसलिए हमें पूरी गंभीरता के साथ इस काम में जुट जाना है। विपक्ष की आपत्ति निराधार है। एसआईआर मतदाता सूची की त्रुटियां सुधारना और नए मतदाताओं को जोड़ने की प्रक्रिया है। कांग्रेस की सरकारों में भी इस तरह की प्रक्रिया समय-समय पर अपनाई जाती थी, इस पर विपक्ष को आपत्ति नहीं होना चाहिए। एसआईआर से लोकतंत्र की मूल भावना मजबूत होगी अगर विपक्ष इसका विरोध कर रहा है तो वह लोकतंत्र की भावना के विरुद्ध है।

मध्यप्रदेश की तासीर ही ऐसी है कि यहाँ भाजपा का काम हर क्षेत्र में उत्कृष्ट रहता है और संगठन हर चुनौती को अवसर में बदलने की क्षमता रखता है। एसआईआर कोई साधारण या एक दल से संबंधित प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वर्ष 2028 के चुनाव में भाजपा की जीत और हार को निर्णायक रूप से प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। वर्ष 2028 की चुनावी सफलता के लिए जितनी अधिक गंभीरता अभी

दिखाई जाएगी, सफलता उतनी ही सुनिश्चित होगी। इसलिए एसआईआर को पूर्ण समर्पण, एकजुटता और युद्धस्तर की तत्परता के साथ लागू करना होगा। यदि भाजपा इस प्रक्रिया को केवल औपचारिकता मानकर चलेगी, तो आने वाले समय में चुनाव हमारे लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति पैदा कर सकते हैं। लोकसभा और विधानसभा दोनों ही चुनावों में भाजपा के लिए सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण वे दो संभाग हैं, जहाँ पिछले वर्षों में बेहद कम मतों के अंतर से जीत-हार तय हुई थी। ऐसे संवेदनशील क्षेत्रों में मतदाता सूची की शुद्धता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। वर्ष 2003 के पहले हुए परिसीमन के बाद वर्तमान मतदाता सूचियों में जिन नामों का पुनर्वितरण हुआ, उनकी सटीकता, सत्यता और अद्यतन स्थिति सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। यदि मतदाता सूची में एक भी त्रुटि रहती है तो उसका सीधा प्रभाव विधानसभा क्षेत्रों के परिणामों पर पड़ सकता है।

विधायकगण अपने-अपने क्षेत्रों में निरंतर उपस्थिति बनाए रखें, बूथ स्तर तक निगरानी रखें और एसआईआर की प्रगति पर नियमित बैठकें आयोजित करें। यह सिर्फ एक प्रशासनिक कार्य नहीं, बल्कि संगठन की सामूहिक जिम्मेदारी है जो भविष्य की चुनावी जीत को तय करेगी। किसी भी कार्यकर्ता को यदि एसआईआर प्रक्रिया में कोई समस्या आए, चाहे वह तकनीकी हो, समन्वय से संबंधित हो या प्रशासनिक, तो वे तुरंत अपने संभाग प्रभारी से संपर्क करें। समस्या निवारण और मार्गदर्शन के लिए पार्टी की पूरी व्यवस्था कार्यकर्ताओं के साथ खड़ी है। बीएलए की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रत्येक बीएलए-1 अपने क्षेत्र के बीएलए-2 के साथ लगातार संवाद में रहे, बूथ-दर-बूथ समीक्षा करें और आवश्यक दस्तावेजों की सत्यता की जाँच करें। दोनों मिलकर निष्ठा, ईमानदारी और पूरी जिम्मेदारी के साथ कार्य करें ताकि एसआईआर को अपेक्षित सफलता मिल सके। यह प्रक्रिया भाजपा की संगठनात्मक शक्ति का आधार है। एसआईआर केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि भाजपा की भविष्य की जीत, बूथ मजबूती, पारदर्शिता और मतदाता विश्वास का असली स्तंभ है। मिशन मोड में आकर कार्य करें और यह सुनिश्चित करें कि मध्यप्रदेश 2028 के चुनाव में भी प्रचंड बहुमत के साथ भाजपा का परचम लहराए। ■



मोदी जी के नेतृत्व में जनजातीय गौरव की पुर्नस्थापना - डॉ. यादव

- जनजातीय गौरव दिवस हमारे लिए दीवाली और होली की तरह।
- भगवान बिरसा मुंडा और शहीद छीतु किराड़ की प्रतिमा के अनावरण का अवसर मिलना सौभाग्य।
- भगवान बिरसा मुंडा ने अपनी संस्कृति और गौमाता की रक्षा करते हुए आजादी की लड़ी लड़ाई।
- राजा आलिया के नाम पर आलीराजपुर होने से मिली जिले को उचित पहचान।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में देशभर में विगत पांच सालों से भगवान बिरसा मुंडा की जयंती धूमधाम से मनाई जा रही है। अंग्रेजी शासन के कानूनों, कर-वसूली और जंगल पर कब्जे के खिलाफ जनजातीय समाज ने अपने तरीके से स्वराज का ध्वज उठाया और मध्यप्रदेश लंबे समय तक अंग्रेजों के लिए सबसे कठिन क्षेत्र बन गया था। देश में सबसे अधिक जनजातीय आबादी मध्यप्रदेश में है। रानी दुर्गावती ने 500 वर्ष पहले मुगलों के खिलाफ सम्मान, स्वाभिमान और राष्ट्र गौरव के लिये लड़ाई लड़ी। इसके साथ ही हमारे कई जनजातीय नायकों- टंट्या मामा, खाज्या नायक, भीमा नायक, शंकर शाह, रघुनाथ शाह, छितु किराड़ ने अपनी जल, जंगल और जमीन के लिए अंग्रेजों से संघर्ष किया। भगवान बिरसा मुंडा ने अपनी संस्कृति और गौमाता की रक्षा करते हुए आजादी की लड़ाई लड़ी और मात्र 25 साल की अल्पायु में भारत माता की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में प्रदेश के बड़वानी, आलीराजपुर और जबलपुर में जनजातीय वर्ग के लिए विशेष आयोजन हुए। स्वाधीनता का दीया सबसे पहले मध्यप्रदेश की पावन धरती से ही प्रज्वलित हुआ था और इसे हमारे जनजातीय वीरों ने रौशन रखा। मध्यप्रदेश में नमक सत्याग्रह ने ही जंगल सत्याग्रह की नींव रखी। सिवनी के जंगलों में हुआ 'दुरिया सत्याग्रह' जनजातीय वीरों और वीरांगनाओं के शौर्य और साहस का

जीवंत प्रमाण है।

जबलपुर की धरती पर गोंडवाना के शहीद शंकर शाह और रघुनाथ शाह ने देशभक्ति की सबसे बड़ी मिसाल पेश की। निमाड़ की पावन धरती पर भील योद्धा भीमा नायक ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। खंडवा-बुरहानपुर के टंट्या भील ने अंग्रेजी राज की कमर तोड़ दी। झाबुआ-आलीराजपुर में खाज्या नायक ने क्रांतिवीरों को संगठित कर अंग्रेजों को खुली चुनौती दी। भोपाल की रानी कमलापति ने विदेशी ताकतों के आगे झुकने के बजाय स्वाभिमान का रास्ता चुना। मंडला-जबलपुर की अमर वीरांगना महारानी दुर्गावती विदेशी शासन के विरुद्ध जनजातीय प्रतिरोध की सबसे बड़ी प्रेरणा बनी। महारानी दुर्गावती ने अपने जीवन में अकबर और शेरशाह सूरी से कुल 52 युद्ध लड़े और इनमें से 51 युद्ध जीते।

महाकौशल की धरती को एक से बढ़कर एक जनजातीय नायकों की जन्मभूमि और कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। महाकौशल की माटी गोंड शासकों के अदम्य शौर्य, साहस और सुशासन की साक्षी है। गोंडवाना के प्रतापी महाराजा शंकरशाह और उनके वीर पुत्र कुंवर रघुनाथ शाह ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में क्रांति की मशाल प्रज्वलित की। राष्ट्रभक्ति भावपूर्ण कविता लिखने पर इन दोनों को तोप से उड़ा दिया गया था। वर्ष 1923 में जब देश में राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता आंदोलन चरम पर था, तब छिंदवाड़ा के जनजातीय नायक बादल भोई अपने साथियों के साथ स्वाधीनता संग्राम में शामिल हो गए। उनके नेतृत्व में हजारों जनजातीय वीरों ने मोर्चा संभाल लिया और स्वाधीनता संघर्ष करते हुए अमर बलिदान दिया।

प्रदेशभर के जनजातीय भाई-बहनों के सर्वांगीण विकास और कल्याण के लिए 662 करोड़ रुपए से अधिक की लागत वाले 133 विकास कार्यों की सौगात दी गई है। इसमें 564 करोड़ रुपए से अधिक लागत के 106 विकास कार्यों का लोकार्पण और 98 करोड़ से अधिक लागत के 27 विकास कार्यों का भूमि-पूजन शामिल है। इसके साथ ही हमने शालिनी ऐप का भी लोकार्पण भी किया है।

अंग्रेजों ने देशवासियों पर अत्याचार और



कत्लेआम किए। भगवान बिरसा मुंडा ने जनजातीय समाज को साथ लेकर सशस्त्र विद्रोह कर अंग्रेजों को चुनौती दी। उन्होंने नशा मुक्ति और गौमाता के संरक्षण के लिए भी अभियान चलाया। टंट्या मामा, अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद और शहीद छितु किराड़ ने मध्यप्रदेश की धरती से आजादी के अभियान को आगे बढ़ाया। आजादी के दीवानों का स्मरण कर हम सब गौरवान्वित अनुभव करते हैं। छितु किराड़ इस धरती के पराक्रम का प्रतीक थे। उन्होंने अंग्रेजों के शोषण और जबरन लगान के खिलाफ साहसिक विरोध किया। अकाल के समय अंग्रेजों के गोदामों से अनाज निकालकर जरूरतमंद परिवारों को बांटा। देश की आजादी में जनजातीय अंचल के नायकों की महत्वपूर्ण भूमिका थी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद जनजातीय नायकों को वह सम्मान नहीं दिया गया। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में जनजातीय गौरव अपनी प्रतिष्ठा के साथ पुनः स्थापित हो रहा है।

आलीराजपुर जनजातीय संस्कृति और स्वाभिमान की भूमि है। राजा आलिया इस क्षेत्र के स्वाभिमान, नेतृत्व और जनजातीय गौरव के प्रतीक थे। ■



“वंदे मातरम्” का सार भारत और माँ भारती की भावना में समाया है-पीएम मोदी

- औपनिवेशिक काल में, “वंदे मातरम्” उस संकल्प का उद्घोष बन गया कि भारत स्वतंत्र होगा और माँ भारती के हाथों से गुलामी की बेड़ियाँ टूट जाएँगी।
- “वंदे मातरम्” भारत के स्वतंत्रता संग्राम की आवाज बन गया, हर क्रांतिकारी के होठों पर एक जयघोष, हर भारतीय की भावनाओं को व्यक्त करने वाली आवाज।
- “वंदे मातरम्” हमें न केवल यह याद दिलाता है कि हमारी स्वतंत्रता कैसे प्राप्त हुई, बल्कि यह भी कि हमें इसकी रक्षा कैसे करनी चाहिए।
- Whenever the national flag unfurls, these words rise instinctively from our hearts— Bharat Mata ki Jai! Vande Mataram!



वंदे मातरम् के सामूहिक गान का अद्भुत अनुभव, अभिव्यक्ति से परे है। इतनी आवाजों में एक लय, एक स्वर, एक भाव, एक जैसा रोमांच, एक जैसा प्रवाह, ऐसा तारतम्य, ऐसी तरंग।

वंदे मातरम्, ये शब्द एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्वप्न है, एक संकल्प है। वंदे मातरम्, ये एक शब्द माँ भारती की साधना है, माँ भारती की आराधना है। वंदे मातरम्, ये एक शब्द हमें इतिहास में ले जाता है। ये हमारे आत्मविश्वास को, हमारे वर्तमान को, आत्मविश्वास से भर देता है, और हमारे भविष्य को ये नया हौसला देता है कि ऐसा कोई संकल्प नहीं, ऐसा कोई संकल्प नहीं जिसकी सिद्धि न हो सके। ऐसा कोई लक्ष्य नहीं, जो हम भारतवासी पा ना सकें।

वंदे मातरम् के सामूहिक गान का अद्भुत अनुभव, अभिव्यक्ति से परे है। इतनी आवाजों में एक लय, एक स्वर, एक भाव, एक जैसा रोमांच, एक जैसा प्रवाह, ऐसा तारतम्य, ऐसी तरंग।

7 नवंबर का दिन बहुत ऐतिहासिक है, वंदे मातरम् के 150वें वर्ष का महाउत्सव।

हर गीत, हर काव्य का अपना एक मूल भाव होता है, उसका अपना एक मूल संदेश होता है। वंदे मातरम् का मूल भाव क्या है? वंदे मातरम् का मूल भाव है- भारत, माँ भारती। भारत की शाश्वत संकल्पना, वो संकल्पना जिसने मानवता के प्रथम पहर से खुद को गढ़ना

शुरू कर दिया। जिसने युगों-युगों को एक-एक अध्याय के रूप में पढ़ा। अलग-अलग दौर में अलग-अलग राष्ट्रों का निर्माण, अलग-अलग ताकतों का उदय, नई-नई सभ्यताओं का विकास, शून्य से शिखर तक उनकी यात्रा, और शिखर से पुनः शून्य में उनका विलय, बनता बिगड़ता इतिहास, दुनिया का बदलता भूगोल, भारत ने ये सब कुछ देखा है। इंसान की इस अनंत यात्रा से हमने सीखा और समय-समय पर नए निष्कर्ष निकाले। हमने उनके आधार पर अपनी सभ्यता के मूल्यों और आदर्शों को तराशा, उसे गढ़ा। हमने, हमारे पूर्वजों ने, हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने, हमारे आचार्यों ने, भगवतों ने, हमारे देशवासियों ने अपनी एक सांस्कृतिक पहचान बनाई। हमने ताकत और नैतिकता के संतुलन को बराबर समझा। और तब जाकर, भारत एक राष्ट्र के रूप में वो कुन्दन बनकर उभरा जो अतीत की हर चोट सहता भी रहा और सहकर भी अमरत्व को प्राप्त कर गया।

भारत की ये संकल्पना, उसके पीछे की वैचारिक शक्ति है। उठती-गिरती दुनिया से अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व बोध, ये उपलब्धि, और लयबद्ध, लिपिबद्ध होना और तब जाकर के हृदय

की गहराई से, अनुभवों के निचोंड से, संवेदनाओं की असीमता को प्राप्त कर करके वंदे मातरम् जैसी रचना मिलती है। और इसलिए, गुलामी के उस कालखंड में वंदे मातरम् इस संकल्प का उद्घोष बन गया था, और वो उद्घोष था- भारत की आजादी का। माँ भारती के हाथों से गुलामी की बेड़ियाँ टूटेंगी, और उसकी संतानें स्वयं अपने भाग्य की भाग्य विधाता बनेंगी।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था- “बंकिमचंद्र की आनंदमठ” केवल उपन्यास नहीं है, ये स्वाधीन भारत का एक स्वप्न है। आनंदमठ में वंदे मातरम् का प्रसंग, वंदे मातरम् की एक-एक पंक्ति के, बंकिम बाबू के एक-एक शब्द के, उसके हर भाव के, अपने गहरे निहितार्थ थे, निहितार्थ हैं। ये गीत गुलामी के कालखंड में रचना तो जरूर हो गई उस समय, लेकिन उसके शब्द कुछ वर्षों की गुलामी के साये में कभी भी कैद नहीं रहें। वो गुलामी की स्मृतियों से आजाद रहें। इसलिए, वंदे मातरम् हर दौर में, हर कालखंड में प्रासंगिक है, इसने अमरता को प्राप्त किया है। वंदे मातरम् की पहली पंक्ति है- “सुजलाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम्, सस्यश्यामलाम् मातरम्।”

अर्थात्, प्रकृति के दिव्य वरदान से सुशोभित हमारी सुजलाम् सुफलाम् मातृभूमि को नमन।

यही तो भारत की हजारों साल पुरानी पहचान रही है। यहाँ की नदियाँ, यहाँ के पहाड़, यहाँ के वन, वृक्ष और यहाँ की उपजाऊ मिट्टी, ये धरती हमेशा सोना उगलने की ताकत रखती है। सदियों तक दुनिया भारत की समृद्धि की कहानियाँ सुनती रही थी। कुछ ही शताब्दी पहले तक, ग्लोबल GDP का करीब एक चौथाई हिस्सा भारत के पास था।

जब बंकिम बाबू ने वंदे मातरम् की रचना की थी, तब भारत अपने उस स्वर्णिम दौर से बहुत दूर जा चुका था। विदेशी आक्रमणकारियों ने, उनके हमले, लूटपाट अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियाँ, उस समय हमारा देश गरीबी और भुखमरी के चंगुल में कराह रहा था। तब भी, बंकिम बाबू ने, उस बुरे हालात के स्थितियों में भी, चारों तरफ दर्द था, विनाश था, शोक था, सब कुछ डूबता हुआ नजर आ रहा था, ऐसे समय बंकिम बाबू ने समृद्ध भारत का आह्वान किया। क्योंकि, उन्हें विश्वास था कि मुश्किलें कितनी भी क्यों ना हों, भारत अपने स्वर्णिम दौर को पुनर्जीवित कर सकता है। और इसलिए उन्होंने आह्वान किया, वंदे मातरम्।

गुलामी के उस कालखंड में भारत को नीचा और पिछड़ा बताकर जिस तरह अंग्रेज अपनी हुकूमत को justify करते थे, इस प्रथम पंक्ति ने उस दुष्प्रचार को पूरी तरह से ध्वस्त करने का काम किया। इसलिए, वंदे मातरम् केवल आजादी का गान ही नहीं बना, बल्कि आजाद भारत कैसा होगा, वंदे मातरम् ने वो 'सुजलाम सुफलाम' सपना भी करोड़ों देशवासियों के सामने प्रस्तुत किया।

7 नवंबर का दिन वंदे मातरम् की असाधारण यात्रा और उसके प्रभाव को जानने का अवसर भी देता है। जब सन् 1875 में बंकिम बाबू ने बंगदर्शन में "वंदे मातरम्" प्रकाशित किया था, तो कुछ लोगों को लगता था कि ये तो केवल एक गीत है। लेकिन, देखते ही देखते वंदे मातरम् भारत के स्वतंत्रता संग्राम का, कोटि-कोटि जनों का स्वर बन गया। एक ऐसा स्वर, जो हर क्रांतिकारी की ज़बान पर था, एक ऐसा स्वर, जो हर भारतीय की भावनाओं को व्यक्त कर रहा था।

आजादी की लड़ाई का शायद ही ऐसा कोई अध्याय होगा, जिससे वंदे मातरम् किसी न किसी रूप से जुड़ा नहीं था। 1896 में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कलकत्ता अधिवेशन में वंदे मातरम् गाया। 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ। ये देश को बांटने का अंग्रेजों का एक खतरनाक एक्सपेरिमेंट था। लेकिन, वंदे मातरम् उन मंसूबों के आगे चट्टान बनकर खड़ा हो

गया। बंगाल के विभाजन के विरोध में सड़कों पर एक ही आवाज थी- वंदे मातरम्।

बरिसाल अधिवेशन में जब आंदोलनकारियों पर गोलियाँ चलीं, तब भी उनके होंठों पर वही मंत्र था, वही शब्द थे- वंदे मातरम्! भारत के बाहर रहकर आजादी के लिए काम कर रहे वीर सावरकर जैसे स्वतंत्र सेनानी, वो जब आपस में मिलते थे, तो उनका अधिवादन वंदे मातरम् से ही होता था। कितने ही क्रांतिकारियों ने फांसी के तख्त पर खड़े होकर भी वंदे मातरम् बोला था। ऐसी कितनी ही घटनाएँ, इतिहास की कितनी ही तारीखें, इतना बड़ा देश, अलग-अलग प्रांत और इलाके, अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोग, उनके आंदोलन, लेकिन जो नारा, जो संकल्प, जो गीत हर ज़बान पर था, जो गीत हर स्वर में था, वो था- वंदे मातरम्।

1927 में महात्मा गांधी ने कहा था- वंदे मातरम् हमारे सामने संपूर्ण भारत का ऐसा चित्र उपस्थित कर देता है, जो अखंड है। श्री अरविंदो ने वंदे मातरम् को एक गीत से भी आगे, उसे एक मंत्र कहा था। उन्होंने कहा- ये एक ऐसा मंत्र है जो आत्मबल जगाता है। भीकाजी कामा ने भारत का जो ध्वज तैयार करवाया था, उसमें बीच में भी लिखा था- "वंदे मातरम्"

हमारा राष्ट्र ध्वज समय के साथ कई बदलावों से गुजरा, लेकिन तब से लेकर आज तक हमारे तिरंगे तक, देश का झण्डा जब भी फहरता है, तो हमारे मुंह से अनायास निकलता है- भारत माता की जय! वंदे मातरम्! इसीलिए, जब हम उस राष्ट्रगीत के 150 वर्ष मना रहे हैं, तो ये देश के महान नायकों के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है। और ये उन लाखों बलिदानियों को भी श्रद्धापूर्वक नमन है, जो वंदे मातरम् का आह्वान करते हुए, फांसी के तख्त पर झूलते हुए, जो वंदे मातरम् बोलते हुए, कोड़ों की मार सहते रहे, जो वंदे मातरम् का मंत्र जपते हुए बर्फ की सिल्लियों पर अडिग रहे।

हम 140 करोड़ देशवासी ऐसे सभी नाम-अनाम-गुमनाम राष्ट्र के लिए जीने-मरने वालों को श्रद्धांजलि देते हैं। जो वंदे मातरम् कहते हुए देश के लिए बलिदान हो गए, जिनके नाम इतिहास के पन्नों में कभी दर्ज ही नहीं हो पाए।

हमारे वेदों ने हमें सिखाया है- "माता भूमिः, पुत्रोऽहं पृथिव्याः॥"

अर्थात्, ये धरती हमारी माँ है, ये देश हमारी माँ है। हम इसी की संतानें हैं। भारत के लोगों ने वैदिक काल से ही राष्ट्र की इसी स्वरूप में कल्पना की, इसी स्वरूप में आराधना की है। इसी वैदिक चिंतन से वंदे मातरम् ने आजादी की लड़ाई में नई चेतना फूँकी।

राष्ट्र को एक geopolitical entity

मानने वालों के लिए राष्ट्र को माँ मानने का विचार हैरानी भरा हो सकता है। लेकिन, भारत अलग है। भारत में माँ जननी भी है, और माँ पालनहारिणी भी है। अगर संतान पर संकट आ जाए, तो माँ संहारकारिणी भी है। इसलिए, वंदे मातरम् कहता है-

अबला केन मा एत बले। बहुबल-धारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदल-वारिणीं मातरम्॥ वंदे मातरम्,

अर्थात् अपार शक्ति धारण करने वाली भारत माँ, संकटों से पार भी कराने वाली, और शत्रुओं का विनाश भी कराने वाली है। राष्ट्र को माँ, और माँ को शक्ति स्वरूपा नारी मानने का ये विचार, इसका एक प्रभाव ये भी हुआ कि हमारा स्वतन्त्रता संग्राम, स्त्री-पुरुष, सबकी भागीदारी का संकल्प बन गया। हम फिर से ऐसे भारत का सपना देख पाये, जिसमें महिला शक्ति राष्ट्र निर्माण में सबसे आगे खड़ी दिखाई देगी।

वंदे मातरम्, आजादी के परवानों का तराना होने के साथ ही, इस बात की भी प्रेरणा देता है कि हमें इस आजादी की रक्षा कैसे करनी है, बंकिम बाबू के पूरे मूल गीत की पंक्तियाँ हैं-

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरण-धारिणी कमला कमल-दल-विहारिणी वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम् नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम् सुजलां सुफलाम् मातरम्, वंदे मातरम्!

अर्थात्, भारत माता विद्यादायिनी सरस्वती भी है, समृद्धि दायिनी लक्ष्मी भी हैं, और अस्त्र-शास्त्रों को धारण करने वाली दुर्गा भी हैं। हमें ऐसे ही राष्ट्र का निर्माण करना है, जो ज्ञान, विज्ञान और टेक्नोलॉजी में शीर्ष पर हो, जो विद्या और विज्ञान की ताकत से समृद्धि के शीर्ष पर हो, और जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आत्मनिर्भर भी हो।

बीते वर्षों में दुनिया भारत के इसी स्वरूप का उदय देख रही है। हमने विज्ञान और टेक्नोलॉजी





की फील्ड में अभूतपूर्व प्रगति की। हम दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरे। और, जब दुश्मन ने आतंकवाद के जरिए भारत की सुरक्षा और सम्मान पर हमला करने का दुस्साहस किया, तो पूरी दुनिया ने देखा, नया भारत मानवता की सेवा के लिए अगर कमला और विमला का स्वरूप है, तो आतंक के विनाश के लिए 'दश प्रहरण-धारिणी दुर्गा' भी बनना जानता है।

वंदे मातरम् से जुड़ा एक और विषय है, जिसकी चर्चा करना उतना ही आवश्यक है। आजादी की लड़ाई में वंदे मातरम् की भावना ने पूरे राष्ट्र को प्रकाशित किया था। लेकिन दुर्भाग्य से, 1937 में वंदे मातरम् के महत्वपूर्ण पदों को, उसकी आत्मा के एक हिस्से को अलग कर दिया गया था। वंदे मातरम् को तोड़ दिया गया था, उसके टुकड़े किए गए थे। वंदे मातरम् के इस विभाजन ने देश के विभाजन के बीज भी बो दिये थे। राष्ट्र निर्माण का ये महामंत्र, इसके साथ ये अन्याय क्यों हुआ? ये आज की पीढ़ी को भी जानना जरूरी है। क्योंकि वही विभाजनकारी सोच देश के लिए आज भी चुनौती बनी हुई है।

हमें इस सदी को भारत की सदी बनाना है। ये सामर्थ्य भारत में है, ये सामर्थ्य भारत के 140 करोड़ लोगों में है। हमें इसके लिए खुद पर विश्वास करना होगा। इस संकल्प यात्रा में हमें पथभ्रमित करने वाले भी मिलेंगे, नकारात्मक सोच वाले लोग हमारे मन में शंका-संदेह पैदा करने का प्रयास भी करेंगे। तब हमें आनंद मठ का वो प्रसंग याद करना है, आनंद मठ में जब संतान भवानंद वंदे मातरम् गाता है, तो एक दूसरा पात्र तर्क-वितर्क करता है। वह पूछता है कि तुम अकेले क्या कर पाओगे? तब वंदे मातरम् से प्रेरणा मिलती है, जिस माता के इतने करोड़ पुत्र-पुत्री हों, उसके करोड़ों हाथ हों, वो

माता अबला कैसे हो सकती है? आज तो भारत माता की 140 करोड़ संतान हैं। उसके 280 करोड़ भुजाएं हैं। इनमें से 60 प्रतिशत से भी ज्यादा तो नौजवान हैं। दुनिया का सबसे बड़ा डेमोग्राफिक एडवांटेज हमारे पास है। ये सामर्थ्य इस देश का है, ये सामर्थ्य माँ भारती का है। ऐसा क्या है, जो आज हमारे लिए असंभव है? ऐसा क्या है, जो हमें वंदे मातरम् के मूल सपने को पूरा करने से रोक सकता है?

आत्मनिर्भर भारत के विजन की सफलता, मेक इन इंडिया का संकल्प, और 2047 में विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ते हमारे कदम, देश जब ऐसे अभूतपूर्व समय में नई उपलब्धियां हासिल करता है, तो हर देशवासी के मुंह से निकलता है- वंदे मातरम्! जब भारत चंद्रमा के साउथ पोल पर पहुँचने वाला पहला देश बनता है, जब नए भारत की आहट अंतरिक्ष के सुदूर कोनों तक सुनाई देती है, तो हर देशवासी कह उठता है- वंदे मातरम्! जब हम हमारी बेटियों को स्पेस टेक्नोलॉजी से लेकर स्पोर्ट्स तक में शिखर पर पहुँचते देखते हैं, जब हम बेटियों को फाइटर जेट उड़ाते देखते हैं, तो गौरव से भरा हर भारतीय का नारा होता है- वंदे मातरम्!

हमारे फौज के जवानों के लिए वन रैंक वन पेंशन लागू होने के 11 वर्ष हुए हैं। जब हमारी सेनाएं, दुश्मन के नापाक इरादों को कुचल देती हैं, जब आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवादी आतंक की कमर तोड़ी जाती है, तो हमारे सुरक्षाबल एक ही मंत्र से प्रेरित होते हैं, और वो मंत्र है - वंदे मातरम्!

माँ भारती के वंदन की यही स्पिरिट हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक ले जाएगी।

वंदे मातरम् का मंत्र, हमारी इस अमृत यात्रा में, माँ भारती की कोटि-कोटि संतानों को निरंतर शक्ति देगा, प्रेरणा देगा। ■

भगवान बिरसा मुंडा का अनुसरण करें युवा - हेमंत खण्डेलवाल

- बिरसा मुंडा ने अंग्रेजी शासन को चुनौती दी थी।
- प्रदेश में विकास के साथ जनजाति समाज भी शिक्षित और विकसित हो रहा है।

भगवान बिरसा मुंडा एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अंग्रेजी शासन को चुनौती दी थी और उनके हृदय में गहरी देशभक्ति थी। प्रदेश के सतत विकास के साथ-साथ जनजातीय समाज भी शिक्षा और प्रगति की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है। हमारी जनजाति के लिए वह आदर्श थे, जिन्होंने जवानों में भी यह बता दिया कि किसी भी युवा को अगर जीना चाहिए तो देश के लिए जीना चाहिए। भगवान बिरसा मुंडा जी का जैसा जीवन रहा हमारे समाज के हर युवा को उनके जीवन को देखकर उनके बताये मार्ग पर चलना चाहिए। हर जनजाति के युवा में इतने जज्बात रहे कि हमारे समाज को एक नई दिशा देने का काम कर सके। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आलीराजपुर, धार सहित आदिवासी बहुल क्षेत्रों का विकास एवं जनजाति समाज को रोजगार मिले उसकी चिंता की हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने धार में अपने जन्मदिन के अवसर पर बड़े टेक्सटाइल पार्क की घोषणा की थी, जिससे लगभग 50 हजार जनजातीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित होने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। यह परियोजना जनजातीय समाज की आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। प्रदेश निरंतर विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है और इसी विकास यात्रा में जनजातीय समाज भी शिक्षित, सक्षम और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। सभी लोग भगवान बिरसा मुंडा को अपना आदर्श मानकर समाज को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में योगदान दें। ■

राष्ट्रप्रेम का प्रतीक है वंदे मातरम् - डॉ. मोहन यादव



वंदे मातरम् गीत में यह बताया गया है कि हमारी तीन देवियों-दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की कृपा और आशीर्वाद अगर किसी देश पर हो, तो उसकी ताकत क्या होती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार इसी भावना के साथ शासन कर रही है और पाकिस्तान की दुष्टता का जिस ताकत के साथ मोदी जी की सरकार इलाज कर रही है, वह इन तीनों देवियों की कृपा का प्रतीक है।

वंदे मातरम् की भावना राष्ट्रप्रेम की भावना है। लेकिन आजादी के बाद कुछ दलों ने अपनी सुविधा के लिए एक दुविधाजनक मार्ग प्रस्तुत किया, जिसे छद्म सेक्युलरिज्म कहते हैं। यह वास्तव में अपने वोट बैंक की राजनीति को साधने का ही प्रयास था। कांग्रेस का चरित्र इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

वंदे मातरम् गीत में यह बताया गया है कि हमारी तीन देवियों-दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की कृपा और आशीर्वाद अगर किसी देश पर हो, तो उसकी ताकत क्या होती है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार इसी भावना के साथ शासन कर रही है और पाकिस्तान की दुष्टता का जिस ताकत के साथ मोदी जी की सरकार इलाज कर रही है, वह इन तीनों देवियों की कृपा का प्रतीक है। लेकिन कुछ लोगों ने वंदे मातरम् के भाव को समझे बिना उसे छोटे नजरिए से देखते हुए उसे एक धर्म विशेष के साथ जोड़ दिया। वंदे मातरम् की भावना से खिलवाड़ के चलते ही देश का विभाजन हुआ। वंदे

मातरम् के मूल भाव को देश और दुनिया के सामने लाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस गीत की 150 वीं जयंती मनाने का निर्णय लिया है।

वंदे मातरम् गीत की रचना भले ही 1875 में हुई, लेकिन भावनात्मक रूप से इसकी भूमिका 1875 में ही बन गई थी। हम सभी ने देखा है कि किस तरह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई सहित सैकड़ों क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया। चाहे चंद्रशेखर आजाद हों या भगतसिंह सभी की प्रेरणा वंदे मातरम् ही था। भारत की स्वतंत्रता का पूरा आंदोलन वंदे मातरम् के मूलमंत्र पर चला। भगवान श्री राम की जन्मभूमि को लेकर देश में कितने दंगे हुए। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के उपरांत वंदे मातरम् की भावना के साथ ही भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हुआ। सनातन संस्कृति की जो भावना है, उसी के आधार पर ही देश की भावना बनती है। इसी भावना से प्रेरित होकर हम रहीम और रसखान का जयकारा लगाते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं क्योंकि हमारी पार्टी इसी

विचार को लेकर चल रही है।

वंदे मातरम् हर भारतीय की चेतना का स्वर है। यह सिर्फ राष्ट्रगीत नहीं, हमारा प्राण गीत भी है। वंदे मातरम् वह उद्घोष है जिसने पराधीन भारत की धमनियों में स्वाभिमान का रक्त प्रवाहित किया। वंदे मातरम् ने देश में आजादी का अलख जगाया। वर्ष 1875 में स्वतंत्रता सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी की कलम से अमर गीत वंदे मातरम् की रचना हुई। उनके उपन्यास “आनंद मठ” की इस रचना से क्रांति का शंखनाद हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कल्पनाशीलता से वंदे मातरम् के 150वें स्मरणोत्सव के विशेष आयोजन हो रहे हैं। विभिन्न जिलों में प्रदेशवासी भी स्मरणोत्सव में भाग लेकर मातृभूमि के प्रति देशभक्ति और कृतज्ञता की भावना को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

हर देश का आजादी के संघर्ष का अपना इतिहास है। दुनिया के अधिकतर राष्ट्रगीत देशों के संघर्ष के समय पैदा हुए, चाहे फ्रांस हो या अमेरिका राष्ट्रगीतों की उत्पत्ति कठिन समय में ही हुई। स्वतंत्रता सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी ने राष्ट्रगीत वंदे मातरम् में भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत को समाहित किया। इससे देशवासियों के मन में भारत माता के प्रति गर्व की अनुभूति और स्वयं की पहचान को अभिव्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न हुई। वंदे मातरम् के शब्दों में भारत माता की तुलना तीन प्रमुख देवियों मां लक्ष्मी, मां सरस्वती और मां दुर्गा से की गई है। मां दुर्गा अन्याय और दासता के विनाश का प्रतीक है। माता लक्ष्मी भारत माता की समृद्धि और मां सरस्वती वैचारिक और आध्यात्मिक प्रकाश को प्रकट करती है। वंदे मातरम् में स्वतंत्रता सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी ने भारत को देवी त्रिमूर्ति के रूप में चित्रित किया। 19वीं सदी में लिखे गए इस गीत में भारत की सदियों पुरानी चेतना विद्यमान है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जब 1896 में पहली बार इस गीत को स्वर दिया, तो वंदे मातरम् केवल गीत नहीं रहा, वह राष्ट्र की पुकार बन गया। आजादी के साथ जब राष्ट्रगीत को अपनाने का समय आया तो देश को भ्रमित करने की कोशिश की गई। वंदे मातरम् के इतिहास को गहनता से जानने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता सेनानी और देश के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि हमें राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रगीत वंदे मातरम् को भी महत्व देने की आवश्यकता है। ■



‘वंदे मातरम्’ देश को एक करने का कार्य कर रहा है : हेमंत खण्डेलवाल



- ‘वंदे मातरम्’ ने स्वतंत्रता संग्राम के रणबाँकुरों में देश की आजादी का अलख जगाया।
- नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का कार्य कर रहा है ‘वंदे मातरम्’।

“वंदे मातरम्” ने स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को एक करके देश को आजादी

दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ‘वंदे मातरम्’ आज भी देश को एक करने के लिए कार्य कर रहा है। भारत को आजादी मिलने के बाद देश के पहले राष्ट्रपति स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसाद ने इस काव्यपाठ को जन-गण-मन की तरह समान दर्जा देते हुए राष्ट्रगीत का दर्जा दिया है। बीबीसी के एक सर्वे में ‘वंदे मातरम्’ को देश प्रेम के गीतों में विश्व के दूसरे सर्वाधिक लोकप्रिय गीत के रूप में पाया है। हमारे देश को आजादी कैसे मिली, उसका संदेश भी ‘वंदे

मातरम्’ हम सभी को देता है। ‘वंदे मातरम्’ के कुछ शब्द संस्कृत के और कुछ बांग्ला भाषा के हैं। जब बांग्लादेश विभाजित हुआ, तब भी देश के नागरिकों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने इस गीत के माध्यम से बंगाल विभाजन का विरोध किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ‘वंदे मातरम्’ के मूल मंत्र के आधार पर भारत को दुनिया में आगे ले जाने के साथ विश्व के शिखर पर पहुँचाने के लिए कार्य कर रहे हैं। यह गीत स्वदेशी के संकल्प के साथ हर नागरिक को प्रेरणा दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश कार्यालय सहित प्रदेश के 10 विशेष स्थानों पर ‘वंदे मातरम्@150’ अभियान के तहत वंदे मातरम् का सामूहिक गायन किया। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हम सभी कार्यकर्ता और आमजन मिलकर राष्ट्रप्रथम के भाव से स्वदेशी के संकल्प को लेकर आगे बढ़ेंगे और भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य करेंगे। ■

बूथ की मजबूती ही चुनाव में सफलता की नींव है- हितानंद जी

एसआईआर प्रक्रिया को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। आगामी चुनावों की दृष्टि से मतदाता सूची ही चुनाव का सबसे बड़ा और प्रभावी हथियार है, इसलिए इसे शुद्ध, अद्यतन और त्रुटिरहित बनाना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में 65 हजार से अधिक बूथ हैं और आने वाले समय में इनकी संख्या में और वृद्धि होने वाली है। ऐसे में बूथों को मजबूत करने, संगठन को सुदृढ़ करने और मतदाता सूची को दुरुस्त करने की जिम्मेदारी सभी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं की है। मेरा बूथ सबसे मजबूत करने की पहली सीढ़ी मतदाता सूची को सही और अद्यतन करना ही है। इस कार्य के लिए सरपंच, जनपद सदस्य, जिला पंचायत सदस्य, पार्षद, जनप्रतिनिधि, मंडल पदाधिकारी और बूथ कार्यकर्ता सभी को समन्वय के साथ लगातार बैठकें कर सक्रिय भूमिका निभानी होगी। 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके सभी युवाओं के नाम अनिवार्य रूप से मतदाता



सूची में जोड़े जाएँ। जो लोग नौकरी, व्यवसाय या अन्य वजह से किसी क्षेत्र में आए थे लेकिन अब वहां निवास नहीं करते, उनके नाम हटवाने की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाए। यदि किसी भी बूथ पर कोई संदिग्ध मतदाता दिखाई दे, तो उसे पहचान कर इसकी सूचना संबंधित अधिकारियों को दी जाए। निर्वाचन आयोग और प्रशासन के साथ पूर्ण पारदर्शिता व सहयोग रखते हुए एसआईआर की हर प्रक्रिया को सही रूप से

लागू किया जाए। मतदाता सूची का शुद्धिकरण केवल तकनीकी कार्य नहीं, बल्कि लोकतंत्र को मजबूत करने का राष्ट्रीय दायित्व है। एक मतदाता का सही नाम जोड़ना, एक संदिग्ध नाम हटाना और एक बूथ को संगठित करना यही चुनावी सफलता की मजबूत नींव तैयार करता है। संगठन तभी मजबूत होता है जब उसका बूथ मजबूत हो और बूथ तभी मजबूत होता है जब वहां की मतदाता सूची शत-प्रतिशत सटीक और विश्वसनीय हो।

कार्यकर्ता न केवल समर्पित होकर एसआईआर अभियान में जुटें, बल्कि प्रत्येक मतदाता से संपर्क स्थापित कर उन्हें मतदान व्यवस्था की पारदर्शिता के प्रति जागरूक भी करें। भाजपा कार्यकर्ताओं की प्रतिबद्धता, सजगता और संगठनात्मक क्षमता ही आगामी चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाएगी। एसआईआर को गंभीरता से लागू करना ही लोकतंत्र को मजबूत करने का सबसे प्रभावी कदम है। ■

भारत जिस मजबूती के साथ खड़ा है, उसमें सबसे बड़ी भूमिका पटेल की - डॉ. मोहन यादव



आधुनिक भारत के निर्माण में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही। सरदार पटेल ने अनेकों रियासतों को एक करते हुए अखंड भारत की नींव रखी। सरदार पटेल ने देश की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया।

- आधुनिक भारत के निर्माण में लौह पुरुष सरदार पटेल की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही।
- सरदार पटेल ने देश की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया।

आ जादी के समय सरदार पटेल ने पाकिस्तान की घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए देश को सुरक्षित रखा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज दुनिया के सामने जिस मजबूती के साथ खड़ा है, उसमें सबसे बड़ी भूमिका सरदार पटेल की रही है। सरदार पटेल की 150वीं जयंती में उनके गौरवशाली कार्यों का स्मरण करने के लिए प्रदेश में यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया।

आधुनिक भारत के निर्माण में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही। सरदार पटेल ने अनेकों रियासतों को एक करते हुए अखंड भारत की नींव रखी। सरदार पटेल ने देश की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया। ■

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने देश को एक करने का काम किया - हेमंत खण्डेलवाल



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश की अर्थव्यवस्था को 11वें से चौथे नंबर पर लेकर आए हैं। हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल के विचारों को अभियान के माध्यम से आगे बढ़ाने का अवसर मिला है और हमें युवा पीढ़ी तक इसे लेकर जाना है।

- अखंड भारत के लक्ष्य से युवा पीढ़ी को अवगत कराने के लिए गतिविधियां जारी।
- सरदार पटेल के हाथों में नेतृत्व होता तो हम चीन-अमेरिका के समकक्ष होते।

स रदार वल्लभ भाई पटेल ऐसी शख्सियत थे, जिन्होंने देश को एक करने का काम किया और 500 से ज्यादा रियासतों को देश में मिलाया। अगर सरदार पटेल के हाथों में उस दौर में देश का नेतृत्व होता तो देश बहुत तरक्की करता। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश की अर्थव्यवस्था को 11वें से चौथे नंबर पर लेकर आए हैं। हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल के विचारों को अभियान के माध्यम से आगे बढ़ाने का अवसर मिला है और हमें युवा पीढ़ी तक इसे लेकर जाना है। हमारा देश दुनिया में बुलंदियों पर जाए, इसी बात को ध्यान में रखकर हमें आगे बढ़ना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज सरदार पटेल के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विचारों को धरातल पर उतारा जा रहा है। यदि हम सब उनके बताए मार्ग पर चलकर एकता, परिश्रम और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखकर काम करेंगे तो भारत न केवल सशक्त बनेगा, बल्कि 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा। ■



“मन की बात” सामूहिक प्रयासों को सामने लाने का बेहतरीन मंच है

- नवंबर का महीना कई प्रेरणाएँ लेकर आया। कुछ दिन पहले ही, 26 नवंबर को, “संविधान दिवस” पर सेंट्रल हॉल में एक विशेष आयोजन हुआ।
- हैदराबाद में दुनिया की सबसे बड़ी लीप इंजन MRO फैसिलिटी के उद्घाटन के साथ, भारत ने एयरक्राफ्ट मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल सेक्टर में एक बड़ा कदम उठाया है।
- भारत ने 357 मिलियन टन अनाज उत्पादन के साथ एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया है। 10 साल पहले की तुलना में, भारत का अनाज उत्पादन 100 मिलियन टन बढ़ा है।
- जब चंद्रयान-3 सफलतापूर्वक लैंड हुआ, तो यह सिर्फ एक मिशन की सफलता नहीं थी। यह असफलता से बाहर आने के बाद बने नए आत्मविश्वास की सफलता थी।
- आज, भारत शहद प्रोडक्शन में नए रिकॉर्ड बना रहा है। 11 साल पहले, देश में शहद का प्रोडक्शन 76000 मीट्रिक टन था। यह अब बढ़कर 1.5 लाख मीट्रिक टन से अधिक हो गया है।
- ‘हनी मिशन प्रोग्राम’ के तहत, खादी ग्रामोद्योग ने लोगों के बीच 2.25 लाख से अधिक bee-boxes बांटे हैं।
- कुछ दिन पहले, इजराइल में जाम साहब की एक मूर्ति का अनावरण किया गया था। यह बहुत ख़ास सम्मान था।
- नैचुरल फार्मिंग भारत की पुरानी परंपराओं का हिस्सा रही है और धरती माँ की रक्षा के लिए इसे लगातार बढ़ावा देना हमारा कर्तव्य है।
- चौथा ‘काशी-तमिल संगमम’ 2 दिसंबर को काशी के नमो घाट पर शुरू



कृषि क्षेत्र में भी देश ने बड़ी उपलब्धि हासिल की। भारत ने 357 मिलियन टन के खाद्यान्न उत्पादन के साथ एक ऐतिहासिक record बनाया है। Three hundred and fifty seven million ton! 10 साल पहले की तुलना में भारत का खाद्यान्न उत्पादन 100 मिलियन टन और बढ़ गया है।

हो रहा है।

- इस साल के ‘काशी-तमिल संगमम’ की थीम बहुत दिलचस्प है- तमिल सीखें - तमिल करकलम्।
- यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि हमारी नौसेना तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही है।
- मुझे खुशी है कि देश के लाखों लोगों ने “वोकल फॉर लोकल” की भावना को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। मैं हमेशा आप सभी से “वोकल फॉर लोकल” के मंत्र को आगे बढ़ाने का आग्रह करता हूँ।
- भारतीय खेलों के लिहाज से यह महीना सुपरहिट रहा है। इसकी शुरुआत

भारतीय महिला टीम द्वारा आईसीसी महिला वर्ल्ड कप जीतने से हुई।

26 नवंबर को ‘संविधान दिवस’ पर central hall में विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वंदेमातरम् के 150 वर्ष होने पर पूरे देश में होने वाले कार्यक्रमों की शानदार शुरुआत हुई। 25 नवंबर को अयोध्या में राम मंदिर पर धर्मध्वजा का आरोहण हुआ। इसी दिन कुरुक्षेत्र के ज्योतिषर में पांचजन्य स्मारक का लोकार्पण हुआ।

कुछ दिन पहले हैदराबाद में दुनिया की सबसे बड़ी लीप इंजन MRO facility का उद्घाटन किया है। Aircrafts की Maintenance, repair and overhaul के sector में भारत ने ये बहुत बड़ा कदम उठाया है। मुंबई में एक कार्यक्रम के दौरान INS ‘माहे’ को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। भारत के space



ecosystem को Skyroot के Infinity campus ने नई उड़ान दी है। ये भारत की नई सोच, innovation और Youth Power का प्रतिबिंब बना है।

कृषि क्षेत्र में भी देश ने बड़ी उपलब्धि हासिल की। भारत ने 357 मिलियन टन के खाद्यान्न उत्पादन के साथ एक ऐतिहासिक record बनाया है। Three hundred and fifty seven million ton ! 10 साल पहले की तुलना में भारत का खाद्यान्न उत्पादन 100 मिलियन टन और बढ़ गया है। खेलों की दुनिया में भी भारत का परचम लहराया है। कुछ दिन पहले ही भारत को कॉमनवेल्थ खेलों की मेजबानी का भी ऐलान हुआ। ये उपलब्धियाँ देश की हैं, देशवासियों की हैं। और मन की बात देश के लोगों की ऐसी उपलब्धियों को, लोगों के सामूहिक प्रयासों को जन-सामान्य के सामने लाने का, एक बेहतरीन मंच है।

अगर मन में लगन हो, सामूहिक शक्ति पर टीम की तरह काम करने पर विश्वास हो, गिर कर फिर से उठ खड़े होने का साहस हो, तो कठिन-से-कठिन काम में भी सफलता सुनिश्चित हो जाती है। आप उस दौर की कल्पना करिए, जब satellite नहीं थीं, GPS system नहीं था, navigation की कोई सुविधाएं नहीं होती थीं। तब भी हमारे नाविक बड़े-बड़े जहाज लेकर समंदर में निकल जाते थे, और तय स्थानों पर पहुंचते थे। अब समंदर से आगे बढ़कर दुनिया के देश अंतरिक्ष की अनंत ऊंचाई को नाप रहे हैं। चुनौती वहां भी वही है, ना GPS system है, ना संचार की वैसी व्यवस्थाएं हैं, फिर हम कैसे आगे बढ़ेंगे?

कुछ दिनों पहले social media पर

एक Video ने मेरा ध्यान खींचा। ये video ISRO की एक अनोखी drone प्रतियोगिता का था। इस Video में हमारे देश के युवा और खासकर हमारे Gen-Z मंगल ग्रह जैसी परिस्थितियों में drone उड़ाने की कोशिश कर रहे थे। drone उड़ते थे, कुछ पल संतुलन में रहते थे, फिर अचानक जमीन पर गिर पड़ते थे। जानते हैं क्यों? क्योंकि यहां जो drone उड़ रहे थे, उनमें GPS का सपोर्ट बिल्कुल नहीं था। मंगल ग्रह पर GPS संभव नहीं इसलिए drone को कोई बाहरी संकेत या guidance नहीं मिल सकता। drone को अपने कैमरे और Inbuilt software के सहारे उड़ना था। उस छोटे-से drone को जमीन के pattern पहचानने थे, ऊंचाई मापनी थी, बाधाएं समझनी थीं, और खुद ही सुरक्षित उतरने का रास्ता ढूंढना था। इसलिए drone भी एक के बाद एक गिरे जा रहे थे।

इस प्रतियोगिता में, पुणे के युवाओं की एक टीम ने कुछ हद तक सफलता पाई उनका drone भी कई बार गिरा, crash हुआ पर उन्होंने हार नहीं मानी। कई बार के प्रयास के बाद इस team का drone मंगल ग्रह की परिस्थिति में कुछ देर उड़ने में कामयाब रहा।

ये Video देखते हुए, मेरे मन में एक और दृश्य उभर आया। वो दिन जब चंद्रयान-2 संपर्क से बाहर हो गया था। उस दिन पूरा देश, और खासकर वैज्ञानिक कुछ पल के लिए निराश हुए थे। लेकिन असफलता ने उन्हें रोका नहीं। उसी दिन उन्होंने चंद्रयान-3 की सफलता की कहानी लिखनी शुरू कर दी। यही कारण है कि जब चंद्रयान-3 ने सफल landing की, तो वो सिर्फ एक mission की सफलता नहीं

थी। वो तो असफलता से निकलकर बनाए गए विश्वास की सफलता थी। इस Video में जो युवा दिख रहे हैं, उनकी आंखों में मुझे वही चमक दिखाई दी। हर बार जब मैं हमारे युवाओं की लगन और वैज्ञानिकों के समर्पण को देखता हूँ, तो मन उत्साह से भर जाता है। युवाओं की यही लगन, विकसित भारत की बहुत बड़ी शक्ति है।

आप सभी शहद की मिठास से जरूर परिचित होंगे, लेकिन, अक्सर हमें ये नहीं पता चलता इसके पीछे कितने लोगों की मेहनत है, कितनी परंपराएँ हैं, और प्रकृति के साथ कितना सुंदर तालमेल है।

जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में वन तुलसी यानि सुलाई, सुलाई के फूलों से यहाँ की मधुमक्खियाँ बेहद अनोखा शहद बनाती हैं। ये सफेद रंग का शहद होता है जिसे रामबन सुलाई honey कहा जाता है। कुछ वर्षों पहले ही रामबन सुलाई honey को GI Tag मिला है। इसके बाद इस शहद की पहचान पूरे देश में बन रही है।

दक्षिण कन्नड़ा जिले के पुतुर में वहाँ की वनस्पतियाँ शहद उत्पादन के लिए उत्कृष्ट मानी जाती हैं। यहाँ 'ग्रामजन्य' नाम की किसान संस्था इस प्राकृतिक उपहार को नई दिशा दे रही है। 'ग्रामजन्य' ने यहाँ एक आधुनिक processing unit बनाया, lab, bottling, storage और digital tracking जैसी सुविधाएँ जोड़ी गईं। अब यही शहद branded उत्पाद बनकर गाँवों से शहरों तक पहुँच रहा है। इस प्रयास का लाभ ढाई हजार से अधिक किसानों को मिला है।

कर्नाटका के ही तुमकुरु जिले में 'शिवगंगा कालंजिया' नाम की संस्था का प्रयास भी बहुत सराहनीय है। इनके द्वारा यहाँ हर सदस्य को शुरुआत में दो bee-boxes दिए जाते हैं। ऐसा करके इस संस्था ने अनेकों किसानों को अपने अभियान से जोड़ दिया है। अब इस संस्था से जुड़े किसान मिलकर शहद निकालते हैं, बेहतरीन packaging करते हैं और स्थानीय बाजार तक पहुँचाते हैं। इससे उन्हें लाखों की कमाई भी हो रही है। ऐसा ही एक उदाहरण नागालैंड के cliff-honey hunting का है। नागालैंड के चोकलांगन गाँव में खियामनि-याँगन जनजाति सदियों से शहद निकालने का काम करती आई हैं। यहाँ मधुमक्खियों पेड़ों पर नहीं बल्कि ऊँची चट्टानों पर अपने घर बनाती हैं। इसलिए शहद निकालने का काम भी बहुत जोखिम भरा होता है। इसलिए यहाँ के लोग मधुमक्खियों से पहले सौम्यता से बात करते हैं, उनसे अनुमति लेते हैं। उन्हें बताते हैं की आज वे शहद लेने आए हैं,



ON 25TH NOVEMBER, THE 'DHARMA DHWAJA' WAS HOISTED AT THE RAM TEMPLE IN AYODHYA



इसके बाद शहद निकालते हैं।

आज भारत honey production में नए रिकार्ड बना रहा है। 11 साल पहले देश में honey का उत्पादन 76 हजार मीट्रिक टन था। अब ये बढ़कर डेढ़ लाख मीट्रिक टन से भी ज्यादा हो गया है। बीते कुछ वर्षों में शहद का export भी तीन गुना से ज्यादा बढ़ गया है। Honey Mission कार्यक्रम के तहत खादी ग्रामोद्योग ने भी सवा 2 लाख से ज्यादा bee-boxes लोगों में बांटे हैं। इससे हजारों लोगों को रोजगार के नए अवसर मिले हैं। यानि देश के अलग-अलग कोनों में शहद की मिठास भी बढ़ रही है। और ये मिठास किसानों की आय भी बढ़ा रही है।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था, ये हम सभी जानते हैं। लेकिन युद्ध के इस अनुभव को अब आप वहाँ महाभारत अनुभव केंद्र में भी साक्षात महसूस कर सकते हैं। इस अनुभव केंद्र में महाभारत की गाथा को 3D, Light & Sound Show और digital technique से दिखाया जा रहा है।

कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में शामिल होना भी मेरे लिए बहुत विशेष रहा। मैं ये देखकर बहुत प्रभावित हुआ कि कैसे दुनिया भर के लोग दिव्य ग्रंथ गीता से प्रेरित हो रहे हैं। इस महोत्सव में यूरोप और सेंट्रल एशिया सहित विश्व के कई देशों के लोगों की भागीदारी रही है। इस महीने की शुरुआत में सऊदी अरब में पहली बार किसी सार्वजनिक मंच पर गीता की प्रस्तुति की गई है। यूरोप के लातविया में भी एक यादगार गीता महोत्सव आयोजित किया

गया। इस महोत्सव में लातविया, एस्टोनिया, लिथुआनिया और अल्जीरिया के कलाकारों ने बढ़-चढ़ करके हिस्सा लिया।

भारत की महान संस्कृति में शांति और करुणा का भाव सर्वोपरि रहा है। आप दूसरे विश्व युद्ध की कल्पना कीजिए, जब चारों ओर विनाश का भयावह माहौल बना हुआ था। ऐसे मुश्किल समय में गुजरात के नवानगर के जाम साहब, महाराजा दिग्विजय सिंह जी ने जो महान कार्य किया, वो आज भी हमें प्रेरणा देता है। उस समय जाम साहब, किसी सामरिक गठबंधन या युद्ध की रणनीति को लेकर नहीं सोच रहे थे। बल्कि उनकी चिंता ये थी कि कैसे विश्व युद्ध के बीच पोलिश यहूदी बच्चों की रक्षा हुई। उन्होंने गुजरात में तब हजारों बच्चों को शरण देकर उन्हें नया जीवन दिया, जो आज भी एक मिसाल है। कुछ दिन पहले दक्षिणी इजराइल के मोशाव नेवातिम में जाम साहब की प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह बहुत ही विशेष सम्मान था। पिछले वर्ष पोलैंड के वारसा में मुझे जाम साहब के स्मारक पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने का सौभाग्य मिला था।

कुछ दिनों पहले मैं Natural Farming के एक विशाल सम्मेलन में हिस्सा लेने कोयंबटूर गया था। दक्षिण भारत में Natural Farming को लेकर हो रहे प्रयासों को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। कितने ही युवा Highly Qualified Professional अब Natural Farming Field को अपना रहे हैं। मैंने वहाँ किसानों से बात की, उनसे अनुभव जाने। Natural Farming भारत की प्राचीन

परंपराओं का हिस्सा रही है और हम सभी का कर्तव्य है कि धरती माँ की रक्षा के लिए इसे निरंतर बढ़ावा दें।

विश्व की सबसे पुरानी भाषा और विश्व के सबसे प्राचीन शहरों में से एक शहर, इन दोनों का संगम हमेशा अद्भुत होता है। मैं बात कर रहा हूँ - 'काशी तमिल संगम' की। 2 दिसंबर से काशी के नमो घाट पर चौथा काशी-तमिल संगम शुरू हो रहा है। इस बार के काशी-तमिल संगम की थीम बहुत ही रोचक है - Learn Tamil - तमिल करकलम्। काशी-तमिल संगम उन सभी लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है जिन्हें तमिल भाषा से लगाव है। काशी के लोगों से जब भी बात होती है तो वो हमेशा बताते हैं कि काशी-तमिल संगम का हिस्सा बनना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। यहाँ उन्हें कुछ नया सीखने और नए-नए लोगों से मिलने का अवसर मिलता है। इस बार भी काशीवासी पूरे जोश और उत्साह के साथ तमिलनाडु से आने वाले अपने भाई-बहनों का स्वागत करने के लिए बहुत उत्सुक हैं। मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप काशी-तमिल संगम का हिस्सा जरूर बनें। इसके साथ ही ऐसे और भी मंचों के बारे में सोचें, जिनसे 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना मजबूत हो। यहाँ मैं एक बार फिर कहना चाहूँगा-

तमिल कलाच्चारम उयवानन्द

तमिल मोलि उयवानन्द

तमिल इन्दियाविन पेरुमिदम्।

Tamil culture is great.

Tamil language is great.

Tamil is the pride of India

जब भारत के सुरक्षा तंत्र को मजबूती मिलती है, तो हर भारतीय को गर्व होता है। मुंबई में INS 'माहे' को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। कुछ लोगों के बीच इसके स्वदेशी design को लेकर खूब चर्चा रही। वहीं, पुडुचेरी और मालाबार coast के लोग इसके नाम से ही खुश हो गए। दरअसल, इसका 'माहे' नाम उस स्थान माहे के नाम पर रखा गया है, जिसकी एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत रही है। केरला और तमिलनाडु के कई लोगों ने इस बात पर गौर किया कि इस युद्धपोत का crest उरुमी और कलारिपयट्टु की पारंपरिक लचीली तलवार की तरह दिखाई पड़ता है। ये हम सबके लिए गर्व की बात है कि हमारी नौसेना बहुत ही तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही है। 4 दिसम्बर को हम नौसेना दिवस भी मनाने जा रहे हैं। ये अवसर हमारे सैनिकों के अदम्य साहस और पराक्रम को सम्मान देने का एक खास दिन है।



जो लोग Navy से जुड़े tourism में रुचि रखते हैं, उनके लिए हमारे देश में बहुत सी जगह हैं, जहां जाकर उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। देश के पश्चिमी तट पर गुजरात के सोमनाथ के पास एक जिला है-दीव। दीव में 'INS खुखरी' को समर्पित Khukhri Memorial and Museum है। वहीं, Goa में 'naval aviation museum' है, जो Asia में अपनी तरह का अनूठा संग्रहालय है। Fort Kochi के INS द्रोणाचार्य में 'Indian Naval Maritime Museum' है। यहाँ हमारे देश की Maritime history और Indian Navy के evolution को देखा जा सकता है। श्रीविजयापुरम जिसे पहले Port Blair कहा जाता था, वहाँ 'समुद्रिका-Naval Marine Museum' उस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास को सामने लाने के लिए जाना जाता है। कारवार के रवीन्द्रनाथ टैगोर beach पर Warship Museum में मिसाइलों और हथियारों की replica रखी गई हैं। विशाखापत्तनम में भी एक submarine, helicopter और aircraft museum है, जो Indian Navy से जुड़ा है। मैं आप सभी से, विशेषकर military history में रुचि रखने वाले लोगों से आग्रह करता हूँ कि आप इन museums को देखने जरूर जाएँ।

सर्दियों आ गई हैं और साथ ही सर्दियों से जुड़े Tourism का भी समय आ गया है। दुनिया के कई देशों ने सर्दियों में होने वाले Tourism को, Winter Tourism को अपनी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा आधार बना दिया है। अनेक देशों में दुनिया के सबसे

सफल Winter Festival और Winter Sports model हैं। इन देशों ने Skiing, Snow-boarding, Snow Trekking, Ice Climbing जैसे अनुभवों को अपनी पहचान बनाया है। इन्होंने अपने winter festivals को भी वैश्विक आकर्षण में बदला है।

हमारे देश में भी winter tourism की हर क्षमता मौजूद है। हमारे पास पहाड़ भी हैं, संस्कृति भी है और adventure की असीम संभावनाएँ भी हैं। इन दिनों उत्तराखंड का winter tourism लोगों को बहुत आकर्षित कर रहा है। सर्दियों के मौसम में औली, मुनस्यारी, चोपटा और डेयारा जैसी जगहें खूब popular हो रही हैं। अभी कुछ सप्ताह पहले पिथौरागढ़ जिले में साढ़े चौदह हजार फुट से अधिक की ऊंचाई पर आदि कैलाश में राज्य की पहली High Altitude Ultra Run Marathon का आयोजन किया गया था। इसमें देश भर के 18 राज्यों से 750 से ज्यादा athletes ने हिस्सा लिया था। 60 किलोमीटर लंबी आदि कैलाश परिक्रमा रन का प्रारंभ कड़कड़ाती सर्दी में सुबह पाँच बजे हुआ था। इतनी ठंड के बावजूद भी लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। आदि कैलाश की यात्रा पर जहाँ तीन साल पहले तक मात्र दो हजार से कम पर्यटक आते थे, अब यह संख्या भी बढ़कर तीस हजार से अधिक हो गई है।

कुछ ही हफ्तों में उत्तराखंड में Winter Games का आयोजन भी होना है। देशभर के खिलाड़ी, adventure प्रेमी और खेलों से जुड़े लोग इस आयोजन को लेकर उत्साहित

हैं। Skiing हो या Snow-boarding, बर्फ पर होने वाले कई खेलों की तैयारियाँ शुरू हो चुकी हैं। उत्तराखंड ने winter tourism को बढ़ाने के लिए connectivity और infrastructure पर भी focus किया है। Homestay को लेकर नई policy भी बनाई गई है।

सर्दियों में Wed in India अभियान की भी अलग धूम होती है। सर्दियों की सुनहरी धूप हो, पहाड़ से उतरते कोहरे की चादर हो, Destination Wedding के लिए पहाड़ भी अब खूब popular हो रहे हैं। कई शादियाँ तो अब खास तौर पर गंगा जी के किनारे हो रही हैं।

सर्दियों के इन दिनों में हिमालय की वादियाँ एक ऐसे अनुभव का हिस्सा बन जाती हैं, जो जीवन भर साथ रहता है। अगर आप इस सर्दी में कहीं जाने का विचार कर रहे हैं। तो हिमालय की वादियों का विकल्प जरूर रखिएगा।

कुछ हफ्ते पहले मैं भूटान गया था। ऐसे दौरों में अलग अलग प्रकार के संवाद और चर्चाओं का अवसर मिलता है। अपनी इस यात्रा में मैंने भूटान के राजा, वर्तमान राजा के पिताजी जो खुद भी पहले राजा रह चुके हैं, वहाँ के प्रधानमंत्री और अन्य लोगों से मुलाकातें की। इस दौरान हर किसी से एक बात जरूर सुनने को मिली। सभी लोग वहाँ Buddhist relics यानि भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष भेजे जाने को लेकर भारतवासियों का आभार जता रहे थे। मैंने जब भी यह सुना, तो मेरा हृदय गर्व से भर उठा।

भगवान बुद्ध के पावन अवशेषों को लेकर कई अन्य देशों में भी ऐसा ही उत्साह देखने को मिला है। पिछले महीने ही National Museum से इन पवित्र अवशेषों को रूस के कलमीकिया ले जाया गया था। यहां बौद्ध धर्म का विशेष महत्व है। मुझे बताया गया कि इनके दर्शन के लिए रूस के दूरदराज से भी बहुत बड़ी संख्या में लोग वहाँ पहुंचे। इन पवित्र अवशेषों को मंगोलिया, वियतनाम और थाइलैंड भी ले जाया जा चुका है। हर जगह लोगों का भारी उत्साह देखने को मिला है। इनके दर्शन के लिए थाइलैंड के राजा भी पहुंचे थे। पूरे विश्व में भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों के प्रति इस प्रकार का गहरा जुड़ाव देखकर मन भावविभोर हो उठता है। यह सुनकर बहुत अच्छा लगता है कि कैसे इस तरह की कोई पहल दुनियाभर के लोगों को आपस में जोड़ने का माध्यम बन जाती है।

मैं आप सभी से हमेशा 'vocal for local' के मंत्र को साथ लेकर चलने की बात करता हूँ। अभी कुछ दिनों पहले G-20



...THEIR DRONE FINALLY MANAGED TO FLY FOR SOME TIME
IN MARS-LIKE CONDITIONS

शिखर सम्मेलन के दौरान जब विश्व के कई नेताओं को उपहार देने की बात आई, तो मैंने फिर कहा - 'vocal for local'। मैंने देशवासियों की ओर से विश्व के नेताओं को जो उपहार भेंट किए, उसमें इस भावना का विशेष ध्यान रखा गया। G-20 के दौरान, मैंने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति को नटराज की कांस्य प्रतिमा भेंट की। ये तमिलनाडु के तंजावुर की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी चोल कालीन शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण है। कनाडा के प्रधानमंत्री को चांदी के अश्व की प्रतिकृति दी गई। यह राजस्थान के उदयपुर की बेहतरीन शिल्पकला को दर्शाती है। जापान के प्रधानमंत्री को चांदी की बुद्ध की प्रतिकृति भेंट की गई। इसमें तेलंगाना और करीमनगर की प्रसिद्ध Silver Craft की बारीकी का पता चलता है। इटली की प्रधानमंत्री को फूलों की आकृतियों वाला silver mirror उपहार में दिया। ये भी करीमनगर की ही पारंपरिक धातु शिल्पकला को प्रदर्शित करता है। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री को मैंने Brass उरली भेंट की, ये केरला के मन्नार का एक उत्कृष्ट शिल्प है। मेरा उद्देश्य था कि दुनिया भारतीय शिल्प, कला और परंपरा के बारे में जानें। और हमारे कारीगरों की प्रतिभा को Global मंच मिले।

मुझे खुशी है कि 'vocal for local' की भावना को देश के करोड़ों लोगों ने अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। इस साल जब आप त्योहारों की खरीदारी के लिए बाजार में गए होंगे, तो एक बात आप सभी ने महसूस की होगी। लोगों की पसंद, और घरों में आने वाले

सामानों में, एक साफ संकेत दिखाई दे रहा था कि देश स्वदेशी की ओर लौट रहा है। लोग अपने मन से भारतीय उत्पादों को चुन रहे थे। इस बदलाव को छोटे से छोटे दुकानदार ने भी महसूस किया। इस बार युवाओं ने भी 'vocal for local' अभियान को गति दी। आने वाले कुछ दिन में Christmas और नए वर्ष पर खरीदारी का नया दौर शुरू होने वाला है। मैं आपको फिर याद दिलाऊंगा, 'vocal for local' का मंत्र याद रखें, खरीदे वही जो देश में बना हो, बेचें वही जिसमें किसी देशवासी की मेहनत लगी हो।

भारतीय खेलों के लिहाज से ये महीना super hit रहा है। इस महीने की शुरुआत भारतीय महिला टीम द्वारा आईसीसी महिला विश्व कप जीतने से शुरू हुई। लेकिन उसके बाद भी मैदान पर और ज्यादा action देखने को मिला है। कुछ दिन पहले ही Tokyo में Deaf-Olympics हुए हैं, जहाँ भारत ने अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 20 medals जीते हैं। हमारी महिला खिलाड़ियों ने भी कबड्डी वर्ल्ड कप जीतकर इतिहास ही रच दिया। पूरे tournament में उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन करके, हर भारतवासी का मन जीत लिया। World Boxing Cup Finals में भी हमारे खिलाड़ियों का प्रदर्शन शानदार रहा, जहाँ उन्होंने 20 medals जीते।

जिस बात की ओर भी अधिक चर्चा हो रही है, वो है हमारी महिला टीम का Blind Cricket World Cup जीतना। बड़ी बात यह है कि हमारी इस टीम ने बिना एक भी

मैच हारे, इस tournament को जीता है। देशवासियों को इस टीम के हर खिलाड़ी पर बहुत गर्व है। मेरी इस टीम से मुलाकात हुई। वाकई इस टीम का हौसला, उनका जज्बा हमें बहुत कुछ सिखाता है। यह विजय हमारे खेल इतिहास की सबसे बड़ी जीतों में से एक है, जो हर भारतीय को प्रेरित करती रहेगी।

आजकल हमारे देश में Endurance Sports की एक नई खेल संस्कृति भी तेजी से उभर रही है। Endurance Sports से मेरा मतलब, ऐसी sports activities से है, जिनमें आपकी limits की परख होती है। कुछ साल पहले तक Marathon और Bikethon जैसे खास event कुछ विशेष लोगों तक ही सीमित थे। लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका है। देशभर में हर महीने 1500 से ज्यादा Endurance Sports का आयोजन होता है। इन events में हिस्सा लेने के लिए athletes दूर-दूर तक जाते हैं।

Endurance Sports का ही एक उदाहरण है - Ironman Triathlon आप कल्पना करिए, यदि आपको यह बताया जाए कि आपके पास एक दिन से भी कम समय है और आपको ये तीन काम करने हैं - समंदर में 4 किलोमीटर तक तैरना, 180 किलोमीटर साइकिल चलाना और करीब 42 किलोमीटर की marathon दौड़ लगाना। तो आप सोचेंगे कि ये कैसे संभव है। लेकिन फौलादी हौसले वाले लोग इस काम को भी सफलतापूर्वक कर ले जाते हैं। इसलिए इसे Ironman Triathlon कहा जाता है। गोवा में हाल ही में ऐसा ही एक आयोजन किया गया। आजकल इस तरह के आयोजनों में भी लोग बढ़-चढ़कर भागीदारी कर रहे हैं। ऐसी कई और प्रतियोगिताएं भी हैं, जो हमारे युवा साथियों के बीच बहुत लोकप्रिय हो रही हैं। आजकल कई लोग Fit India Sundays on Cycle जैसे कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए साथ आ रहे हैं। ये सब ऐसी चीजें हैं, जिनसे fitness को बढ़ावा मिल रहा है।

आपसे हर महीने मिलना मेरे लिए हमेशा एक नया अनुभव होता है। आपकी गाथाएं, आपके प्रयास, मुझे नए सिरे से प्रेरित करते हैं। अपने संदेशों में आप जो सुझाव भेजते हैं, जो अनुभव साझा करते हैं, उससे हमें इस कार्यक्रम में भारत की विविधता को समेट लेने की प्रेरणा मिलती है। जब हम अगले महीने मिलेंगे तब 2025 खत्म होने वाला होगा। देश के ज्यादातर हिस्सों में अब ठंड भी तेज होती जाएगी। सर्दियों के मौसम में आप अपना और अपने परिवार का विशेष ध्यान रखें। ■



परिचय

अटल बिहारी वाजपेयी

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं शंकर का वह क्रोधानल कर सकता जगती क्षार-क्षार।
डमरू की वह प्रलय-ध्वनि हूँ जिसमें नचता भीषण संहार।
रणचण्डी की अतृप्त प्यास, मैं दुर्गा का उन्मत्त हास।
मैं यम की प्रलयंकर पुकार, जलते मरघट का धुआँधार।

फिर अन्तरतम की ज्वाला से, जगती में आग लगा दूँ मैं।
यदि धधक उठे जल, थल, अम्बर, जड़, चेतन तो कैसा विस्मय?

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं आदि पुरुष, निर्भयता का वरदान लिए आया भू पर।
पय पी कर सब मरते आए, मैं अमर हुआ तो विष पी कर।
अधरों की प्यास बुझाई है, पी कर मैंने वह आग प्रखर।
हो जाती दुनिया भरस्मसात्, जिसको पल भर में ही छू कर।

भय से व्याकुल फिर दुनिया ने प्रारंभ किया मेरा पूजन।
मैं नर, नारायण, नीलकंठ बन गया न इस में कुछ संशय।

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं अखिल विश्व का गुरु महान्, देता विद्या का अमरदान।
मैंने दिखलाया मुक्ति-मार्ग, मैंने सिखलाया ब्रह्मज्ञान।
मेरे वेदों का ज्ञान अमर, मेरे वेदों की ज्योति प्रखर।
मानव के मन का अंधकार, क्या कभी सामने सका ठहर?
मेरा स्वर नभ में घहर-घहर, सागर के जल में छहर-छहर।

इस कोने से उस कोने तक, कर सकता जगती सौरभमय।
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं तेजपुंज, तमलीन जगत में फैलाया मैंने प्रकाश।
जगती का रच करके विनाश, कब चाहा है निज का विकास?
शरणागत की रक्षा की है, मैंने अपना जीवन दे कर।
विश्वास नहीं यदि आता तो साक्षी है यह इतिहास अमर।

यदि आज देहली के खण्डहर, सदियों की निद्रा से जगकर।
गुंजार उठे ऊँचे स्वर से 'हिन्दू की जय' तो क्या विस्मय?

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

दुनिया के वीराने पथ पर जब-जब नर ने खाई ठोकर।
दो आँसू शेष बचा पाया जब-जब मानव सब कुछ खोकर।
मैं आया तभी द्रवित हो कर, मैं आया ज्ञानदीप ले कर।
भूला-भटका मानव पथ पर चल निकला सोते से जग कर।

पथ के आवर्तों से थक कर, जो बैठ गया आधे पथ पर।
उस नर को राह दिखाना ही मेरा सदैव का दृढ़ निश्चय।

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैंने छाती का लहू पिला पाले विदेश के क्षुधित लाल।
मुझ को मानव में भेद नहीं, मेरा अन्तस्थल वर विशाल।
जग के ठुकराए लोगों को, लो मेरे घर का खुला द्वार।
अपना सब कुछ हूँ लुटा चुका, फिर भी अक्षय है धनागार।

मेरा हीरा पाकर ज्योतिष परकीयों का वह राजमुकुट।
यदि इन चरणों पर झुक जाए कल वह किरीट तो क्या विस्मय?

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं वीर पुत्र, मेरी जननी के जगती में जौहर अपार।
अकबर के पुत्रों से पूछो, क्या याद उन्हें मीनाबजार?
क्या याद उन्हें चित्तौड़ दुर्ग में जलने वाली आग प्रखर?
जब हाय सहस्रों माताएं, तिल-तिल जल कर हो गईं अमर।

वह बुझने वाली आग नहीं, रग-रग में उसे समाए हूँ।
यदि कभी अचानक फूट पड़े विप्लव लेकर तो क्या विस्मय?

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है कर लूँ जग को गुलाम?
मैंने तो सदा सिखाया है करना अपने मन को गुलाम।
गोपाल-राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किए?
कब दुनिया को हिन्दू करने घर-घर में नरसंहार किए?

कोई बतलाए काबुल में जा कर कितनी मस्जिद तोड़ीं?
भूभाग नहीं, शत-शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय।

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं एक बिंदु, परिपूर्ण सिन्धु है यह मेरा हिन्दू समाज।
मेरा-इसका सम्बन्ध अमर, मैं व्यक्ति और यह है समाज।
इससे मैंने पाया तन-मन, इससे मैंने पाया जीवन।
मेरा तो बस कर्तव्य यही, कर दूँ सब कुछ इसके अर्पण।

मैं तो समाज की थाती हूँ, मैं तो समाज का हूँ सेवक।
मैं तो समष्टि के लिए व्यष्टि का कर सकता बलिदान अभय।

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर

डॉ. भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्व वर्ण रंजित था। गरीबी में जन्म लेकर जीवन भर अस्पृश्यता का अपमान कारक बिल्ला माथे पर लेकर सैकड़ों कष्टों से झुलसते हुए वे आगे बढ़े। फिर भी समस्याओं के सामने न झुककर हर पग पर लड़ते-जूझते मेधावी प्राध्यापक, यथार्थवादी शिक्षाशास्त्री, उच्च कोटि के अर्थशास्त्रज्ञ, समर्थ न्यायवादी, गंभीर ग्रंथलेखक, दलित-पीड़ित-शोषितों के सामाजिक तिरस्कार जनित दुःख को दूर कराने वाले संघर्षकर्ता, अभिनव स्मृतिकार और दूरदर्शी समाज सुधारक के रूप में इन प्रशस्त्य गुणों से भरा था उनका जीवन। अपने जीवन में उनकी निज साधनाजन्य उपलिब्धियों के शिखरों में से ये कुछ हैं। व्यक्ति में निःस्वार्थ महत्वाकांक्षा और उसे पाने के लिए अथक परिश्रम एवं आवश्यक पसीना बहाने योग्य मानसिक शारीरिक स्थिरता हो तो उसका जीवन किस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से उन्नति की ओर बढ़ सकता है महोन्नति तक पहुँच सकता है इसके लिए एक अंबेडकर का उदाहरण ही पर्याप्त है। अपने सामने रखे, प्रांजल ध्येयवाद के कारण उन्होंने अपार कार्य सामर्थ्य, विलक्षण नैतिक पौरुष प्राप्त किया था। एक ओर पांडित्यपूर्ण चिंतन और दूसरी ओर ईमानदारी से भरी क्रियाशीलतायें दोनों तानेबाने के धागे बनकर उनके जीवन में बुन चुके थे। इसीलिए वे स्वयं ही नहीं, अपने समूचे समुदाय को ऊपर उठाने में सफल हुए।



कुछ समकालीन नेताओं और विविध-पत्र दुष्टताओं के खिलाफ विद्रोह के प्रतीक थे। डॉ. अंबेडकर के प्रति विचार यहाँ प्रस्तुत हैं जिनसे उनके हिमगिरि शिखर जैसे उन्नत व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं: 'वे बहुत प्रखर न्यायिक प्रज्ञा रखने वाले, सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। अपार विद्वत्ता संपन्न, स्वाभिमानी और निःसंकोच होने के साथ ही सहृदय व्यक्ति थे। उचित ढंग से और निष्कलंक मन से संपर्क करने वालों के प्रति वे स्नेहशील थे।'

(चक्रवर्ती राजगोपालचारी, भारत के प्रथम गवर्नर जनरल)

संविधान रचना समिति के लिए अंबेडकर को अध्यक्ष नियुक्त करने का अत्यंत उचित निर्णय

किया समिति ने। शायद इससे अच्छा निर्णय और कोई हो नहीं सकता था। उन्होंने अपने कर्तव्य या दायित्व को न केवल दक्षता से पूरा किया, अपितु उसको अधिक ऊँची गुणवत्ता प्रदान की।

इस पद के समर्थ निर्वाह से यह

सिद्ध हो चुका है उनका चुनाव सभी प्रकार से सुयोग्य है।'

'अंबेडकर का

व्यक्तित्व, विद्वता, संगठन

कौशल और प्रभावी

नेतृत्व जैसे गुणों का संगम

है। इसीलिए वे देश के

आधार स्तंभ माने गये हैं।

अस्पृश्यता के निवारण में तथा

लाखों अस्पृश्यों में आत्मविश्वास

और आत्मशक्ति जगाने में उनको जितनी

सफलता मिली है वह सचमुच भारत के लिए उनकी बड़ी सेवा है। उनका कार्य बहुत समय तक रहने वाला है। वह स्वदेशाभिमान तथा मानवता से प्रेरित कार्य है। अस्पृश्य कहलाने वाली जाति में अंबेडकर जैसे महान व्यक्ति का जन्म लेना ही अस्पृश्यों के मन की निराश भावना को मिटा देने वाली बात थी। अंबेडकर के जीवन से प्रेरित होकर ये लोग अन्य लोगों की प्रगति के साथ-साथ ऊपर उठने का साहसपूर्ण प्रयत्न करने में पीछे नहीं रहेंगे। अंबेडकर के व्यक्तित्व को, उनके कार्य को मैं आदरांजलि समर्पित करता हूँ। उनकी दीर्घायु, आरोग्य और सफल जीवन के लिए शुभ कामना समर्पित करता हूँ।'

(क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर द्वारा डॉ. अंबेडकर के पचासवें जन्मदिन पर प्रेषित भावपूर्ण संदेश)

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के 73वें जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक प.पू. श्री गुरुजी ने लिखा पूर्ण पत्र यहाँ दिया जा रहा है:

दिनांक 09.08.1963

आपने चाहा कि मैं एक लेख लिख भेजूँ। इस प्रकार आपने मुझे बहुत गौरवान्वित किया। इस प्रकार के सम्मान के लिए मैं बिल्कुल योग्य नहीं हूँ, क्योंकि लेख लिखने का अभ्यास मुझे नहीं है। फिर भी वंदनीय डॉ. अंबेडकर की पुण्य स्मृति में श्रद्धा समर्पित करना अपना पवित्र कर्तव्य मानता हूँ। भारत के संदेश की गर्जना से सारे संसार को चकित कर देने वाला स्वामी विवेकानंद का एक संदेश है: दीन, दरिद्र, दुर्बल, अज्ञान में

तड़फड़ाने वाले, भारतवासी मेरे लिए देव समान हैं। उनकी सेवा में लगना, उनकी चेतना जगाना, उनके जीवन को सुखमय बनाकर उन्नत करना यही सचमुच में भगवान की सेवा है। अपने समाज की 'छुओ मत' वाली असत् प्रवृत्ति को देखकर उससे उदित सभी प्रकार की रूढ़ियों पर स्वामी जी ने कठोर प्रहार किया है। नये समाज की रचना के लिए उन्होंने सारे संसार को जागृति का आव्हान किया। उस पुकार को अपने प्रत्यक्ष आचरण में उतारने, आवेश के साथ सामने आये डॉ. अंबेडकर। राजनीतिक तथा सामाजिक अवहेलनाओं से क्रुद्ध अंबेडकर अलग-अलग शब्दों में अलग-अलग मार्गों से इस कार्य में जुट गये। इस समाज में अज्ञान, अपमान और दुःख से पीड़ित एक बड़े महत्वपूर्ण भाग को आत्मसम्मान के साथ खड़ा करने का उनका कार्य असाधारण है। राष्ट्र के लिए यह उनका बहुत बड़ा उपकार है। उनका ऋण चुकाना सरल कार्य नहीं।

'श्री शंकराचार्य की जैसी कुशाग्र बुद्धि और भगवान बुद्ध जैसे परम कारुण्य पूर्ण उदार हृदय के संगम से ही भारत का उद्धार संभव है।' यह स्वामी विवेकानंद का कहना था। बौद्धमत स्वीकार कर उसे पुनः गतिशील बनाते हुए डॉ. अंबेडकर ने स्वामी जी के बताये मार्ग पर एक महत्वपूर्ण कदम रखा है। अंबेडकर की तीक्ष्ण चिकित्सक बुद्धि को तत्त्वज्ञान की दृष्टि से बौद्धमत में कुछ कमियाँ भी दिखाई देती थी। उनके सुधार पर प्रस्ताव भी उन्होंने किया। लेकिन जीवन में समानता, शुचित्व, आपस में यथार्थ पूर्ण स्नेहशीलता जैसे उसके गुणों के कारण मानव सेवा का विशुद्ध प्रेम जागृत होता है। बौद्ध मत पर श्रद्धा से उत्पन्न होने वाली यह प्रेरणा हमारे राष्ट्र के समस्त मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। मेरा विचार है कि इस तत्व को पहचान कर ही डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध मत को स्वीकारा होगा। भूतकाल में समाज सुधार के लिए भगवान बुद्ध ने प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना की थी, समाज से कटकर अलग होने के लिए नहीं। वर्तमान काल में भी डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने समाज की भलाई के लिए, धर्म के हित के लिए, हमारे चिरंजीवी समाज को दोष मुक्त शुद्ध बनाने की दृष्टि से काम किया, समाज से कटकर अन्य पंथ बनाने की दृष्टि से नहीं। अतएव डॉ. अंबेडकर भगवान बुद्ध के उत्तराधिकारी हैं, इस स्वरूप से उनकी पवित्र स्मृति में अपना हार्दिक प्रणाम अर्पित करता हूँ। ■

धर्मो रक्षति रक्षितः

पं. मदन मोहन मालवीय

सृष्टि के आदि से जब से हिन्दू जाति, आर्य-सन्तानों का कुछ इतिहास हमको मिलता है, उस समय से आज तक सब समय में और सब दशाओं में सतयुग, त्रेता और द्वापर में और कलियुग में भी, यदि हिन्दू जाति ने कोई सबसे अधिक विशेषता दिखलायी है तो वह उसका धर्म का प्रेम, धर्म का हठ है। वेदों में और उपनिषदों में, स्मृतियों में और धर्मशास्त्रों में, इतिहासों में और पुराणों में और अन्ततः काव्यों में और नाटकों में, पृथ्वीराज के रासों में और आल्हा-ऊदल की कथा में, टाड के राजस्थान में और विदेशीय यात्रियों के लेखों में, यदि आर्य सन्तान का कोई एक गुण सबसे अधिक जाज्वल्यमान पाया गया है तो वह उसका धर्म का प्रेम है। राजा हरिश्चन्द्र ने राज्य त्याग दिया, अपने को बेच दिया, केवल धर्म की रक्षा के लिए। दशरथजी ने अपने प्राण से अधिक प्रिय पुत्र युवराज रामचन्द्र को वन भेज दिया, और उनके विरह में अपना प्राण त्याग दिया-केवल धर्म के लिए। भगवान रामचन्द्र ने राज्य-सिंहासन की संपदा और सुख को छोड़कर वन-वन में घूमने का व्रत धारण किया, केवल अपने धर्म के लिए। जब वे वन को जाने लगे, तब माता कौशल्या ने हृदय के दुःख को रोक कर उनका जो मंगल मनाया उस समय कहा है-

**यं पालयसि धर्मं त्वं प्रीत्या च नियमेन च।
स वै राधवशार्दूल धर्मस्त्वामभिरक्षतु॥**

अर्थात् हे रघुकुलशार्दूल! जिस धर्म का तुम प्रीति और नियम के साथ पालन करके वन को जाते हो वही धर्म तुम्हारी रक्षा करे।

पतिव्रता-शिरोमणि सीता ने धर्म ही का पालन करने में अयोध्या का सब सुख छोड़कर वनचारिणी का वेश धारण कर अपने प्राणपति के साथ वन की यात्रा की थी और सोने की लंका के स्वामी तीन लोक को कंपनी वाले प्रचंड प्रतापशाली रावण ने उनको जब अनेक प्रकार का लालच और डर दिखाया, तब धर्म ही का प्रेम था, जिसके कारण पतिव्रताओं की सिरमौर सीता ने उस पापी के सहस्रों प्रलोभनों का तिरस्कार कर उससे कहा-

**श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता
सत नहिं टरई।**

द्वापर में भगवान कृष्णचन्द्र ने धर्म की रक्षा के लिए ही कंस और उसके साथी राक्षसगणों को



**संसार में ज्ञान प्राप्त
करके, जो दूसरों को ज्ञान
नहीं देता, उसके ऊपर
ज्ञानरूपी ईश्वर अप्रसन्न
से दिखलायी देते हैं।**

मारा था और उत्तरा के मरे हुए पुत्र के जिलाने के समय ही कहा था-

**यथा कंसश्च केशी व धर्मण निहतौ मया।
तेन सत्येन बालोऽद्य पुनः संजीवतादयम्॥**

अर्थात् जैसे मैंने धर्मपूर्वक कंस और केशी को मारा था उसी सत्य के बल से आज यह बालक जी उठे। भगवान कृष्णचन्द्र के विषय में अधिक विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रसिद्ध वचन 'यतो धर्मस्ततो कृष्णः, यतो कृष्णास्ततो जयः' उनके समस्त उपदेश और कार्यों को संक्षेप में प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त धर्मराज युधिष्ठिर और उनके चार धर्मचारी भाईयों का पवित्र चरित्र, आदि से अन्त तक, बड़े संकट में भी धर्म पालन करने की कथा है। उनका समस्त आचरण धर्मात्मा युधिष्ठिर के इस एक वचन से भली भाँति प्रकाशित हो जाता है कि -

**मम प्रतिज्ञां च निबोध सत्यां,
वृणे धर्मममृताज्जीविताच्च।**

**राज्यं च पुत्राश्च यशो धनं च,
सर्वं न सत्यस्य कलामुपैति॥**

अर्थात् 'मेरी प्रतिज्ञा को सत्य जानो। मैं धर्म को जीवन से और मोक्ष से भी अधिक अच्छा समझता हूँ। राज्य और पुत्र एवं यश और धन-ये सत्य की एक कला के बराबर भी नहीं हैं।'

आधुनिक समय में जब से इस देश पर यवनों का आक्रमण प्रारम्भ हुआ, तब से भी लाखों आर्य सन्तानों और आर्य ललनाओं ने प्राण दे करके अपने धर्म की रक्षा की है और अपने रूधिर से भारतभूमि पर ये अमिट वाक्य लिख दिया है -
प्राण जाहिं बरु धर्म न जाहिं॥

चित्तौड़ और राजपूताना की अनन्य वीरभूमि में जहां आर्य ललनाओं ने चिता लगाकर अपने सुकुमार शरीर को जला देना स्वीकार किया, किन्तु अपने धर्म से डिगने का विचार तक मन में नहीं आने दिया और जिस भूमि में सहस्रों वीर क्षत्रीय शत्रु से लड़ते-लड़ते मर गए और उनको माथा नहीं नवाया, उसी के वीरों का यह सिंहनाद था-
जो हठ राखै धर्म की, तेहि राखै करतार।

न केवल राजपूताना में अपितु भारतवर्ष के सभी छोटे और बड़े, ऊँचे और नीचे विभागों में हिमालय के ऊँचे शिखरों पर और समुद्र के तट पर अनन्त आर्य सन्तान कठिन से कठिन समय में भी प्राण को पण कर अपने आर्य धर्म की रक्षा करते चले आए हैं। औरंगजेब के समय में क्या-क्या अत्याचार हिन्दुओं पर नहीं हुए, कितने द्विजों के माथे का तिलक नहीं मिटा दिया गया, कितनों के जनेऊ नहीं उतार लिये गए, किन्तु उस समय भी करोड़ों हिन्दू अपने धर्म से नहीं डिगे।

इतिहास के पढ़ने वालों को उस समय के विकराल अत्याचारों की कुछ आभामात्र दिखायी देती है। छत्रपति शिवाजी का नाम यदि आर्य सन्तान आज आदर, धन्यवाद और हर्ष के साथ स्मरण करती है, तो इसका कारण उस अत्याचार की पराकाष्ठा है जो हिन्दुओं को औरंगजेब के समय में सहना पड़ता था और जिससे शिवाजी ने उनको छुड़ा कर फिर आर्य धर्म को सनाथ और सजीव किया था। लेख के विस्तार करने की आवश्यकता नहीं। सब विदेशी लेखक भी इस बात को स्वीकार करते आए हैं कि इतिहास के आदि से हिन्दू समाज एक धर्मप्रधान समाज चला आया है। आर्य सन्तान धर्म को सबसे बड़ा धन मानते आए हैं। राज्य खो दिया है, धन-धान्य त्याग दिया है, बन्धुओं का बिछोह सह लिया है, और प्राण को भी त्याग दिया है, किन्तु सामर्थ्य रहते अपने धर्म का त्याग नहीं किया और कैसे करें? भगवान श्रीकृष्ण गीता में कह गए हैं-

स्वधर्मं निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

और वेदव्यास जी ने सब वेदों और पुराणों के

उपदेशों के निचोड़ को महाभारत के अंत के इस उपदेश में भर दिया है-

न जातु कामान्न भयान्न लोभात्,
धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हे तोः।

धर्मो नित्यः सुखं दुःखं त्वनित्यं,
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्व नित्यः॥

अर्थात्- 'धर्म को कभी काम के वश होकर, भय से अथवा किसी प्रकार के लोभ में पड़कर भी कभी न छोड़े। प्राण बचाने के लिए भी न छोड़े। धर्म अविनाशी है, सुख और दुख आते-जाते हैं, जीव अविनाशी है, जिन कारणों से वह देह को धारण करता है, वे अनित्य हैं।'

हमको विश्वास है कि यदि आर्य सन्तानों को उनके धर्म का उपदेश होता जायेगा, तो जब से पृथ्वीमंडल पर वेद और उपनिषद्, स्मृति और पुराण, रामायण और महाभारत स्थित है। जब तक गंगा और यमुना, सिंधु और गोदावरी और अन्य पुण्यतोया नदियां भारतभूमि पर प्रवाहित हैं, जब तक मरीचिमालि भगवान सूर्य तथा सुधा-रश्मि चन्द्रमा ईश्वर की महिमा का स्मरण दिलाते भारत के गगनमंडल में उदित होते हैं- तब तक भारत सन्तान अपने पवित्र पुरातन परम उत्कृष्ट धर्म का कदापि त्याग न करेंगे। किन्तु हमारा हृदय इस बात को सोचकर दुःखित होता है कि जिस धर्म को हमारे पूर्वजों ने, हमारे भाइयों ने और हमारी बहनों ने अनेक प्रकार की यातनाएं सहने पर, अनेक प्रकार का लालच दिखाये जाने पर भी नहीं छोड़ा, उस धर्म की महिमा न जानने के कारण आज हम उसकी उपेक्षा करने लगे हैं।

हम उस लोभ के वश में हो रहे हैं, जिसको भीष्म पितामहजी ने सब पापों का मूल कहा है और जिसके विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है-

यशो यशस्विनां शुद्धं श्लाघ्या ये गुणिनां गुणाः।
लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति शिवत्रो
रूपमिवेप्सितम्॥

अर्थात्- 'जिस प्रकार सुन्दर रूप को श्वेत कुष्ठ का एक छोटा सा भी दाग नष्ट कर देता है, उसी प्रकार थोड़ा सा लोभ भी यशस्वियों के शुद्ध यश को और गुणवानों के प्रशंसनीय गुणों को नष्ट कर देता है।'

जो लोग अज्ञान के कारण अपने धर्म से विमुख हो जाते हैं, उनके विषय में समस्त हिन्दू अपराधी हैं, जो अपने धर्म का ज्ञान अपने भाइयों में नहीं फैलाते।

ज्ञानं प्राप्यं तु संसारे यः परेभ्यो न यच्छति।

ज्ञानरूपी हरिस्तस्मै अप्रसन्नो हि लक्ष्यते॥

अर्थात्- 'संसार में ज्ञान प्राप्त करके, जो दूसरों को ज्ञान नहीं देता, उसके ऊपर ज्ञानरूपी ईश्वर अप्रसन्न से दिखलायी देते हैं।' ■

प्रस्तुती - पं. सलिल मालवीय

सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक उद्बोधन

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है।

पं. नेहरू ने राष्ट्रपति के सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के लिए जाने का जोरदार विरोध किया। लेकिन राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने उनके विरोध की ओर ध्यान नहीं दिया और अपने वचन का पालन किया। इस अवसर पर दिया गया उनका भाषण भारत के किसी राष्ट्रपति द्वारा पंथनिरपेक्षवाद पर दिए गए सबसे महत्वपूर्ण भाषणों में एक है। सृष्टि अथवा ब्रह्मांड की रचना करने वाले ब्रह्मा भी भगवान विष्णु की नाभि में रहते हैं। इसी तरह मनुष्य के हृदय में भी सृजन-शक्ति और धार्मिक आस्था का वास होता है, जो संसार के



बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों, बड़ी-बड़ी सेनाओं और सम्राटों की शक्ति से भी बढ़कर है। प्राचीन युग में भारत सोने और चांदी का भंडार था। सदियों पूर्व दुनिया के कुल सोने का अधिकांश भाग भारत के मंदिरों में था। मेरा विश्वास है कि सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार उस दिन पूर्ण होगा जब इस आधारशिला पर न केवल एक भव्य मूर्ति खड़ी होगी, बल्कि उसके साथ ही भारत की वास्तविक समृद्धि का महल भी खड़ा होगा, वह समृद्धि जिसका सोमनाथ का यह प्राचीन मंदिर प्रतीक रहा है।

सोमनाथ मंदिर को राष्ट्रीय श्रद्धा व विश्वास का प्रतीक बताते हुए राजेन्द्र बाबू ने आगे कहा था- अपने ध्वंसावशेषों से ही पुनः पुनः खड़ा होने वाला सोमनाथ का यह मंदिर पुकार-पुकार कर दुनिया से कह रहा है कि जिसके प्रति लोगों के हृदय में अगाध श्रद्धा है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। आज जो कुछ हम कर रहे हैं, वह इतिहास के परिमार्जन के लिए नहीं है। हमारा एकमात्र उद्देश्य अपने परंपरागत मूल्यों, आदर्शों और श्रद्धा के प्रति अपने लगाव को एक बार फिर दोहराना है, जिन पर आदिकाल से ही हमारे धर्म और धार्मिक विश्वास की इमारत खड़ी हुई है। यहाँ यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार की पाकिस्तान ने कड़ी निंदा की थी। इस संबंध में भारत सरकार की निंदा के लिए कराची में एक जनसभा भी आयोजित की गई थी।

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है। वह अपनी सांस्कृतिक विरासत भी खो बैठता है, और यही सांस्कृतिक विरासत भारत की आत्मा है। महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शुभाशीष से भारत सरकार की ओर से सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार करके सरदार पटेल और के.एम. मुंशी ने यह गौरवपूर्ण प्रमाण दे दिया कि भारत में वह दृढ़ इच्छा शक्ति है, जिसके बल पर वह धर्मांधता से प्रेरित विदेशी आक्रमणों के इतिहास को मिटाकर अपने खोए हुए सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्राप्त कर सकता है, और अपना मस्तक ऊँचा करके खड़ा रह सकता है। इस संदर्भ में देखा जाए तो सोमनाथ मंदिर भारत भर में स्थित सैकड़ों-हजारों मंदिरों से सचमुच बिल्कुल अलग और अनोखा है। ■

ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है : लालकृष्ण आडवाणी

बहुतों को पं. दीनदयाल जी को प्रत्यक्ष देखने का शायद अवसर न मिला हो, लेकिन दीनदयाल जी की संगठन में जो भूमिका थी और जिसके कारण संगठन इतना व्यापक और मजबूत बना है, वो गुण अगर किसी में कूट-कूट कर भरे हुए थे, तो कह सकते हैं वह कुशाभाऊ ठाकरे में थे। खासकर स्वयं के बारे में कभी न सोचने की प्रवृत्ति, केवल संगठन कार्य के बारे में सोचना और उसी के लिए समर्पित जीवन बिताना। वो प्रकृति से इतने सरल थे कि पिछले दिनों में उनके देहान्त के बाद जो बातें छपी, वो पढ़-पढ़ के लोग हैरान होते हैं कि जिस पार्टी की केन्द्र में सत्ता हो और उस पार्टी का प्रमुख व्यक्ति जो उसके अध्यक्ष रहे, वह कहाँ रहते थे? उनके कमरे को कोई जाकर देखेगा, जहाँ वो रहते थे, अकल्पनीय है। इतना सादगीपूर्ण जीवन। कभी कामना नहीं की कि मैं किसी अच्छे स्थान पर रहूँ। एक बार रहना पड़ा था अध्यक्ष के नाते, लेकिन जिस दिन अध्यक्षता पूर्ण हुई उसके अगले दिन वापस आकर भाजपा मुख्यालय स्थित कमरे में रहने लगे। मुझे रायपुर या भोपाल में प्रवास के दौरान ऐसा महसूस होता है कि उनके जीवन की एक बहुत बड़ी साज पूरी हुई। हममें से जिन लोगों ने देश भर में भाजपा का कार्य देखा है, वे इस बात को स्वीकार करेंगे कि बाकी प्रदेशों में पार्टी का उतार-चढ़ाव होता रहा होगा, कभी सत्ता पक्ष बना, कभी विपक्ष बना लेकिन अगर कोई ऐसा एक क्षेत्र है कि जहाँ पर पार्टी का विस्तार और पार्टी का कार्य सर्वाधिक मजबूत हुआ और सबसे गहरे रूप में पार्टी का प्रभाव बढ़ा तो वो शायद मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए हजारों कार्यकर्ताओं ने परिश्रम किया है, लेकिन अगर किसी एक व्यक्ति को उसका सबसे अधिक श्रेय दिया जा सकता है तो वह कुशाभाऊ ठाकरे को है। जिन्होंने जनसंघ की स्थापना से लेकर भाजपा के इस सशक्त रूप को प्राप्त करने में अथक परिश्रम किया। पहले उन्होंने जनसंघ के मध्य भारत प्रान्त के संगठन मंत्री के रूप में कार्य



किया। आगे चलकर व्यवस्था थोड़ी बदली तो संगठन मंत्री के स्थान पर मंत्री का दायित्व संभाला और फिर आगे चलकर के उनको केन्द्र में जवाबदारी मिली और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने। भले ही दायित्व उनका राष्ट्रीय अध्यक्ष का था, लेकिन प्रकृति से वे संगठन मंत्री की भूमिका में ही रहे। सन् 1951 में जब डॉ. मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की,

तब जो कल्पना की थी कि एक ऐसा व्यक्ति कि जिसकी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा न हो, केवल संगठन की चिंता करने वाला, कार्यकर्ताओं को जोड़ने वाला, कार्यकर्ताओं की देखभाल करने वाला हो, जिसका नाम पत्र-पत्रिकाओं में न छपे यानि मीडिया से दूर और एक मजबूत संगठन के नींव का पत्थर बनकर चले। ऐसे दायित्व वाले संगठन मंत्री हो और कुशाभाऊ इन आदर्शों की साकार प्रतिमूर्ति साबित हुए। ठीक है कि वो हमसे अलग हो गए, बिछुड़ गए। उन्हें उनके मन पर इस बात का संतोष झलकता था कि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में, जहाँ उन्होंने गांव-गांव घूमकर संगठन को मजबूत बनाया, वहाँ पर इस प्रकार पार्टी का वर्चस्व बना है और उनके सहयोगी वहाँ के मुख्यमंत्री बनकर गए हैं, लेकिन ऐसा भी अनुभव होता था कि मानो उनके जीवन की सार्थकता पूरी हो गई। कुशाभाऊ कह रहे थे कि 'अब तो मेरा कार्य पूरा हो गया है। मैं वापस जा रहा हूँ और उसके बाद मुझे याद है बिना डाक्टर की अनुमति से अशोक रोड आ गए। उनके सहयोगियों से सूचना मिली कि वो भोजन भी नहीं कर रहे हैं, दवाई भी नहीं ले रहे हैं और वो कह रहे हैं कि मेरा तो समय अब आ गया जाने का। मुझे जाने की आप छुट्टी दीजिए। मुझे जबर्दस्ती भोजन मत करवाइए। मुझे जबर्दस्ती दवाई मत दीजिए और मैं जब मिलने गया था, वो दृश्य मैं भूल नहीं सकता हूँ कि किस प्रकार से एक व्यक्ति, जो कष्ट में है, लेकिन इसकी चिंता नहीं, मन ही मन में उनको लगता है कि मुझे ईश्वर ने जिस कार्य के लिए भेजा, वह अपने सामर्थ्य से पूरा किया और अब

मेरे जाने का समय हो गया। इस परिस्थिति में हम लोगों ने प्रयास कर उन्हें हॉस्पिटल में भेजा, लेकिन उन्होंने अपने जीवन का अंत मान लिया था और चले गए। हाँ, इतना जरूर है कि बाकी महापुरुषों के बारे में लोगों से सुना जाता है, इस महापुरुष के जीवन को मुझे स्वयं देखने का सौभाग्य मिला। वे सदैव प्रेरणापुंज बने रहेंगे। राजनीतिक जीवन में एक आदर्श कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए उसके लिए एक उदाहरण है कुशाभाऊ।

आज भारतीय जनता पार्टी के ऊपर देश की इतनी बड़ी जवाबदारी है। उसका आधार राष्ट्रवाद की विचारधारा है। मुझे याद है कि 1989 में जब भाजपा को बड़ी सफलता मिली थी और लोकसभा में हमारे 86 सांसद निर्वाचित हुए थे। जनता दल सबसे बड़ी पार्टी उभरकर आई थी और उसी दल के प्रधानमंत्री बने, तब एक पत्रिका ने 1989 के चुनाव पर टिप्पणी करते हुए छापा था और उसका शीर्षक था- Winner comes to come. माने जो विजयी दल है वो दूसरे नम्बर पर आया है। उन्होंने जनता दल को विजयी नहीं माना। भारतीय जनता पार्टी को विजयी मानकर कहा कि It has come Second और विश्लेषण करते हुए कहा कि इसके कारण लोग बड़े विश्लेषण करते हैं कि इस कारण हुआ, इस कारण हुआ लेकिन उसका विश्लेषण था, कांग्रेस पार्टी की जो हार हुई है, उसका कारण है कि उनके लोगों का पतन हुआ है, वे भ्रष्टाचार में फंसे हैं। भाजपा के बारे में यह धारणा बनी कि उसमें पतन नहीं हुआ है, ये लोग सात्विक हैं, अच्छे हैं, समाज की सेवा के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते हैं। इस पार्टी को जनता ने आगे बढ़ाया। यह विश्लेषण एक विदेशी अखबार ने किया। तब से लेकर कार्यकर्ताओं के मन में यह बात पैदा करने की कोशिश की जाती है कि हमारी विचारधारा बड़ी ताकत है, लेकिन उसके पीछे असली ताकत हमारे कुशाभाऊ जैसे आदर्श कार्यकर्ता हैं। जिसके आचरण और व्यवहार के कारण पार्टी की विश्वसनीयता बढ़ी है और इस विश्वसनीयता को जितनी मात्रा में हम सबल बनायेंगे, उतनी ही मात्रा में पार्टी आगे बढ़ती जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने वरिष्ठ सहयोगी और हमारे लिए आदर्श बने हुए आदरणीय कुशाभाऊ को नमन करता हूँ। ■

मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस

बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-
“यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।”

परमपूज्य बालासाहब देवरस का जन्म 11 दिसम्बर 1915, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी वि. संवत् 1972 को नागपुर के इतवारी क्षेत्र के देवरस बाड़े में हुआ। देवरस परिवार मूलतः बालाघाट म.प्र. का रहने वाला था। बालाघाट जिले के कारंजा नामक स्थान में उनकी कृषि थी। यह लांजी तहसील में है। बालासाहब पाँच भाई थे। इनका स्थान भाईयों में चौथे क्रम पर था। उनकी तीन बहनें थीं। 1927 में बालासाहब प. पू. डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के सम्पर्क में आए। यहीं से उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश हुआ। 1925 में संघ प्रारंभ हुआ था। अतः यह कहना उचित होगा कि बालासाहब प्रारंभ से ही संघ के स्वयंसेवक थे।

1931 में बालासाहब ने न्यू इंग्लिश हाईस्कूल नागपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1932 में डॉ. हेडगेवार ने उन्हें इतवारी शाखा प्रारंभ करने का दायित्व सौंपा। 1935 में उन्होंने मारेस महाविद्यालय नागपुर से संस्कृत एवं दर्शन शास्त्र में स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1937 में एल.एल.बी. मैरिट में उत्तीर्ण की। उसी वर्ष उन्हें नगर कार्यवाह की जिम्मेदारी सौंपी गई। अपने निजी खर्च की व्यवस्था हेतु अनाथ विद्यार्थी-गृह नागपुर में शिक्षक की नौकरी शुरू की। इस बीच पुणे के संघ प्रशिक्षण वर्ग में मुख्य शिक्षक के दायित्व का भी संपादन किया। 1939 में वे कलकत्ता में प्रचारक बन कर गए।

1940 में प.पू. डॉ. हेडगेवार जी का निधन हो गया। उनके बाद परम पूज्यनीय गुरुजी को सर संघचालक का दायित्व सौंपा गया। 1946-47 में बाला साहब को सह-सरकार्यवाह का अखिल भारतीय दायित्व सौंपा गया। 1948 में महात्मा गाँधी जी की हत्या का मिथ्या आरोप लगाकर संघ पर प्रथम प्रतिबंध लगाया गया। इस सिलसिले में बालासाहब जी चार मास तक कारागार में रहे। प्रतिबंध उठवाने के लिए राजकीय नेताओं से भेंट वार्तालाप करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

1949 में प.पू. गुरुजी ने उन्हें नागपुर से तरुण भारत के संपादन तथा प्रकाशन की विशेष जिम्मेदारी

सौंपी। 1965 में माननीय भैयाजी दाणी के देहावसान के बाद इनको सरकार्यवाह का दायित्व सौंपा गया जिसका 1973 तक उन्होंने सफलता पूर्वक निर्वहन किया।



1973 में प.पू. गुरुजी के स्वर्गवास के उपरान्त बालासाहब ने संघ के सरसंघचालक पद का दायित्व संभाला। संगठन की दृष्टि से यह सर्वोत्तम दायित्व था। परम पूज्य गुरुजी पूर्व में यह उद्घोषणा मा. दादा गोरवाडकर जी के सम्मुख कर गए थे कि बाला साहब अपने संघ के भावी सरसंघचालक हैं। 21 वर्ष तक बालासाहब ने सरसंघचालक के दायित्व का अत्यंत कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। इस अवधि में अनेक आनुषांगिक कार्यों के रूप में संघ कार्य का विस्तार हुआ। 1975 में संघ पर आपातकाल के कारण दोबारा प्रतिबंध लगा। 1977 में यह प्रतिबंध उठा। 1992 में संघ पर तीसरा प्रतिबंध लगा जो एक साल बाद उठा। 11 मार्च 1994 को बालासाहब ने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण सरसंघचालक के पद से निवृत्ति की घोषणा की। 17 जून 1996 रात्रि 8 बजकर 10 मिनट पर, पुणे के रूबी हाल क्लीनिक नाम के प्रसिद्ध चिकित्सालय में इनकी इहलीला समाप्त हो गई। 18 जून 1996 को सायंकाल को नागपुर के गंगाघाट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

प.पू. बालासाहब एक मौन कर्मसाधक थे। किसी भी समस्या पर शीघ्र एवं अचूक निर्णय की उनकी क्षमता असाधारण थी। व्यवस्थापन में कुशलता, अनुभव, समृद्धता, गहन चिंतन उनके व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण गुण थे। उनका ध्यान सैद्धान्तिक की बजाय व्यवहार्य बातों पर अधिक रहता था। भारतीय जन समाज ने समाज के इस मौन साधक को उनकी सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में अनेक बार सम्मानित किया। 01 अगस्त 1991 को उन्हें लोकमान्य तिलक सम्मान से, अक्टूबर 2 को नागपुर के विश्व हिन्दू परिषद् के संत सम्मेलन में ‘यति सम्राट की उपाधि से’, 1994 में जीजामाता प्रतिष्ठान की ओर से जीजामाता पुरस्कार से

तथा 1996 में स्वातंत्र्यवीर सावरकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-“यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।” सामाजिक समरसता के लिए प्रत्येक विद्यालय उपेक्षित बस्तियों में एक संस्कार केन्द्र चलाए, यह उनकी बड़ी आकांक्षा थी। उनके व्यक्तित्व में आदर्शवादिता एवं व्यवहारिकता का बहुत ही संतुलित समन्वय एवं मेल था। उनका पूरा जीवन भारतीय संस्कृति एवं हिन्दुत्व की रक्षा के लिए समर्पित रहा। संघ को बालासाहब की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने संघ के तत्वज्ञान को, समाज कार्य के लिए व्यवहार रूप में रूपान्तरित किया। वे हमेशा स्वयंसेवकों को संघ के तत्वज्ञान को अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करते रहते थे। संगीत, साहित्य एवं अध्यात्म से उनका गहरा लगाव था। उन्हें श्रीमद्भागवद्गीता एवं महाकवि कालिदास का मेघदूत पूरी तरह कंठस्थ था। वीर सावरकर जी की कविताएं भी उन्हें बहुत प्रिय थी। विशेषकर उनकी लिखी स्वातंत्र्यदेवता की आरती ‘ज्योस्तुते श्री महम्मंगले’ को वे अक्सर सुनना पसन्द करते थे। उनके देहान्त पर रांची एक्सप्रेस, रांची बिहार ने अपने संपादकीय में लिखा था- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख के रूप में, बालासाहब ने अपने लगभग दो दशकों के कार्यकाल के दौरान न केवल लाखों लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया बल्कि भारतीयता के गंध में, रचे-बसे नए भारत के निर्माण की राह भी दिखलाई। वे मानते थे कि सेवा भाव से ही समाज की विभिन्न इकाइयों का दिल जीता जा सकता है और उन्हें आपस में जोड़कर, अन्ततः राष्ट्रचेतना का विकास किया जा सकता है।

प.पू. बालासाहब देवरस सांस्कृतिक एकता के प्रबल समर्थक थे और इस अर्थ में वे एक सामाजिक अभियन्ता के रूप में, नए भारत के नव निर्माण के लिए एक-एक ईंट जोड़ते रहे। संघ का बीजारोपण यदि डॉक्टर हेडगेवार ने किया तो प.पू. गुरुजी ने उसे पुष्पित और फल्लवित किया और उसे अपार विस्तार माननीय बालासाहब देवरस ने दिया। आधुनिक भारतीय इतिहास उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उल्लेख के बिना अपूर्ण है। ■



भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था

भारतीय संस्कृति में भौतिक विकास के लिए उतना ही स्थान है, जितना आध्यात्मिक विकास के लिए। हमारे अपने आर्थिक मूल्य हैं, अपनी अर्थव्यवस्था है। उस अर्थव्यवस्था का देश और काल दोनों से ही संबंध है। इसलिए हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।



विकास के लिए। हमारे अपने आर्थिक मूल्य हैं, अपनी अर्थव्यवस्था है। उस अर्थव्यवस्था का देश और काल दोनों से ही संबंध है। इसलिए हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

राष्ट्रधर्म

आज युग की दृष्टि से हम काफी आगे बढ़ गए हैं। हमारे भौतिक साधनों का भी विकास हुआ है। अंतराष्ट्रीय समानता की बात भी हम कहते हैं। परंतु तथ्य फिर भी कुछ और है। प्रत्येक राष्ट्र के भिन्न-भिन्न स्तर हैं। वे अपने राष्ट्रीय हित की दृष्टि से ही विचार करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र के आर्थिक और भौतिक साधन भी भिन्न-भिन्न हैं। अतः हम अंतराष्ट्रीय समानता के आधार पर युगधर्म की बात कहकर राष्ट्रधर्म को भुला नहीं सकते।

मानसिक वृत्तियां और आर्थिक प्रयत्न

एक बात और, आर्थिक पहलू पर विचार करते समय लोग मानसिक प्रवृत्तियों पर विचार नहीं करते, जबकि हमारे आर्थिक प्रयत्नों पर मानसिक प्रवृत्तियों का विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। मानसिक प्रवृत्तियां सांस्कृतिक जीवन से प्रभावित होती हैं। अतः हमारे आर्थिक प्रयत्नों पर संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव रहता है। हमारी संस्कृति में भी हमारे आर्थिक प्रयास किस आधार पर चलें, इस बात की स्पष्ट व्यवस्था है, भौतिक विकास के लिए उसमें समुचित स्थान है।

आर्थिक विकास को स्थान

हमारे धर्म में पग-पग पर इहलोक और परलोक बनाने की बात कही गई है। इसलिए हमने लक्ष्मी को देवी स्वरूपा माना है, उसमें



पं. दीनदयाल उपाध्याय

राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात आज सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने अर्थ का है। सामाजिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम उसके आर्थिक पहलू पर भी विचार करें। हमारे आर्थिक मूल्य

क्या हैं और जीवन के किन मूल्यों के आधार पर हम समाज को सुख, श्री और समृद्धि से संपन्न कर सकते हैं- इन प्रश्नों पर भी विचार करना आवश्यक है, क्योंकि भारतीय संस्कृति में हमारे आर्थिक और भौतिक जीवन के विकास की भी समुचित व्यवस्था की गई है। जो यह बात सोचते हैं कि भारतीय संस्कृति तो केवल अध्यात्मवाद पर ही जोर देती है तथा भौतिक उन्नति को उसमें कोई स्थान नहीं, उनकी यह धारणा बिल्कुल ही निर्मूल है। भारतीय संस्कृति में भौतिक विकास के लिए उतना ही स्थान है, जितना आध्यात्मिक



देवत्व की स्थापना की है। इसलिए हम उसे काम्य और भोग्य भाव से न देखकर पूज्य और श्रद्धा भाव से देखते हैं। 'वंदेमातरम्' में भी जब हम भारतमाता की वंदना करते हैं, सबसे पहले उसका 'सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्' वाला रूप ही हमारे सामने आता है, अर्थात् (प्रथम हम उसकी भौतिक श्रीसमृद्धि का ही विचार करते हैं, उसके अन्य रूपों की कल्पना तो बाद में ही की जाती है। अतः भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की बात कहकर हम यह तो कह ही नहीं सकते कि इस संस्कृति में केवल अध्यात्म और ब्रह्म पर ही विचार किया जाता है तथा मौलिक विकास को पूर्ण रूप से उपेक्षित किया जाता है। अब जब भौतिक विकास की बात को हमारी संस्कृति प्रतिपादित करती है तो उसके लिए उसकी समुचित व्यवस्था भी की गई है। हमारा अपना एक आर्थिक दर्शन है, उसके आधार पर हमारे मनीषियों ने आर्थिक व्यवस्थाओं का निर्माण किया है।

उन व्यवस्थाओं में भिन्नता मिल सकती है, क्योंकि मनु महाराज ने यदि अभिनवीकरण का बहिष्कार किया है तो कौटिल्य ने उसका प्रतिपादन, परंतु दोनों का दर्शन फिर भी एक है। अतः हम उसके व्यावहारिक पहलू पर विचार न कर दार्शनिक पहलू पर ही विचार करें। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए जैसा

कि पूर्व में भी कहा जा चुका है, हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की अलग-अलग बात कही गई है, अर्थात् युग और देश की परिस्थिति के अनुसार ही हम अपनी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करें।

संपत्ति का अधिकार

अब हमारे सामने दूसरा प्रश्न यह उठता है कि समाज में संपत्ति पर किसका अधिकार हो। कुछ लोग यह नारा लगाते हैं कि 'कमाने वाला खाएगा'। एक दृष्टि यह ठीक भी है, क्योंकि यह मनुष्य की प्रकृति है। अर्थशास्त्र इसी का प्रतिपादन करता है। परंतु मानव और समाज कल्याण के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है, उसके लिए स्वयं कर्म करके, उसके फल को स्वेच्छा से प्रसन्नता पूर्वक दूसरे को अर्पण कर देने के भाव का आदर्श भी आवश्यक है। यही संस्कृति है, परंतु इस प्रकार की संस्कृति आज व्यवहार में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती और प्रकृति का केवल नारा भर लगाया जाता है। व्यवहार में आज इन दोनों से भिन्न एक तीसरी चीज ही सामने है-विकृति अर्थात् कर्म तो कोई करे कमाए कोई, और खाए कोई अन्य। यह जबरदस्ती ही आज चारों ओर दिखाई देती है। यही विकृति है। परंतु भारतीय संस्कृति प्रकृति से भी ऊपर उस परम आदर्श पर बल देती है, जिसको गीता के कर्म के सिद्धांत में व्यक्त किया गया है-अर्थात् फल

की भावना से रहित होकर कर्म करो और उससे अर्जित फल को भगवतार्पण कर दो। भगवान अर्थात् समाज। ईश्वर का प्रत्यक्ष और विराट् स्वरूप आज समाज ही है। वही विराट् पुरुष है-यही मानकर हम चलें और अपने समस्त कर्मों के फल हम समाज को अर्पण कर दें।

हमारी समाज कल्पना

अब जब समाज की बात उठती है तो उसके विषय में भी हमारी कल्पना स्पष्ट हो जानी आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के अनुसार समाज के बहुत से रूप हैं। रूस के अनुसार उसका 'स्टेट' रूप में कभी प्रयोग नहीं होता और न उसमें रूस की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीयकरण को ही महत्व दिया जाता है। भारतीय समाज रचना में व्यक्ति अर्थात् व्यक्ति को प्रमुख स्थान दिया गया है। व्यक्ति से ही समष्टि का निर्माण होता है। हम समाज में व्यक्ति और परिवार से लेकर ग्राम, राष्ट्र और अखिल विश्व तक की कल्पना करते हैं। इसलिए जो कुछ हम उत्पन्न करें, उसे संपूर्ण राष्ट्र के हित में व्यय कर दें। राष्ट्र ही हमारे कर्म की प्रेरणा का स्रोत रहे। यही भावना भारतीय संस्कृति के आर्थिक रूप का मूल आधार है। इसी आधार पर हम समाज को सुख, श्री और समृद्धि से संपन्न बना सकते हैं और यह तभी संभव है जब हम भारतवर्ष को कर्मभूमि मानकर चलें, भोगभूमि नहीं। जहां भोग की भावना आ जाती है, वहां परिश्रम और कर्म चाहे स्वयं ही क्यों न किया जाए एक पूंजीवादी व्यवस्था का निर्माण हो जाता है, वह हमें मान्य नहीं, क्योंकि 'प्रकृति' होते हुए भी वहां 'जंगल का कानून' होता है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रधान होता है तथा समाज और राष्ट्र का सामूहिक हित गौण पड़ जाता है। वहां फिर ठीक वितरण नहीं हो पाता और समाज के सामूहिक विकास का मार्ग सिमटकर कुछ लोगों की पकड़ में चला जाता है। अतः राष्ट्र की चिंता को प्रधान मानकर हम अपनी 'प्रकृत' अवस्था से भी ऊपर उठकर 'संस्कृत' अवस्था को प्राप्त हों। जहां त्याग ही सब कुछ है और उसी में परम आनंद है। व्यावहारिक रूप में यदि हम इस प्रकार न्यूनतम वेतन कल्पना लेकर चलें तो फिर हमें इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि कर्म का परिश्रम यदि हम समाज को अर्पण कर देंगे तो हमारी चिंता कौन करेगा। तब समाज हमारी चिंता करेगा, क्योंकि हम समाज के अंग हैं और समाज का जब सामूहिक विकास होगा तो कोई कारण नहीं कि हमारा विकास न हो। ■



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी का राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस पर बहनों ने तिलक कर आत्मीय अभिनंदन किया।



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने 1 लाख 33 हजार सोयाबीन उत्पादक किसानों के खातों में भावांतर योजना के 233 करोड़ रुपए का अंतरण किया।



■ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों की कार्यशाला को संबोधित किया।



■ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) संबंधी प्रदेश स्तरीय कार्यशाला को संबोधित किया।



■ राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री बी. एल. संतोष जी, राष्ट्रीय संगठक श्री वी. सतीश जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने अनुसूचित जनजाति मोर्चा की कार्यशाला का उद्घाटन किया।



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने गुरुपरब की शुभकामनाएं दीं।



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने लाड़ली बहना योजना अंतर्गत रुपए 1500 की राशि सिंगल क्लिक से लाड़ली बहनों के खाते में अंतरित की।



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने बिहार के सीतामढ़ी में माँ जानकी जन्म स्थली (पुनौरा धाम) में पूजा-अर्चना की।



**बिना राष्ट्रीय पहचान के स्वतंत्रता
की कल्पना व्यर्थ है।**